BHUTESHWAR

E-Magazine (Annual)

Government College
Jind
(Haryana)

Session 2020-21

Phone : 01681-245580 | 249581
Website : govtcollegejind.ac.in
E-Mail : gc_jind@yahoo.co.in

THE STRONGEST FABRIC
WOMEN SUPPORTING WOMEN
Welcome

From Principal's Desk

Welcome to the edition of our college's e-magazine. The goal of this e-magazine is to inform, engage, and inspire a diverse readership - including alumni, faculty, staff, students.

I would like to start this by saying that hard-work is the key to success in life. Our students are encouraged to take up job-oriented, technical courses that ensure self employment, and are furthermore advised to work really hard towards their educational goals.

Students should have before them the idea of simple living and high thinking. Discipline also plays a vital role in the basis of life, so all efforts should be made to lead a disciplined life, choosing good habits over bad.

Talking of habits they play a major role in structuring our personality. Bad habits like smoking, drinking, and doing drugs cast spell on a person's physique and mind. A good habit, on the other hand, makes us physically and mentally sound and brings a purpose to life.

With the elections coming up, I would like to state the importance of voting. For many of you, this will be first time you can vote. It is your constitutional right, and all attempts should be made to fulfil it. Voting offers us a medium of expression. The process of voting allows every citizen to have a say in what should constitute the matters of importance by voting for the candidate he or she deems fit for the purpose. At the same time, voting is as much a responsibility as it is a right. If we are not careful about casting our vote-or worse, skip their vote altogether-it will jeopardize the existence of our democratic republic.

All efforts should be made to use modern technology in our day-to-day lives. Modern technology offers us an easy access to information, it encourages innovation and creativity, improves communication, and increases efficiency and productivity. Modern technology has made it simple for students to learn from anywhere through online courses. Through the help of multi-media digital learning, modern technology helps us to integrate digital education with conventional education. Students now use modern technology in our own college classrooms to learn more effectively.

Students should also be environmentally conscious. Going Green is a world-wide initiative that helps our planet. Things like using recycled paper, printing on both sides of the paper, and using digital platform to share information instead of printing will go a long way to ensure that fewer trees are cut and our planet is safe.

On that note, this e-magazine is our first attempt in the direction of saving trees. It's a small bit that I hope you will like. Wishing you a happy and prosperous life ahead.

Sheela Dahiya
Principal, Govt. College, Jind

सम्पादकीय

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

शिव कुमार (सहायक प्रोफेसर जनसंचार)

मीडिया नागरिकों को न केवल सूचित बल्कि सचेत भी करता है, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था तीनों अंगों के एक दूसरे के साथ तालमेल बिठा कर काम करने और एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र में दखल न देने के बुनियादी सिद्धांत के आधार पर चलती है और मीडिया का काम इस पर आलोचनात्मक निगाह रखना और देश को सतक करते रहता है। जाहिर है कि आलोचनात्मक मीडिया अक्सर सरकार यानि कार्यपालिका और संसद एवं विधानसभाओं को नहीं सुहाती और कभी अभी न्यायपालिका भी उसके कामकाज पर प्रतिबंा लगाने को तत्पर हो जाती है। अक्सर सरकारें और उनके मंत्री एवं समर्थक यह कहते सुने जाते हैं कि मीडिया सकारात्मक खबरें और लेख नहीं प्रसारित करता। मीडिया का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से लगाम कसना लगभग सभी सरकारों का प्रयास रहता है। ऐसे में यदि लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग न्यायपालिका उसके और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए सामने आता है तो यह लोकतंत्र के भविष्य के लिए बेहद आश्वस्त करने वाला है।

पिछले 15 वर्षों में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेज बदलाव देखने को मिला है। सूचना क्रांति एवं तकनीकी विस्तार के चलते मीडिया की पहुंच व्यापक हुई है। इसके समानांतर भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण की प्रक्रिया भी तेज हुई है, जिससे मीडिया अछूता नहीं है। नए-नए चैनल खुल रहे हैं, नए-नए अखबार एवं पत्रिकाएं निकाली जा रही हैं और उनके स्थानीय एवं भाषायी संस्करणों में भी विस्तार हो रहा है। मीडिया के इस विस्तार के साथ चिंतनीय पहलू यह जुड़ गया है कि यह सामाजिक सरोकारों को दूर होता जा रहा है। मीडिया के इस बदले रूख से उन पत्रकारों की चिंता बढ़ती जा रहा है, जो यह मानते हैं कि मीडिया के मूल में सामाजिक सरोकार होना चाहिए।

भारत में मीडिया की भूमिका, विकास एवं सामजिक मुद्दों से अलग हटकर हो ही नहीं सकती पर यहां मीडिया इसके विपरित भूमिका में आ चुका है। मीडिया की प्राथमिकताओं में अब शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी विस्थापन जैसे मुद्दे रह की नहीं गए। उत्पादक, उत्पाद और उपभोक्ता के इस दौर में खबरों को भी उत्पाद बना दिया है, यानि जो बिक सकेगा, वही खबर है। दुर्भाग्य की बात यह है कि बिकाऊ खबरें भी इतनी सड़ी हुई हैं कि उसका वास्तविक खरीददार कोई है भी या नहीं, पता करने की कोशिश नहीं की जा रही है। बिना किसी विकल्प के उन तथा कथित बिकाऊ खबरों को खरीदने, देखने, सुनने, पढ़ने के लिए लक्ष्य समूह को मजबूत किया जा रहा है। खबरों के उत्पादकों के पास इस बात का भी तर्क है कि यदि उनकी 'बिकाऊ' खबरों में दम नहीं होता तो चैनलों की टी.आर.पी. एवं अखबारों की रीडरशिप कैसे बढ़ती ?

इस बात में कोई दम नहीं है कि मीडिया का यह बदला हआ स्वरूप ही लोगों को स्वीकार है, क्योंकि विकल्पों को खत्म करके पाठकों, दर्शकों एवं श्रोताओं को ऐसी खबरों को पढ़ने, देखने एवं सुनने के लिए बाध्य किया जा रहा है। उन्हें मुद्दों से दूर किया जा रहा है।

भूतेश्वर वार्षिक पत्रिका

2020-21

सरंक्षक : श्रीमती शीला दहिया

मुख्य सम्पादक : श्री शिव कुमार

सम्पादक मण्डल

अनुभाग	प्राध्यापक सम्पादक
हिन्दी	डॉ. सुनीता
अंग्रेजी	डॉ. रचना शर्मा
विज्ञान	श्री कमलजीत
भूगोल	डॉ. तनाशा हुड्डा
महिला प्रकोष्ठ	श्रीमती सुमन
वाणिज्य विभाग	श्री सुभाष दुग्गल
एन.सी.सी.	श्री पंकज बतरा
एन.एस.एस.	श्री अमन
जनसंचार	श्री शिव कुमार
सांस्कृतिक गतिविधियाँ	डॉ. कृष्ण कुण्डू
खेलकूद गतिविधियाँ	श्री रणधीर सिंह

फार्म-IV

भूतेश्वर पत्रिका

प्रकाशन स्थल	-	जींद
प्रकाशन अवधि	-	वार्षिक
डिजाईन	-	शुभम् कम्प्यूटर प्वाइंट, विद्या पीठ मार्ग-जींद #9813386722
प्रकाशक एवं स्वामित्व अधिकारी	-	श्रीमती शीला दहिया
सम्पादक	-	श्री शिव कुमार
राष्ट्रीयता	-	भारतीय
पता	-	राजकीय महाविद्यालय, जींद

मैं शीला दहिया यह घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी तथा विश्वास के अनुरूप सत्य है।

शीला दहिया

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के स्वयं के हैं, सम्पादक मण्डल इसके लिये उत्तरदायी नहीं है।

भूतेश्वर
हिंदी अनुभाग

डॉ. सुनीता खर्ब
सम्पादक

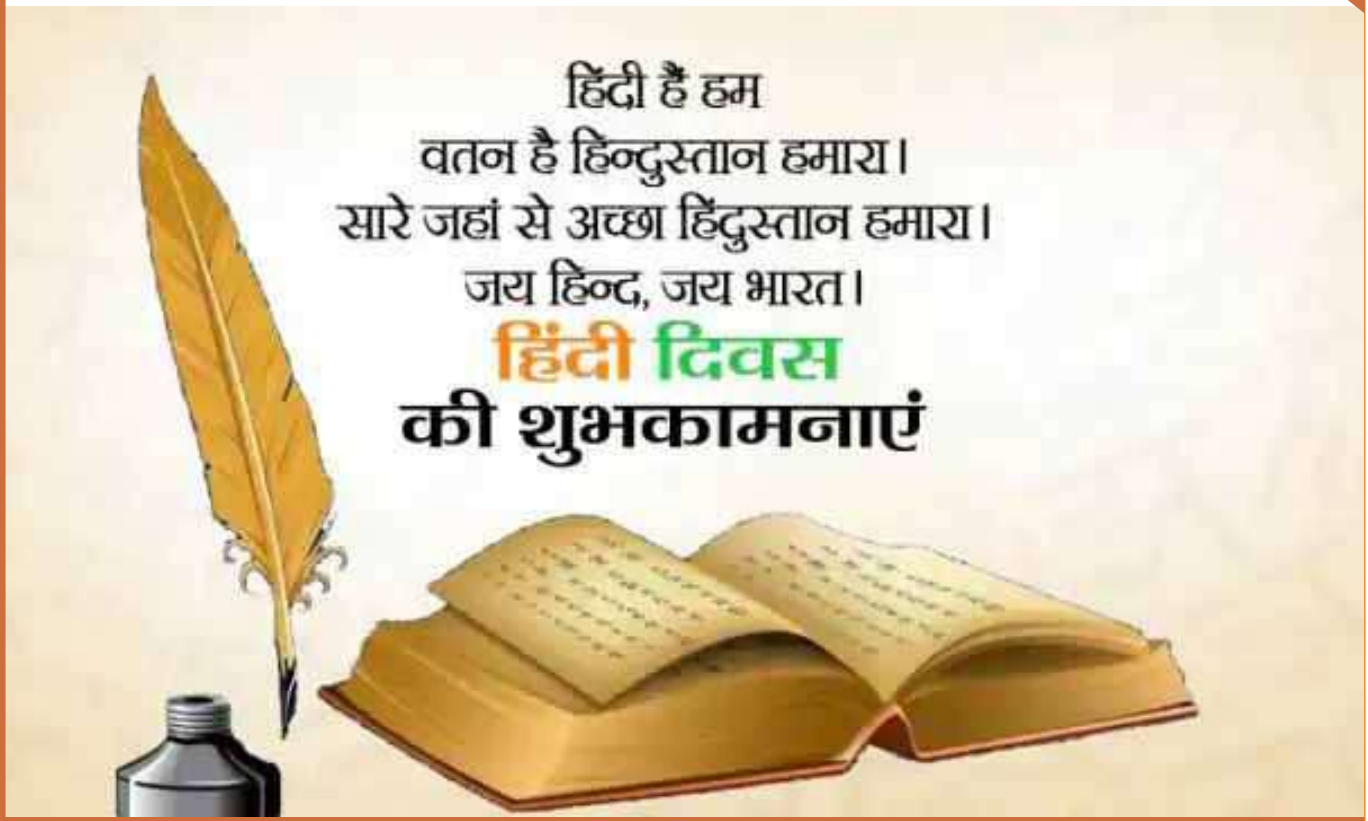

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के स्वयं के हैं, अनुभाग सम्पादक इसके लिये उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादकीय

हिन्दी विभाग की तरफ से समय–समय पर अनेक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के लिए करवाई जाती हैं; भूतेश्वर पत्रिका इसका जीवंत उदाहरण है। इस अंक में किसान आंदोलन व किसान से जुड़ी समस्याएँ, बचपन की यादें, पापा को भी प्यार व सम्मान का अधिकार, माँ और बेटी की जुगलबन्दी, आजादी के रखवाले, बाल मजदूरी, अस्तित्व का आधार, जीवन की सीख, दहेज प्रथा का विकराल रूप, कोरोना महामारी के लक्षण व बचाव, शराबबंदी, एक सैनिक की दिनचर्या, महिला सशक्तिकरण से संबंधित विमर्श, हिन्दी भाषा हमारा गौरव, शिक्षा का महत्व आदि रचनाएँ समाज के अनेक पहलुओं को दर्शाती हैं।

उपरोक्त कथावस्तु यह दर्शाती है कि आज की युवा पीढ़ी अपने देशकाल व वातावरण से कितना गहरा संबंध रखती है। विद्यार्थियों ने हर विषय पर बड़ी ही निर्भिकता से अपने विचार रखे। विद्यार्थियों का यह सांझा प्रयास बड़ा ही सराहनीय है। पाठकगण के लिए इसमें अनेक रूचिकर रचनाएँ हैं जो पाठक के लिए प्रेरणादायी भी साबित होंगी। मेरी तरफ से इस अंक के रचनाकार व पाठक वर्ग के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. सुनीता खर्ब
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

HINDI

Contents

S.No.	Name	Topic	Page No.
1.	सुषमा	किसान	9
2.	सत्यवान	बचपन	9
3.	कविता	पापा को भी प्यार चाहिए	10
4.	नवदीप	माँ	10
5.	प्रीतम सिंह	मानल्यो मेरी.....	11
6.	पूजा	अन्नदाता राजधानी आये	11
7.	ज्योति	लड़की	11
8.	मोनिका	शिक्षकों को समर्पित	12
9.	मीनाक्षी	आजादी	12
10.	मनोज वर्मा	रूबरू	12
11.	सौरभ परूथी	बाल मजदूरी	13
12.	पिंकी	अनमोल वचन	13
13.	किरण	जीवन में परिश्रम का महत्व	13
14.	अक्षय रेढू	अस्तित्व	14
15.	सीमा कन्दौला	जीवन की सीख	14
16.	नन्हीं देवी	जिन्दगी की कहानी	14
17.	रीतू	बचपन	14
18.	रवीना	फौजी के बारे में	15
19.	नवदीप	वो बचपन लौटा दो	15
20.	अल्का	दहेज प्रथा	16
21.	संजय	जब-जब तुम्हें लगे	16
22.	कविता	कोरोना महामारी	17
23.	रीना सांगवान	फौजी	18
24.	ज्योति देवी	शराबबंदी	19
25.	प्रीति राठोर	सैनिक	19
26.	गुरूवचन	महिला सशक्तिकरण	20
27.	मनोज वर्मा	हिन्दी भाषा हमारा गौरव	21
28.	किरण	विद्या अनमोल रत्न	21
29.	रीतू रंगा	मैं हैरान हूँ	22
30.	रेनू	शिक्षा	22
31.	भतेरी	मेरी माँ	23
32.	अमन	साढ़ा बापू रब वरगा	23
33.	अनु	माँ की अहमियत	23
34.	मनीष	जब वा मनै पसन्द आई	24
35.	कविता	पिता एक आसमाँ	25
36.	सीमा	माँ-बाप	26

किसान

सुषमा
221068154025
एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष

कहाँ रख दूँ अपने हिस्से की शराफत,
जहाँ देखूं वहां बेईमान खड़े हैं।
क्या खूब बढ़ रहा है वतन देखिये,
खेतों में बिल्डर सड़क पे किसान खड़े हैं।।

खुद भूखे रह कर भी दुनियां को भर पेट खिलाया,
पर बिचौलियों के चक्कर में आये दिन घाटा ही खाया।।

महँगा बीज उधारी लेकर जैसे तैसे फसल उगाता,
पर बिचौलियों के चक्कर में आये दिन घाटा ही खाया।।

जरा सोचिए और समझिए नहीं बचेगी अगर किसानी,
अगर अन्नदाता ना होंगे कैसे चलेगा दाना पानी।।

अभी समय है चेत जाईये मत कहिएगा नहीं चेताया,
अन्नदाता खेत छोड़कर सड़क पर आया।।

अन्नदाता ने अब तक सहा है आखिर बताइये,
वो कब तक सहेगा, क्यों सहेगा ? क्यों सहेगा ?

बचपन

सत्यवान
एम.ए. हिन्दी
द्वितीय वर्ष

मैं लिखना तो चाह रहा हूँ पर शुरूआत कहाँ से करूँ।
कलम तो हाथों में है पर बोल कहाँ से भरूँ।

जैसे-तैसे इन हाथों ने लिखना शुरू किया।
मेरे मन ने उन्हीं पुरानी यादों को सिया।
वे कभी रूलाती तो कभी हँसाती थी।
पर सभी यादें दिल को बड़ा लुभाती थी।

ना थी कोई व्याकरण और ना ही साहित्य,
ना हिन्दी कविता की खबर थी और ना भाषा-विज्ञान का ज्ञान।

चारों ओर फैला हुआ खुशियों का संमदर था।
स्नेह और अपनापन सभी के अन्दर था।
ना ही कोई टेंशन थी ना ही कोई उलझन।
वो तो ऐसी अद्‌भूत अवस्था थी जिसका नाम था बचपन।

पापा को भी प्यार चाहिए

एक ही घर, एक ही आँगन,
एक छत में उनको भी कोई अपना हिस्सेदार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
माँ के दुलारे सब बन जाते,
उनको भी घर में जिगरी यार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
आखिर कब तक घूमें बाहर,
कब तक पढ़ते रहें अखबार,
उनकी नीरस जिन्दगी में जो रस भर दे,
कोई ऐसा कलाकार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
सोम से शनि तक व्यस्त हैं जो काम में,
उनको भी सुकुन का इतवार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
अपनी जरूरतें भूल जाते हैं वो,
सबकी खुशियां कमाते हैं वो,
उनको भी बदले में प्यार का उपहार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
माना दिमाग के बहुत गरम हैं,
मन से देखो बड़े नरम हैं,
उनको भी कोई समझे,
ऐसा घर में समझदार चाहिए।
माँ की दवा, मेरी पुस्तकें, भाई को फोन दिलाना है,
महीना भी जल्दी गुजर जाता,
घर में राशन भी भरवाना है,
जिम्मेदारियां कोई संभाल ले अब ये,
ऐसा कोई ईमानदार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।
बालों में सफेदी आ गई, आँखों में धुंधलापन है,
साठ बरस के हो गए पापा,
जिम्मेदारियों में फिर भी अटल हैं,
कोई बने सहारा उनका बुढ़ापे में,
कोई ऐसा जिम्मेदार चाहिए,
हाँ पापा को भी प्यार चाहिए।

यह मेरी मौलिक रचना है।

कविता
2957020003
एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष

नवदीप
120068002377
बी.ए. प्रथम वर्ष

माँ

नौ माह जीने राख्या पेट में,
मेरे खातर हर दु:ख ओर दर्द सहा
भगवान भी छोटा उस माँ के आगे
जिसने मेरे तै जन्म दिया।।

जरूरत हो मनै 100 की हर बार दिए मेरे तै हजार
जिसके डाँट ओर गुस्से मैं भी नजर आवे मनै प्यार
जो भी करी डिमांड मनअ हर सपना मेरा साकार किया
भगवान भी छोटा उस माँ के आगे
जिसने मेरे त जन्म दिया।।

बैठ के जिसके आँचल मैं बिताया बचपन सारा का सारा
मनअ जान तै प्यारी मेरी माँ और मैं उसकी आँख का तारा
और लास्ट लव का खिताब मनअ
अपनी माँ के नाम लिखवा दिया
भगवान भी छोटा उस माँ के आगे
जिसने मेरे त जन्म दिया।।

जूठी ओर फरेबी दुनियां तै रहिये बचकअ
सिखावअ है वा मनअ
ना धोखा करिए किसे तै
चाहे दो रोटी कम खा लिए तू
इज्जत राखिए माँ की नवदीप
जिसकी वजह तै तन्ह यो सारा संसार देख लिया।
भगवान भी छोटा उस माँ के आगे
जिसने मेरे त जन्म दिया।।

यह मेरी मौलिक रचना है।

मानल्यो मेरी.....

प्रीतम सिंह
220068154017
एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष

घर बासा बड़ा तमाशा
ब्याह पाछै होज्या रासा
जदे तै रूक्के मारूं,
ब्याह करवाईयो ना
राण्डे थाम जिन्दगी काटल्यो
लाड्डू नै ल्याईयो ना....

कदे या चीनी मुकज्या,
कदे यु मुकज्या चून
दाल भी थोड़ी रहरी,
आज यु मुकग्या नूण
जेब मेरी पड़ी सै खाली,
मेरा था पी ल्यो खून
गोज में बोझ ना हो तो
उधार पै ठाईयो ना,
राण्डे थाम जिन्दगी काटल्यो....

कुछ हुस्न की परियां नै मारे,
कुछ मारे छोरे जारी नै
कुछ खावें पिवें ऐश करें सै,
कुछ मारे घर की जिम्मेदारी नै
रै पढ़ लिख कै फिरें सै ठाली,
कुछ मारे बेरोजगारी नै
बेशक तै भूखे मरज्यो
पर रेहड़ी लाईयो ना,
राण्डे थाम जिन्दगी काटल्यो....

''प्रीत'' क्युं आग लगावे,
घर बस लेण दे भाईयां का
ऐकले पै ना जिन्दगी कटती,
जोड़ा हो है मर्द लुगाइयां का
सर्दी में मजा ऐ न्यारा,
मीठी-मीठी स्यांईयां का
दूसरे ने जख्म जो दे ज्या
इसे तीर चलाईयो ना
राण्डे थाम जिन्दगी काटल्यो
लाड्डू नै ल्याईयो ना.....

पूजा
221068154029
एम.ए. प्रथम वर्ष

अन्नदाता राजधानी आये

रोटी तोड़ी जिन हाथों से
उन हाथों से बोल दो।
अन्नदाता राजधानी आये
स्वागत में रास्ता खोल दो।
नहीं सुनोगे बात उनकी तो,
युद्ध भयंकर फिर होगा।
कौरव पक्ष से भूख लड़ेगी।
फिर ईश्वर धरतीपुत्र होगा।
कुछ बातें कहने आए हैं,
बातों को तो कहने दो,
नहीं मांगते हैं पांच गाँव।
नहीं मांगते बिल्डिंग की छाँव,
उनके अपने छोटे खेतों संग
उनके गाँवों में तो रहने दो।

लड़की

लड़की होना आसान नहीं होता
और कौन कहता है कि
जिन्दगी का हर पहलू इम्तिहान नहीं होता।
हाँ और आते हैं जिन्दगी में बहुत अवसर।
मगर ना जाने क्यों
लड़कियों के लिए ही ये मुकाम नहीं होता।
लड़की होना आसान नहीं होता।
जिन्हें लड़की कहकर रोक दिया जाता है,
छोटी-छोटी बातों और कपड़ों तक के लिए टोक दिया जाता है,
ख्वाब आसमान छूने के, मगर उड़ान भरने से पहले ही रोक दिया जाता है।
कहने को तो पापा की परियाँ होती हैं बेटियाँ,
मगर बेटों जितना जिनका नाम नहीं होता।
लड़की होना आसान नहीं होता।
लड़कियाँ जिन्हें शुरू से ही लड़ना नहीं,
डरना सिखाया जाता है।
छोटी सी उम्र में ही जिन्हें एक दायरा बताया जाता है,
जीवन में छिपाने और सहने का जिनको मानो हुनर सिखाया जाता है।
और वो बेटियाँ जिन्हें पैदा होते ही अपना नहीं पराया बताया जाता है।
जिनकी खुली उड़ान के लिए आसमान नहीं होता।
लड़की होना आसान नहीं होता।
यह मेरी मौलिक रचना है।

ज्योति
120068002235
बी.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षकों को समर्पित

मोनिका
221068154015
एम.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है।
जहान सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया पेड़ बनता है।
हजारों बीज वही पेड़ जनता है।
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है।
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है।
शिक्षक बिन अधूरी वसुन्धरा रहती है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था।
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था।
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।
संदीपनी से गुरू सदियों से होते आये हैं।
कृष्ण जैसे नन्हें-नन्हें बीज बोते आये हैं।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम हैं।
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं।
शिक्षक की अनदेखी से वो रावण भी कहलाते हैं।
हम सबने भी शिक्षक बनने का सुअवसर पाया है।
बहुत बड़ी जिम्मेदारी को हमने गले लगाया है।
आओ हम संकल्प करें की अपना फर्ज निभायेंगे।
अपने प्यारे भारत को हम जगत गुरू बनायेंगे।
अपने शिक्षक होने पर हरपल गर्व महसूस करेंगे।
इस समाज में हम भी अपना शिक्षा दान करेंगे।

आजादी

मीनाक्षी
120068002014
बी.ए. प्रथम वर्ष

आजादी का तो सिर्फ नाम है,
मेरा देश आज भी गुलाम है।
गरीब की मार और महँगाई का,
आज भी वही मुकाम है।
मेरा देश आज भी गुलाम है।
आधुनिक जमाने में,
इस काली सोच का आज भी वही आसमान है।
इस छोटी सोच का मेरा देश आज भी गुलाम है।
गरीब का दबाव अमीर का चढ़ाव,
आज भी वही दौर है
सोच बदल गई है पुरानी,
सच्चाई और ईमानदारी नहीं,
आज सिर्फ पैसे की दौड़ है।
इंसान और इंसानियत आज,
सोच और नियत से बदनाम है।
मेरा देश आज भी गुलाम है।
कच्चे रास्ते नहीं रिश्ते बचे हैं देश में,
काली सोच और काले दिल है सुन्दर वेश में।
किताबें और ज्ञान फुटपाथ पर,
जूते और चप्पल मिलते हैं शीशे की दीवार पर।
इस सोच का अलग ही एक मुकाम है।
मेरा देश आज भी गुलाम है।
यह मेरी मौलिक रचना है।

मनोज वर्मा
2075110278
बी.ए. तृतीय वर्ष

रूबरू

मिलके तुमसे, फिर भी मैं मिला ही नहीं,
फासला है हम में और फासला भी नहीं।
अब तो जिन्दगी अपना ये हाल है,
कि मुझको किसी हाल से शिकवा भी नहीं।
मुद्दतों बाद आज वो यूँ मिली,
यूँ देखा मुझे, जैसे कभी देखा ही नहीं।
था दरमियां जो हमारे, मेरा वहम था क्या ?
वो जो कुछ था, क्या कुछ था ही नहीं।
क्या कहूँ कि तुमसे बिछुड़ के मैं,
खुद मैं भी तो रहा ही नहीं।
हाँ, एक उम्र मुझसे, जुदा रही हो तुम,
मगर, मैं तो तुमसे जुदा भी नहीं।
गनीमत है तुम को खो के, यानि
अब तुम्हें खो देने का मसला भी नहीं।
हमने तो तेरे बाद जिन्दगी यूँ जी है,
जैसे कि मेरी रूह में मैं जान ही नहीं।

यह मेरी मौलिक रचना है।

सौरभ परूथी
2075410142
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

बाल मजदूरी

हम ऐसे समाज में रहते हैं, जहाँ भगवान सड़कों पर रहते हैं,
जी हाँ, हम बच्चों और बाल मजदूरों की बात करते हैं।

है मनाही बाल मजदूरी की, हम संविधान में कब से पढ़ते,
मगर फिर भी कितने बालक मजदूरी करते।
चाय के ठेलों पर, न जाने कितने कारखानों में, हैं हम देखते,
छोटू.... दो कप चाय लाना कह हम बार-बार गलती हैं करते।
हम ऐसे समाज में जीते हैं, जहाँ सड़कों पर भगवान फिरते हैं,
जी हाँ, हम बच्चों व मजदूरों की बात हैं करते।

जब दफ्तर या कॉलेज के लिए हम है निकलते,
रोड़ पर होती जब लाल बत्ती, तो कितने बालक हैं दिखते।
तपती धूप कुम्हलाया चेहरा, नग्न बदन, नंगे पांव हैं वे फिरते।
हाथ फैलाए, थामे कटोरा। भीख-याचना अविरल करते।
वाह देखो, हम सभी कैसे समाज में जीते,
जहाँ हमारे भगवान के छोटे रूप हैं सड़कों पर फिरते।
हाँ, हम बच्चों व बाल मजदूरों की बात हैं करते।

आओ हम सब मिलकर ये प्रयास हैं करते,
आओ उन मासूमों के परिवार वालों से बात हैं करते।

अनमोल वचन

पिंकी
221068154032
एम.ए. प्रथम वर्ष

समय और समझ दोनों एक साथ खुशकिस्मत लोगों को ही मिलते हैं, क्योंकि अक्सर समय पर हमें समझ नहीं आती और समझ आने पर समय निकल जाता है।

बिना खुद चले मंजिल तक पहुँचना संभव नहीं है, हमें मेहनत और प्रयास करना पड़ता है। गुरू हमें दिशा दिखाएगा, कहीं भटक रहे होंगे तो संभाल लेगा परन्तु चलना खुद ही पड़ता है।

मुश्किलें, तकलीफें, परेशानियाँ वो औजार हैं, जिनसे भगवान हमें बेहतर कामों के लिए तैयार करते हैं।

घमंड उसी को होता है, जिसे बिना प्रयास किये सब कुछ मिल जाता है। जिसने अपनी मेहनत से कुछ पाया हो वही दूसरों की मेहनत की कदर कर सकता है।

किरण
4012
एम.ए. हिन्दी

जीवन में परिश्रम का महत्व

संसार में जितने भी प्राणी हैं, उनमें से कोई भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता। प्रकृति के सभी प्राणी अपना-अपना कार्य करते हैं। मनुष्य तो संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है तो वह काम किए बिना कैसे रह सकता है। वास्तव में कर्म और श्रम के बिना मानव जीवन की गाड़ी चल भी नहीं सकती। मनुष्य परिश्रम नहीं करता तो जगत में कुछ भी नहीं होता। आज जगत में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है या जो कुछ हो रहा है। वह सब परिश्रम की देन है।

आलस जीवन को अंधकरमय बना देता है। जो व्यक्ति आलस का जीवन बिताते हैं वे कभी उन्नति नहीं कर सकते हैं। संसार का इतिहास इस बात का गवाह है कि जो व्यक्ति महान हुए हैं। वे सब परिश्रम के बल पर ही ऊपर उठे हैं। परिश्रम ही मनुष्य की उन्नति का गहना है। अतः जीवन में परिश्रम का काफी महत्व है।

अक्षय रेदू
221068154020
एम.ए. प्रथम वर्ष

अस्तित्व

चाहूँ क्यूँ बनूँ पसंद किसी की।
मिटाऊ क्यूँ, इच्छायें खुद की ही।
क्यूँ भागूँ मैं पीछे उसके
जो हमारा हुआ ही नहीं
क्यूँ बदलू मैं खातिर किसी के
सह क्यूँ लूं सारे दर्द जिन्दगी के।
जीवन यदि ये मेरा है तो,
क्यूँ हक औरों का हूँ।
इतने क्यों ? पर उत्तर नहीं है।
उस पर साधे चुप्पी जहाँ है।
कोई तो समझे आखिर ये
कि अस्तित्व तो मेरा भी है।।

नन्हीं देवी
221068154021
एम.ए. प्रथम वर्ष

जिन्दगी की कहानी

ये जिन्दगी की कहानी है।
बहता हुआ-सा पानी है।।
हर पल कुछ नया सिखाती है।
कभी खुशी तो कभी मायूसी दे जाती है।।
भर कर अपने अन्दर खुशी को,
हर गम से चलो ! सीखते
अगर गिर गए तो क्या हुआ,
उठो और फिर आगे बढ़ो।।
काले अंधेरों में भी ढूँढ़ लो जब, रोशनी।
उस दिन हर गम हारेगा,
जितेगी तो बस जिन्दगी।।
मजबूती की झंकार थिरकती मन में,
स्वस्थ रखती पेड़ पनपते उसके तन में।।
छोटा-सा है जीवन इसमें, काम बड़ा तू कर जा।
पूजा से कहीं अधिक बड़ा है,
अच्छे कर्मों/कामों का दर्जा।।
ये जिन्दगी की कहानी है,
बहता हुआ-सा पानी है।।

सीमा कन्दौला
220068154040
एम.ए. द्वितीय वर्ष

जीवन की सीख

दुनियां की भीड़ में तन्हा कदम मिलेंगे।
कुछ साथ चलेंगे, कुछ पीछे छोड़ बढ़ेंगे।
हजारां लोग मिलेंगे तुझे पूरी जिन्दगी में,
पर लोग अंत में सिर्फ चार रहेंगे।
तुम, तुम्हारा दिल, तुम्ही आत्मा और माँ.....
आज तू इसके भरोसे बैठा है
कल किसी और के भरोसे होगा।
हर कदम पे गिड़गिड़ाएगा,
देख ले ऐसा जरूर होगा
आज तू अगर खुश ना हो पाया तो आगे क्या अंदाजा है
तेरी हस्ती बस इतनी है,
आज जन्म, तो कल जनाजा है।
मैं नहीं कहता दुनियां से वास्त छोड़ दे,
रिश्तों की दुहाई दे वो धागा तोड़ दे।
आरजू तो बस इतनी है तुझसे
कि तू खुद के लिए जीना सीख ले, आसमान मैंने दिया है,
बस तू पंख फैलाना सीख ले।।

रीतू
221068154022
एम.ए. प्रथम वर्ष

बचपन

एक बचपन का जमाना था
जिस में खुशियों का खजाना था
चाहत चांद को पाने की थी....
पर दिल तितली का दिवाना था....
खबर ना थी कुछ सुबह की
ना शाम का ठिकाना था,
थक कर आना स्कूल से....
पर खेलने भी जाना था,
माँ की कहानी थी,
परियों का फंसाना थी,
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था।

फौजी के बारे में

रविना
221068154008
एम.ए. प्रथम वर्ष

जब कोई पूछे मेरे बारे में
तो मेरी ये पहचान लिख देना।
उठाना मेरा **Commondo Dagger**
छाती पर हिन्दूस्तान लिख देना....
जब कोई पूछे वो पागल था कौन
तो भगत सिंह और क्रांतिकारी का चेला
और इंकलाब का गुलाम लिख देना....
और बचा हो जिस्म में लहू मेरे
निकालना और उसे फेंकना जमीन पर और
और माँ तुझे सलाम लिख देना....

नवदीप
120068002377
बी.ए. प्रथम वर्ष

वो बचपन लौटा दो

आज वो चलया गया रै छोड़ कै
कोए ल्यादो रै फेर मोड़ कै
जान तक की कीमत देदयूँ उसके बदले
भगवान जे कीते सुंनदा हो कहूँ सूँ हाथ जोड़ कै
आजकल लेणा पड़ज्या सै औरां का साथ
जब वो साथ था ना लिया किसे का सहारा था
छिड़ गया जिक्र आज उसका जिसकै होंदे होए करे खूब मजे कसम तै
वो बचपन घणा प्यारा था।।

ना किसे कर्जे की सोच थी,
ना बेरोजगारी का बोझ था
जे होज्यादी कोए ऊँच नीच कदे ना किसे बात का अफसोस था
माँ का प्यार तै खाणा खुवाणा
और बाबू आले कंधे के झूलया का अलग ऐ नजारा था
छिड़ गया जिक्र आज उसका जिसका होंदे करे खूब मजे कसम तै
वो बचपन घणा प्यारा था।।

ना होवअ था वो मतलबी ना आवअ थे लोग फँसाने उसने
आज अपने फायदे के खातर जाल में फँसया रहवअ
बस होवअ होंठा प जूठी और बनावटी मुस्कान पर
सच में अपनी जरूरतों की दूरियाँ तै कसया रहवअ
बाबा जी था तो मौत देदयो या
बरसोला आले नवदीप ते देदयो वोए
टेम जो बीतया करता मस्ती में सारा था
छिड़ गया जिक्र आज उस का जिसक
हौंदे होए करे खूब मजे कसम तै
वो बचपन घणा प्यारा था।

यह मेरी मौलिक रचना है।

दहेज प्रथा

ओ बहरे समाज तू सुन ले
नारी पर अत्याचार ठीक नहीं,
सदियों से तुम सता रहे हो,
क्यों आती तुमको लाज नहीं।
जहर खिलाया, आग लगाई
फाँसी पर भी चढ़ा दी
दहेज की खातिर तूने जालिम
पटरी पर भी लेटा दी।

अल्का
20168154005
एम.ए. प्रथम वर्ष

देख जुल्म और घोर यातना
रूह काँप उठी नारी की,
कोख की नारी कैसे जन्मू
दुविधा हर एक नारी की।
नहीं डरूँगी, नहीं झुकूँगी
नहीं काल का ग्रास बनूँगी,
आने वाली हर मुश्किल से
हर हालात में टक्कर लूंगी।
जय हिन्द ! जय भारत !

संजय
221068154016
एम.ए. प्रथम वर्ष

जब–जब तुम्हें लगे

जब-जब तुम्हें लगे,
कि सुन्दरता ही केवल एक पैमाना रह गया है।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि तन और धन, मन से ऊपर हो चले हैं।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि साथ होना, साथ चलना नहीं है।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि भावनाएं मूल्य न होकर मूल्यहीन हैं।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि अश्रु तो हैं, पर कंधा नहीं है।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि तुम्हारी चंचलता से अधिक तुम्हारा चेहरा जरूरी है।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि भीड़ में भी अकेले हो।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि चाँद तारे-ओस-घास-पुष्प केवल विज्ञान के अंश हैं।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि रात और दिन का होना मात्र खगोलीय घटना है।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि सब प्रेम कहानियाँ काल्पनिक रही होगी।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि किसी प्रिय से विरह तुम्हें डरा नहीं रहा।
जब-जब तुम्हें लगे,
कि वासना का राहू प्रेम के सूर्य को निगल रहा है।
तब-तब ..... तब-तब
एक कवि तुम पर लिखेगा तुम्हें पढ़ेगा
और मिथकों और भ्रमों की धुंध को छांट देगा।

कविता
2957020003
एम.ए. प्रथम वर्ष

कोरोना महामारी

क्या खूब मौत का सीजन है। डरा हुआ हर एक जन है।
ना चैन से जागना ना चैन से सोना है। बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

पल-पल में बढ़ रही मरीजों की संख्या दुनियां में लगे मौत के ढ़ेर हैं,
कोई कहे कहर खुदा का, कोई कहे कर्मों का फेर है।
आखिर कब तक हमें बिना गलती की सजा को ढ़ोना है।
बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

कोई बैठा, अपने दूर बैठों की सोच में। कोई अपने लिए ही सोच रहा है।
कोई कह रहा कब जाए कोरोना। कोई चीन को कोस रहा है।
कोई बैठा है जड़बुद्धि होकर, कि जो होना सो होना है।
बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

बंद पड़ा है सारा देश चारों तरफ सन्नाटा है।
खो गए सारे शोर-शराबे ना कोई आता-जाता है।
जाने कब तक पिंजरे में बंद पंछी जूँ फड़फड़ाना है।
बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

रोजगार वाले हुए बेरोजगार, बेरोजगारों की तो मर आई है।
खाने के लाले पड़ गए गरीबों को हर तरफ मची दुहाई है।
कहीं खूब हो रहे दान-पुण्य, कहीं मानवता बनी खिलौना है।
बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

ठान ली है डॉक्टरों नें, या तो जितेंगे बाजी, या फिर बलि देंगे जान की,
पीछे ना हटेंगे फर्ज से कसम है हिन्दुस्तान की
हर शहर गाँव के चौराहे पर निडर सिपाही तैनात है,
टिक ना सका यहाँ कोई फरेबी फिर कोरोना तेरी क्या औकात है,
आया हो चाहे कहीं से हमको इसे भगाना है। बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

सलाम है उन योद्धाओं को जो खड़े हैं सीना तान के।
डॉक्टर, पुलिसकर्मी, सैनिक, सफाईकर्मी और सब नागरिक हिन्दुस्तान के।
छोटा-छोटा योगदान देकर जो देश के साथ खड़े हैं,
हरा देंगे एक दिन कोरोना को इस जिद्द में अड़े हुए हैं।
सब मिलकर जितेंगे ये जंग ना एक पल भी रोना है। बचा ले अ खुदा ये कैसा कहर कोरोना है।

बैठ के फुर्सत के पलों में हमने ये विचारा है, सिर्फ अपनों की चिंता क्यों ?
पूरा विश्व हमारा है।
तन-मन-धन से साथ खड़े हैं, हम तो हिन्दुस्तान के,
प्राण प्यारे हैं, हमें अपने, वासियों और अपने मेहमान के
घर में रहो, सफाई से रहो, हमें लॉकडाउन अपनाना है।
अपना भारत अपना विश्व फिर से वही बनाना है, फिर से वही बनाना है।

जय भारत, जय भारतीय
यह मेरी मौलक रचना है।

फौजी

रीना सांगवान
221068154039
एम.ए. प्रथम वर्ष

मुफ्त में नहीं मिलती ये फौजी की वर्दी,
इसके लिए जिन्दगी की तमाम खुशियाँ कुर्बान करनी पड़ती हैं।
जो खतरों से लड़ा करें, वो खिलाड़ी होते हैं,
लेकिन जो गर्दन कटने के बाद भी दुश्मन को मारा करे, वो फौजी होते हैं।
जिक्र अगर हीरो का होगा।
तो नाम भारत के वीरों का होगा।
तूफानों का रूख मोड़ने का दम रखते हैं,
लबों पर हंसी और आँखों में नाम रखते हैं।
दुनियां वालो ना परखो मेरी बहादुरी को,
क्योंकि साँसों में बारूद और जिगर में बम रखते हैं।
मैं अपने देश का हरदम सम्मान करता हूँ,
यहाँ की मिट्टी का ही मैं गुणगान करता हूँ।
हम डरते नहीं हैं अपनी मौत से,
तिरंगा बने मेरा कफन मैं यही अरमान रखता हूँ।
कश्मीर में कभी सर्दी नहीं होती,
मुम्बई में कभी गर्मी नहीं होती।
मुझे भी शौक है घर जाकर त्यौहार मनाने का,
अगर ये जिस्म में वर्दी नहीं होती !
जब फौजी भाईयों के सीने पर चढ़ जाती हैं वर्दी
वो भूल जाते हैं, गर्मी हो या सर्दी,
जब उनके लग जाते हैं स्टार, वो बनते हैं
हिन्दुस्तान की मजबूत दीवार।
हमारी शोहरत को तुम क्या पहचानोगे गालिब,
जब हम मस्जिद के पास से भी गुजरते हैं,
तो मौलवी कहता है, राम-राम फौजी साहब.....
जिक्र अगर हीरो का होगा।
तो नाम भारत के वीरों का होगा।

वतन के लिए जंग में जाते वक्त एक जवान के मन के भाव अपने परिवार के लिए
'चल पड़ा हूँ लड़ने देश के लिए मैं जंग,
माँ, होगी दिल में तू हर पल मेरे संग,
जब खून की होली सरहद पर खेली जाएगी,
पापा, तब आपकी प्यार वाली डाँट याद आएगी,
भूलकर सब जंग के लिए मैं तैयार हो जाऊँगा,
बहन, पर तेरे से किया हर वादा मैं निभाऊँगा,
चली जाए अगर वहाँ वतन के लिए मेरी जान,
बच्चों, बनाए रखना तुम सदैव घर का मान।
भारत माँ के पुत्र होने का फर्ज बखूबी निभाऊँगा,
चलकर ना सही तो तिरंगे में लिपटकर वापस जरूर आऊँगा।

शराबबंदी

ज्योति देवी
221068154036

शराब के नशे में मनुष्य दुराचारी बन जाता है वही चेहरा जो शराब पीने से पहले प्यारा आकर्षक, प्रसन्न, विचारशील लगता है। वही शराब के सेवन करने पर घृणास्पद और भूखे भेड़िये के समान लगता है।

शराब पीने की परम्परा बहुत ही पुरानी है यदि आपने राजा महाराजा की जिन्दगी पर बनी फिल्म या उस समय की पेटिंग या फिर उस समय के बारे में लिखी किताबों को पढ़ा हो तो अक्सर आपने देखा होगा कि राजा शाम के समय मदिरा पीते थे।

जैसे-जैसे समय बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे शराब का इस्तेमाल बढ़ता ही जा रहा है। पहले के समय में सिर्फ पुरूष लोग ही इसका सेवन किया करते थे। परन्तु अब तो स्त्रियाँ और तो और 16-17 वर्ष के बच्चे भी इसको सबके सामने बार में, शादियों में बैठ के पीते हैं। ज्यादातर शुरूआत दोस्तों के प्रभाव या दबाव के कारण होता है और बाद में भी कोई अन्य कारणों से लोग इसका सेवन जारी रखते हैं।

जैसे बोरियत मिटाने के लिए, खुशी मनाने के लिए, अवसाद में, चिन्ता में, तीव्र क्रोध या आवेग आने पर आत्म विश्वास लाने के लिए मूड बनाने के लिए आदि।

शराब शरीर के सिर्फ कुछ अंग पर नहीं बल्कि लगभग सभी अंगों पर अपना बुरा प्रभाव छोड़ती है। और शरीर का शायद ही कोई अंग इसके दुष्प्रभाव से वंचित रहता है।

शराब पीने के नुकसान :-

1. बहुत ज्यादा शराब पीने पर शराब शरीर के लिए जहर के रूप में बदल सकती है। कभी शराब से इस हद तक हानि हो सकती है, कि व्यक्ति कोमा में या मृत्यु भी हो सकती है।
2. शराब पीने से शरीर में सुस्ती, शराब पीने से बहुत सारे लोग कई प्रकार के दुर्घटनाओं का शिकार हो जाते हैं। या फिर अपने ऊपर सही प्रकार नियंत्रण ना होने के कारण कुछ बड़ा हादसा कर बैठते हैं।
3. ज्यादा शराब पीने से कई प्रकार के शरीर के अंग जैसे लीवर, अमाशय तथा दिमाग पर बहुत बुरा असर पड़ता है।
4. ज्यादा शराब पीने से आपका वजन भी बहुत ज्यादा बढ़ सकता है, क्योंकि शराब में ज्यादा कैलोरीज होती है।

सबसे पहले शराब पीने वाले खुद यह तय करें कि अब मैं शराब नहीं पीऊँगा तो चिकित्सक इनकी मदद कर सकते हैं।

सैनिक

प्रीति राठोर
2956720062
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

अब रहम नहीं करूँगा मैं
मैं जगा रहूँगा रात-दिन,
चाहे धूप या बरसात हो,
चाहे तूफान आए, या ठंडी रात हो,
मैं खड़ा रहूँगा सरहद पर सीना ताने,
चाहे गोलियों की बौछार हो,
चाहे न खाने को कुछ भी आहार हो,
अपने वतन की खातिर मैं,
हर दर्द हँस के सह लूँगा,
निकले जो खून बदन से मेरे,
मैं खुश हो लूँगा,
कभी आँखों में रेत भी चली जाए तो,
वादा है मेरी पलके नहीं झपकेंगी,
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,
मेरे हाथ बंदूक नीचे नहीं रखेगें,
दुश्मन के घर मेरे वतन के चट्टानों का एक
टुकड़ा भी न जा पाएगा,
जो मेरी धरती की तरफ आँख उठाएगा,
कितना भी दुर्गम रास्ता हो,
किंचित भी नहीं डरूँगा मैं,
चप्पे-चप्पे पर रहेगी नजर मेरी,
देश के गद्दारों पर अब रहम नहीं करूँगा मैं।

महिला सशक्तिकरण

भूमिका :-

महिला सशक्तिकरण का मतलब महिलाओं को उनकी शक्ति, उनकी ताकत और उनकी योग्यता के विषय में बताना है, जिससे कि वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय ले सकें। हर व्यक्ति को खुद से जुड़े हुए फैसले लेने की आजादी होती है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को ऐसी शक्ति देता है, जिससे वो समाज में अपना सही स्थान पा सकें।

सशक्तिकरण की आवश्यकता :-

हमारे भारत देश में जहाँ महिलाओं को एक तरफ देवी की तरह पूजा जाता है, वहीं दूसरी तरफ उनके साथ होने वाले अत्याचारों की संख्या कम नहीं है। कहने को तो महिला और पुरूष बराबर हैं, लेकिन मध्यकाल से लेकर अब तक महिला के जीवन से जुड़े सभी फैसले पुरूष ही करते आए हैं। भारत एक पितृ प्रधान देश है, जहां पर सभी निर्णय पुरूषों द्वारा ही लिए जाते हैं। महिलाओं को उनकी योग्यता के बल पर समान हक दिलाने और पुरूषों की महिलाओं से जुड़ी जानकारी देने के लिए महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस हुई।

महिला सशक्तिकरण के लाभ :-

इसके कारण महिलाओं की जिन्दगी में बहुत से बदलाव हुए। उन्होंने हर कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू किया है। अब वो अपनी जिन्दगी के फैसले खुद ले रही है। अब वो अपने हक के लिए लड़ने लगी है। महिला वर्ग धीरे-धीरे आत्मनिर्भर हो रही है। पुरूष भी महिलाओं को समझने लगे हैं और उनके हक भी दिए जा रहे हैं, जिनसे वो ना जाने कितने सालों से वंचित रही थी। महिलाओं की जिन्दगी को बहुत महत्व दिया जाता है। हक मांगने से नहीं मिलता छीनना पड़ता है और औरतों ने अपने हक, अपनी शक्ति, काबिलियत से और एकजुट होकर मर्दों से हासिल कर लिए हैं।

''हक के लिए कर ली जंग की तैयारी।
हम नारी शक्ति हैं सब पर भारी।।''

महिलाओं के हक में उठाए गए कदम :-

देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए ''महिला सशक्तिकरण'' बेहद जरूरी है, इसीलिए 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। दुनियां में सबसे ज्यादा स्वतंत्र राष्ट्र भारत ही है। इसीलिए महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए समाज में एक समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए।

महिलाओं को हक दिलाने के लिए और लिंग के भेदभाव को कम करने के लिए सरकार द्वारा बहुत से कानून बनाये गये हैं :-

1. जिससे कि कोई भी आपसे लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकता।
2. नौकरी के समान अवसर प्रदान किये गये हैं।
3. घरेलू हिंसा को रोकने के लिए उचित सजा का प्रावधान है।
4. हाल ही में सरकार द्वारा कानून जारी किया गया है कि महिला की मर्जी है कि वह अभी बच्चा चाहती है या नहीं।
5. सरकार द्वारा बाल विवाह पर पांबदी लगा दी है और 18 साल के बाद भी महिला अपनी पसंद से शादी करने के प्रति स्वतंत्र है।

निष्कर्ष :-

महिला सशक्तिकरण ने महिलाओं को मजबूती दी है ताकि वो अपने हक के लिए लड़ सके। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। पुरूषों को भी महिलाओं का शोषण करने की बजाय उनके हक उन्हें देने चाहिए।

मनोज वर्मा
2075110278
बी.ए. तृतीय वर्ष

हिन्दी भाषा हमारा गौरव

वृक्ष को जरूरत है नीर की,
प्रत्यंचा को जरूरत है तीर की।
जल के अभाव में खेत सूख जाते हैं,
भाषा के अज्ञान से शब्द-शब्द टूट जाते हैं।
छातियों में दुष्टों का भाल गड़ जाता है,
देश में जब भाषा का अकाल पड़ जाता है।
केवल भाषा-भाषा होती छोड़ते,
और इस राह से पग मोड़ते।
लेकिन भाषा-भाषा नहीं हमारी माता है,
जिसको सारा भारत शीश झुकाता है।
लेकिन बेटे कितने बड़े हत्यारे हैं,
दूध भरी छाती में खंजर मारे हैं।
जिस भाषा में खेले हैं, जी भरकर बोला है,
उस को तुमने दो कौड़ी में तोला है।
हिन्दी राष्ट्र हमारा हिन्दी में शर्माते हो,
बंदर सी तम कला दिखाकर अंग्रेजी में गाते हो।
जो जितना जूठन चाटेगा उतना बड़ा ईनामी है,
यह तुम्हारी मूर्खता है मानसिक गुलामी है।
जिनके जूते निशान क्या हैं मस्तक पर,
हृदय प्रसन्न होता उन गैरों के दस्तक पर,
दो सौ सालों तक जिसने गुलामी की कड़ियाँ डाली हैं।
हमने उनके नाम की माला डाली है, लडियाँ डाली हैं।
जो वृक्ष अपने अस्तित्व से कट जाता है,
धीरे-धीरे मिट्टी में मिल जाता है।
राष्ट्र देश को बचाना है तो भाषा को बचाइए,
भाषा वाली आशा की अभिलाषा को बचाइए।
भाषा, धर्म, संस्कृति जिस देश की लुप्त हो जाती है,
उसकी आने वाली पीढ़ियाँ सारी सुप्त हो जाती हैं।
हिन्दी दिवस में अंग्रेजी नारे पायेंगे,
एक दिन अपनी भाषा को हम स्वयं ही खा जाएंगे।
पहले संस्कृत खा गये क्या अब हिन्दी खानी है,
ये कैसी नादानी है जी ये कैसे बेईमानी है।
भारत भूमि में कैसा अनुशासन है,
गैरों की भाषा में शिक्षा शासन है।
मेरी अन्तिम पंक्ति में उद्‌बोधन है
मेरी भाषा हिन्दी का सम्बोधन है।
जय माँ हिन्दी जय माँ हिन्दी।

किरण
2075130036
बी.ए. तृतीय वर्ष

विद्या अनमोल रत्न

राहें होगी मुश्किल तो क्या,
हम उन्हें आसान बनाएँगे।
मंजिल दूर भी है तो क्या,
एक दिन उसे भी पाएँगे।
आएंगे राह में काँटे तो,
दूर उन्हें हटाएंगे।
दुःख भी अगर आया तो,
खुशी-खुशी मिटाएंगे।
जीवन में मिली अगर हार तो,
हम हिम्मत से विजयी बनाएँगे।
दुनियां वाले बन न सके तो क्या,
अपने को हम एक सच्चा इंसान बनाएँगे।
मुरझा गए हैं कुछ फूल तो क्या,
हम उन्हें दोबारा खिलना सिखाएँगे।
किस्मत में न कुछ लिखा उसने तो क्या,
मेहनत से अपनी किस्मत बनाएँगे।
दुनियां भूल गई है भगवान को तो क्या,
हम न कभी उसे भूलाएंगे।
एक सच्चा जीवन है क्या,
यह दुनियां को बताएँगे।
ऐ बालक तुम विद्या पढ़ लो,
उन्नति की चोटी पर चढ़ लो।
विद्या पढ़कर सुख पाओगे,
नहीं पढ़ोगे दुःख पाओगे।
जो विद्या नहीं पढ़ता नर और नारी,
वे कहलाते संकट भारी।
तुम भी उन्हें निकम्मा जानो,
कभी न उनका कहना मानो।
राजा से छीनी न जाए,
विद्या उत्तम धन कहलाए।
विद्या कभी न चोर चुराते,
भाई हिस्सा बाँट न पाते,
जिनकी विद्या पास नहीं,
उसमें सुखी आस नहीं।
ऐ छात्रों विद्या पढ़ने से मुँह खोलो,
विद्या माता की जय बोलो।

''मै हैरान हूँ''

मैं हैरान हूँ यह सोचकर
किसी औरत ने क्यों नहीं उठाई ऊँगली ?
तुलसी दान पर, जिसने कहा
ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी।
मैं हैरान हूँ,
किसी औरत ने
क्यों नहीं जलाई मनुस्मृति
जिसने पहनाई उन्हें
गुलामी की बेड़िया ?
मैं हैरान हूँ,
किसी औरत ने क्यों नहीं धिक्कारा ?
उस राम को,
जिसने गर्भवती पत्नी सीता को परीक्षा के
बाद भी निकाल दिया।
घर से बाहर धक्के मार कर।
किसी और ने लानत नहीं भेजी
उन सब को,
जिन्होंने औरत को वस्तु समझकर
लगा दिया था।
दाँव पर,
होता रहा, नपुंसक योद्धाओं के।
बीच समूची औरत जाति का,
चीरहरण महाभारत में।
मैं हैरान हूँ, यह सोचकर
किसी और ने क्यों नहीं किया ?
संयोगिता-अंबा-अंबालिका के
दिन दहाड़े, अपहरण का विरोध
आज तक।
और मैं हैरान हूँ,
इतना कुछ होने के बाद भी
क्यों अपना श्रद्धेय मानकर
उन्हें पूजती है मेरी माँ-बहनें
उन्हें देवता मानकर
मैं हैरान हूँ,
उनकी चुप्पी देखकर
इसे उनकी सहनशीलता कहूँ या
अंध श्रद्धा या फिर
मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा।

रीतू रंगा
2075120027
बी.ए. तृतीय वर्ष

रेनु
221068154001
एम.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षा

बहुत जरूरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण धोती है शिक्षा
अंधेरे का चिराग है शिक्षा
भारत का इतिहास है शिक्षा
गहरे सागर की प्यास है शिक्षा
मनुष्य की अभिलाषा है शिक्षा
जीवन की परिभाषा है शिक्षा
अज्ञानी को देती ज्ञान है शिक्षा
साधारण से बनाती महान है शिक्षा
चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा
शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर, शिक्षक, वैज्ञानिक, मंत्री,
व्यापारी, साधारण रक्षक या अभिनेता
कर्त्तव्यों का बोध कराती।
अधिकारों का ज्ञान,
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वोपरि सम्मान,
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है
भारत देश महान
शिक्षा जीवन का अधिकार
शिक्षा है सबका अधिकार
शिक्षा देती हमको ज्ञान
शिक्षा से बनते इंसान
शिक्षा से मिलता सम्मान,
जिसको पढ़ने की है चाह।
उसको मिल जाती है राह।
शिक्षा जीवन का श्रृंगार
शिक्षा बिना जीवन बेकार
शिक्षा जीवन का आधार।

मेरी माँ

माँ धरती है, माँ ही नभ है।
माँ ही रब है, माँ ही तो सब है।
कामों की गठरी कांधे पर लादे।
कभी नहीं उफ्फ कहती है।
केवल जन्म नहीं देती है
वह जीवन भी देती है
माँ गंगा है, माँ धाय है
माँ बच्चों की चिंताओं का
एकमात्र उपाय है।
माँ की ममता में देखो
कितना दम है

भतेरी
2956720034
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

दुनियां की हर उमंग
उसके आगे कम है।
ममता की राहों में उसको
कोई बाधा झुका नहीं सकती है
संतान उसकी ममता की कीमत
चुका नहीं सकती है।
माँ की सेवा कर लोगे
जो तुम सुबह और शाम
घर बैठे ही मिल जाएँगे
तुमको चारों धाम।
लव यू माँ !

साढ़ा बापू रब वरगा

अमन
2956710144

पापा हर फर्ज निभाते हैं,
जीवन भर कर्ज चुकाते हैं
बच्चे की एक खुशी के लिए
अपने सुख भूल ही जाते हैं
फिर क्यों ऐसे पापा के लिए,
बच्चे कुछ कर ही नहीं पाते
ऐसे सच्चे पापा को क्यों,
पापा कहने में भी सकुचाते
पापा का आशीष बनाता है,
बच्चे का जीवन सुखदायी

पर बच्चे भूल ही जाते हैं,
यह कैसी आँधी है आई
जिससे सब कुछ सिखाया है
कोटि नमन ऐसे पापा को
जो हर पल साथ निभाया है
प्यारे पापा के प्यार भरे
सीने से जो लग जाते हैं
सच्च कहता हूँ विश्वास करो
जीवन में सदा सुख पाते हैं।
लव यू बापू !

माँ की अहमियत

ए अंधेरे देख ले मुँह तेरा काला हो गया
माँ ने आँखे खोल दी घर में उजाला हो गया।
इस तरह मेरे गुनाहों को धो देती है
माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है।
किसी को घर मिला हिस्से में
या कोई दुकान आई
मैं घर में सबसे छोटा था
मेरे हिस्से में माँ आई।
यह कैसा कर्ज है जो
मैं अदा कर ही नहीं सकता
मैं जब तक घर न लौटूं
मेरी माँ सजदे में रहती है।
मेरी ख्वाहिश है कि मैं
फिर से फरिश्ता हो जाऊँ
माँ से इस तरह लिपट जाऊँ
कि बच्चा हो जाऊँ
कम से कम बच्चों की हँसी के खातिर
इस तरह मिट्टी में मिलाना
कि खिलौना बन जाऊँ।
उम्र भर खाली यूं ही हमने मकान रहने दिया
तुम गए तो दूसरे को कब यहाँ रहने दिया
मैंने कल सब किताबों को फाड़ दिया
सिर्फ एक कागज पर लिखा
एक शब्द 'माँ' रहने दिया।
थोड़ी-सी होते हुए भी जिन्दगी बढ़ जाएगी
माँ की आँखें चूम लीजिए
रोशनी पड़ जाएगी।
लबों पे उसके कभी बद्दुआ नहीं होती
बस एक माँ है जो मुझसे खफा नहीं होती।

अनु
2956720037
बी.एस.सी.
(कम्प्यूटर साईंस)

जब वा मनै पसन्द आई

मनीष
(2956710026)
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष (कम्प्यूटर साईंस)

जब वा मनै पसंद आई
लिस्ट में उसका नाम देखा था।
जब आने लगी वा कॉलेज में, तो क्लास में उसका
टॉप करने का काम देखा था।
एक दिन बस में गया था उसके पीछे, तब उसका
गाम देखा था।
मनै कॉलेज में उसतै करया था अपने प्यार का इजहार,
यो सबनै सरेआम देखा था।
उस दिन उसनै मेरा प्रपोजल ठुकरा दिया,
यो छोरा जिन्दे जी उसनै मार दिया।
मखा एक दिन तो वा हाँ करेगी, बस याहे राखी आस,
उसके चक्कर में होग्या मैं फैल, पर वा तो होगी पास।
रोज डे ने उसकी खातर गुलाब लाया था,
देण की हिम्मत ना होई, ज्यातै एक दोस्त तै बताया था।
उसके कहे बाद भी वा गुलाब लेण तै नाटगी,
मेरी चालू जिन्दगी ने वा फेर तै डाँटगी।
प्रपोज डे पे मनै दोबारा प्रपोज करना चाया,
मखा वा फेर ते नाटेगी, यो विचार दिमाग में आया।
इतना सोच कै, उसने प्रपोज करण की सलाह कैंसिल कर दी,
उस खातर अपनी फीलिंग्स लिख-लिख मनै अपनी डायरी भर दी।
जै वा हाँ कर दे, तो अपनी जिन्दगी भी उसके नाम कर दूँगा,
जो भी वा कहवेगी, कहते ही वो काम कर दूँगा।
और कहते होंगे अपनी इस नै सैटिंग मैं तो उसने जान कहूँगा।
उसते दूँगा सारे सुख, सारे दुःख मैं अकेला सहूँगा।
जब उसकी याद आवै, तो मैं सारे काम भूल जाऊँ हूँ।
उसके साथ के मीठे-मीठे ख्वाबां में सावन के झूले झूल जाऊँ हूँ।
और कोई मरता होगा खूबसूरती पे, पर मैं तो उसकी सादगी पे मरूँ हूँ।
कॉलेज में दो साल होगे हमने, पर मैं आज भी सिर्फ उसका इन्तजार करूँ हूँ।
मनै बेरा है वा कदे भी हाँ करै कोनी,
मेरे जीण-मरण का कोई राह करै कोनी।
मनै या चिंता कोनी के वा मेरे साथ ना हो,
डर मनै यो है कि उसके हाथ में कोई गलत हाथ ना हो
उस छोरी के चक्कर में इस मनीष ने यार कहण लगे जट्ट टिंका,
क्योंकि मेरे यार जाणै है उस छोरी का नाम है.....

पिता एक आसमाँ

नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
वो बचपन में डांट के, टेन्सेस सिखाना
वो हिन्दी में इंग्लिश की ट्रांसलेशन लिखाना
वो मेले में हमेशा मौत का कुँआ दिखाना
वो दूसरों से लड़ के आने पर मुझको बहलाना
नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
वो मेरे बीमार हो जानें पर अपने कंधों पर उठाके हॉस्पिटल ले जाना
वो डॉक्टर की एक सुई के बदले पार्ले जी बिस्किट दिलाना
वो दिन में तीन बार खाना और उसके बाद दवाई खिलाना
वो मेरे लिए आपका चिंता दिखाना, और प्यार से खिलाना
नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
वो चालीस तक पहाड़े याद होने पर, छोटी साईकिल दिलाना
वो मेरे साथ दौड़कर मुझे साईकिल सिखाना
वो सुहानी होली का आल्या आधे रास्ते में गिराना
वो इंग्लिश में 'टेन्सेस' याद होने पर घड़ी दिलाना
नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
वो बचपन में रात को राजा-रानी की कहानियाँ सुनाना
वो आपकी जिन्दगी के हर खुशी-गम के पलों को बताना
वो गर्मियों में आपका ''ता हैं, ती हैं, ते हैं'' वाले सिर्फ टेन्सेस पढ़ाना
वो सर्दियों की रातों में शकरकंद और गाजर का हलवा बनाना
नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
वो मुझे हर रोज हाथ पकड़ के स्कूल ले जाना
वो मुझे प्यार-फटकार से पढ़ाई सिखाना
वो शाम को मुझे अपने मजबूत कंधों पर सुलाना
वो मेरी हर छोटी गलती को, आसानी से माफ करना
नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....
नहीं, नहीं भूलूँगी मैं पिता श्री जब तक है जान, जब तक है जान .....

कविता
2956720014
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
नॉन मैडीकल

''माँ–बाप''

सीमा
2956720021
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
(कम्प्यूटर साईंस)

रहे हमेशा हमारे साथ,

कभी ना छोड़े हमारा हाथ,

हैं हम उनके राज दुलारे,

हैं हम उनके सबके प्यारे।।

हैं हम उनके राजकुमार,

हमसे करते हैं तो बहुत सारा प्यार,

हमेशा हमारा ध्यान वह रखते,

क्या हम उनसे प्यार नहीं कर सकते ?

अच्छा बुरा सब दिलाया,

बुरे पे हमें लड़ना सिखाया,

हैं हम एक फूल,

जिनके हैं वो वनमाली

रखते रखते ख्याल हमारा,

उन्होंने हमारा जीवन है सँवारा

करते हैं रखवाली हमारी,

क्यूंकि हमसे हैं उनकी दुनियां सारी।।

आँसू बहाकर हमें हँसाया है,

नींदे उड़ा के हमें सुलाया है,

डांटकर हँसाया अपने आप है,

दुनियां कहती उन्हें ''माँ-बाप'' है।।

Bhuteshwar

English Section

Dr. Rachna Sharma

Editor

All the views expressed in this magazine are of the author himself/herself. Section Editor is not responsible for them.

English Section

Editorial Message

The great aim of education is not simply to impart knowledge. There must be something inspiring that can instill values. Growing is to learn how to deal with varied situations in life. Happenings in life contribute to creativity. Creativity helps in solving problems more openly. It also suggests innovative ideas. Literary creativity helps to explore human experiences. When a person puts deeper thoughts to words or allows his emotions to spill on the paper, it makes the person confident.

A college provides a congenial environment for the personality development of its students. Students with creative mind and insight can reveal their writing skills and talent through the college magazine. Our college magazine provides opportunity to young writers to give vent to their creativity. Writing is also a part of extra-curricular activities. It is a beautiful way to express oneself. Creative writing is important for a student's emotional and cognitive development. It also helps in bringing out certain characteristics of the writer.

I am grateful to our students who have shared their creative outpourings with us.

Wish you all the best !

Dr. Rachna Sharma
Associate Professor of English

ENGLISH

Contents

S. No.	Name	TOPIC	Page No.
1.	Jahanvi	My College Days	30
2.	Jahanvi	My Best Friend, My Mom	30
3.	Jahanvi	A Parents Heart	31
4.	Jahanvi	Unforge	31
5.	Anil Kumar	Psychological Effects of Corona (COVID-19)	32
7.	Anil Kumar	The Apology	33
8.	Manoj Verma	Earth	34
9.	Muskan	A Nature	34
9.	Sahil Tanwar	What is Real Education	35
10.	Lalit Kumar	Online Education	39
11.	Beauty	It's Okey to not be okey	40
12.	Beauty	Life	40

Jahanvi
B.A. III Hons (Eng.)
2148420005

My College Days

Those were the best days of my life,
When fun and frolic was rife.
A refreshing realm of knowledge,
That was my college.

Funny friends and loving lecturers,
Freaky fundas and flexible study hours;
Riddles and rumors, gossips and giggles- umpteen,
Added spice to the junk I hogged at college canteen.

I majored in English literature,
And the subject suited my sensitive nature.
I was initiated into world of stories, poems, plays;
Each lecture set my imagination ablaze.

My college was a literary paradise,
Where I learnt to critically, analyze;
Every text that came my way,
Be it poetry, prose or play.

Free from fetters of school,
I willingly jumped into the knowledge pool.
Where education was mixed with entertainment,
At college learning was never a punishment.

My Best Friend, My Mom

Sabse bholi dost wo meri, sabse pahli sathi !
Sabse pahli dost wo meri, sabse pahli sathi !!

Gana bhale na aata ho, par mere liye wo gaati,
Kabhi khilone kabhi mithai, to kabhi ice-Cream dilati,
Kabhi zid main karti, to thabad bhi mujhe lagati,
Sabse pahli dost meri, sabse pahli sathi !!

Ho jati main kabhi udaas, to byaar se wo samjhati,
Seene se mujhe lagati, or dunia ki asliyat mujhe batati,
Jab aati main padh kar wapas, mujhe maalpue khilati,
Sabse pahli dost wo meri, sabse pahli sathi !!

Papa agar kabhi dante, to wo unise bhi lad jaati,
Rahun sada khushhal main, hardam yahi duaen deti,
Karna sadan hi achche kaam, yahi baat samjhati,
Sabse pahli dost wo meri, sabse pahli sathi !!

A Parent's Heart

Jahanvi
B.A. III Hons (Eng.)
2148420005

When you feel like
breaking down or crashing in,
Who do you turn to,
to forgive your sin ?
When you cried your lonely tears,
Who will you be there to fight your tears ?
And when it feels like no
One would understand,
Who was there to hold your hand ?

There are people whom you can't replace,
They' re the ones who gave you, your face.
They' ll love you through thick and thin,
They show you the light from deep within.
And if you chance by happen to die,
They' ll be the ones who will cry.

You see, my friend, there's
No one who can love you more
Than your very own parents,
that's for sure.
Always remember this is true,
That wherever you go,
Your parents will be there for you.

Unforge

Zindagi ka sabse favourite chapter
dohrane ko dil karta hai,
Bas ek baar wapas college life me
lautne ka dil karta hai,
Aaj har vo ek baat yaad aati hai,
Kuchh buri kuchh achi baate yaad aati hai,
Kuchh baate jo kal ki hi baate lagti hai,
Magar aaj un dosto ki yaade dil ko bahut hurt karti hai.

Abki baar class attend karne ka mann karta hai,
Dopahar ki class me aankhe band krne ka mann karta hai,
Canteen ki que me khade ho kar comment pass karne ka mann karta hai,
Exam time ki wo hasi mazaak yaad aate hai,
Kuchh dost exam nights me raat bhar sataya karte the,
To kuchh phone par message karke sataya karte the,
Aur fir subah uth kar kehte, "Yaar thoda gap jyada milta to jyada padh lete."

Psychological Effects of Corona (COVID-19)

As we know that the whole world is suffering from the worst pandemic attack of the decade. The whole world has been hit by the deadly virus called COVID-19 or casually called Corona Virus. Its first case was detected in the city of Wuhan, China. The virus had spread with a rapid rate in the whole world and a number of people from all over the world had been infected in the initial wave.

India, the second largest country in the world in terms of the population, was also hit by the virus. When the virus was spreading itself for the first time in the country, the government decided to impose a nation wide Lockdown to get rid of the virus. But, despite of it a great number of people were infected by the deadly virus and lost their lives.

As the virus was spreading at a faster rate the Government of India decided to extend the tenure of the lockdown multiple times and it was extended for more than a year. A year which was so valuable for the farmers, students, traders, and many more, was gone in waste. For more than a year, the occupations and every means of earning for the poor people were closed up. There was no source of income for the poor people. During the 2nd wave of pandemic India lost about 7million jobs. The private sector was affected most by the pandemic period. The small scale businesses were also affected. The job losses are attributed to series of curbs, including lockdowns, being announced by state governments to contain the spread of the second wave of COVID-19 infections. As a result, a number of people working in different cities and towns left for villages due to the closure of economic activities. Additionally, it also dashed hopes of any recovery to the economic activity seen after a dip in infections towards the end of last year.

The pandemic period not only affected the economy of India, but also created a great loss for the students. The students whether from schools, colleges, universities, or even from coaching institutions got their studies affected by the virus. Due to virus the study institutions were closed and the students were taking classes through the online mode. Now the schooling from a gadget is not a surprising point of education. The classes were organized on the internet. Children are still spending much their time on screen, which results in laziness, and weakness in eyes. The children are becoming couch potatoes, as they are not getting involved in the physical activities.

The people in the country are suffering from laziness due to inactivity of the physical work. They are getting frustrated and depressed due to immobility. A online survey was conducted under the aegis of the Indian Psychiatry Society. During the survey, a total of 1871 responses were collected, of which 1685 (90.05%) responses were analyzed. About 38.2% had anxiety and 10.5% of the participants had depression. Overall, 40.5% of the participants had either anxiety or depression. Moderate level of stress was reported by about 74.1% of the participants and 71.7% reported poor well being. As the Corona Virus pandemic rapidly swept across the world, it induced a considerable degree of fear, worry and concern in the population at large and among certain groups in particular, such as older adults, care providers and people with underlying health conditions.

The sleeping pattern has also got disturbed in the pandemic period. The people are spending a lot of time on social media platforms and OTT platforms which are causing the sleeping disorders or disturbances. People with sleeping disorders or disturbances are reported with a higher level of anxiety. Sleep deprivation influences the level of anxiety adversely. Moreover, sleep disturbance or disorder and depression go hand in hand. Insomnia is a common sign of depression. Sleep disturbance or disroder leads to increase irritability, tension, and vigilance. Sleep pattern can influence the psychological and mental status. Dietary changes are also recorded. Diet plays an important role in mental health. Proper diet intake is associated with the decreased levels of psychiatric disorders. Self-care should be implemented. A proper diet should be consumed. Both anxiety and depression have influenced the sleeping pattern as well as the intake of food. The majority of respondents felt tired and experienced low energy levels during the COVID-19 era. Individuals should do physical activities such as exercise, walking, running, swimming, and bicycling so that they can maintain a healthy lifestyle.

The pandemic period has highlighted the importance of health. Along with physical health, mental health is another pillar of a healthy community. During the COVID-19 outbreak, it is extremely crucial to look after our mental health. This helps in preventing suicides and other mental issues. Individuals should be encouraged to undergo psychiatric screening if they are experiencing any problems in their life to maintain a healthy mental status.

Anil Kumar
220068152003
M.A. English Ist

The Apology

We are not that much bold,
that will speak after you scold.
We are here to apologise,
your sincerely pretty guys.
What is done can't be justified,
But not a sin that we are Crucified.
Just a mistake not a fraud,
We the Lucifer, You the God.
We are already in the thoughtful hell,
And no hope of getting well
All human things are subject to folly,
It was not for fun neither for jolly.
We are here full of sorrow,
But it won't be repeated tomorrow.

Anil Kumar
M.A. English Ist
220068152003

Manoj Verma
B.A. III
2075110278

Earth

It's not about hell or heaven
we have only earth, the one.
we must be more careful
for mother nature.
It's not about only us.
but all creatures.

Increasing numbers of buildings,
Satellites and motors are not development.
It become a punishment,
if we don't care.
About the relation with nature which we share.

Misuse of all jams.
what we doing?
Just wasting water,
making dams.
Careless about population destroy our homes.
Become harder to breath,
Sun warmer than worm.

It's time to responsible behave.
Think what we giving and what can give.
What would we I left for the coming generation to save.
Its that life or a cave ?

A Nature

God created the world for people The beautiful nature it has will never been changed. of anything else. The environment should be given importance, for example, its usefulness, especially, for man, and animals, Environment provides food and shelter which man and animals need to survive. The world is in danger. Like Scientists who was not stopping from discovering things which man Can need future for a better life? But as they make a high standard of living, our environment will be affected. And if the environment is affected, man's heath will also he affected.

Human activities like illegal logging, illegal fishing Quarrying are the common causes of destruction of the environment. These practices of human having destroy the surroundings. In general, man has the biggest contribution in the destruction of environment. The development of many modern machines will lead to pollution, Because of the modernization, one can work early and fast. But we don't know that there is now affecting our environment.

Muskan
B.A. III Eng. Hons
2148420004

What is Real Education?

3 Idiots: The revolutionary movie that gave a whole new twist to the Indian education system. The movie conveys that education does not require money, uniform, big schools, and colleges; all it needs is the strong will to study. The story also focuses on how the education system should look beyond high grades and focus on what a kid wants. The answer to the given question "What is Real Education?" can be understood only when we know what education is. EDUCATION This nine-letter word is often used so frequently as a part of daily routine that it is difficult to blatantly state that those using this term do not even know its proper meaning, which they pretend is not so. To begin with our understanding of Education, we must remember the words of Anatole France, "Education is not how much you have committed to memory or even how much you know: it can differentiate between what you know and what you do not."

Thus we can say that education is a much broader and holistic concept than we tend to assume. It involves in its ambit-social, political, cultural, moral, philosophical, and economic dimensions. While many of us seek education merely to gain financial benefits, assuming education as a tool to get good jobs, very few take it in terms of knowledge of self-dwelling on philosophical grounds. In contrast, some hold the notion that education is necessary to keep hold of our lives and understand what is going around. The most dominant of these is undoubtedly the economic one. As we generally and purposefully seek education to get a good job, be economically well-off, and at least in India, it is so.

Education in the social or political dimension deals with integrating oneself with the demands of society and our own needs, i.e., striking a balance between self and group, and it comes by experience. Education also bears moral, cultural, and ethical dimensions, which decide our code of conduct as members of society.

So, education is what we get from schools and colleges, but it is also what we are imparted or learn at home and what we discover ourselves through our insights and experiences. Thus, education does not and can never end with the school or college term (ie, formal education) as it's a lifelong process; it is a continuous process spanned across life and ceased only with the end of life itself.

With the above-said concept of education, it's easier to ascertain why education is a must for a civilized society. Many people consider education a luxury meant for those who can afford it, but given the high importance it holds in an individuals' life, it will not be wrong to say that education is more than a luxury; it is a responsibility owes to itself. An uneducated community would mean the degeneration of the people and society itself.

Now, with a bit of understanding of education, we can attempt to answer the core question of "what is real education?"

We can clearly and concisely summarize that 'what sculptor is to a block of marble, real education is to the human soul. This term real education is nothing fancy; it is only the binding essence of education. Incorporating skills, values, and knowledge combined with accountability and responsibility makes us more human and lesser as biological animals. It leads to the overall and complete making of an individual. It makes one more competent and efficient in all respects, whether socially, politically, morally, economically, culturally, etc.

Real education can only be realized when the system imparting it is a good one, a sound one. Concerning the Indian context, most of the things as a part of getting an education (real education) are not realized, the reason being the absence of a sound system of education.

If we consider only the bare statistics on the number of children formally enrolled in schools, even those figures are far from satisfactory. Most of them, particularly the children in rural areas, have no other option than to lean towards state-run schools and colleges. The situation is critically bleak regarding imparting even primary education and skills, forgetting "real education."

Speaking the way education is tackled in our country is in itself a misery. Our policies on education have become redundant, and we are blindly following the western norms without even realizing its drastic consequences. To say more bluntly, we are trying to become a second-rate America without any identity of our own. The present education system has made us only degree holders without any factual knowledge; it is devoid of lasting human values which every individual must possess. It has made us more and more competitive, not competent.

The individuals are different but to accentuate the differences and encourage the development of the individual and the nation, education is a must. If we are being educated only to distinguish, have total domination over others, or get a good job, then our lives will be shallow and empty. Suppose we are being educated only to be scientists, scholars wedded to books, or specialists addicted to knowledge; in that case, we contribute to the destruction and misery of the world.

We must realize that education must be a liberal one contributing to the holistic development of an individual, as this is what the purpose of education or real education must be.

If we look around, we'll find that education can act as a powerful tool to transform lives and change the world. Not only many regional problems (like Naxalism, Regionalism, and Communalism), etc. but national and international problems like Poverty, Hunger, Terrorism, Global Warming, Climate change, and so on, can only! Overcome with the difference in people's outlook towards these problems can only be achieved through education (real education).

Education must never be confused with literacy. Though the state in India has shown efforts to increase the literacy level, which has come to around 75%, it does not imply a rosy picture regarding the status of education in India. As we very well know that literacy is a narrow concept, and education suggests a broader perspective.

Education goes hand in hand with freedom and justice for individuals. If individuals are not educated in society, liberty and justice will be non-existent. This will automatically create hindrances for the development of an individual and the country, as what happened in colonial India's not hidden from us.

Let's consider the impact of education on a more significant (global) level- the world as we know it today is broadly categorized as developed (or advanced), creating, and lastly, Least Developed Countries (LDCs). Visible and stark differences exist between these categories, whether social, political, or economic. Countries such as the U.S.A., Japan, European countries, etc., forming the group of advanced countries, are top-notch in all spheres. In contrast, the Least Developed Countries comprise some Latin American and Sub-Saharan countries occupying the lowest rung. Various indicators such as Human Development Index, Gender-Related Development Index, Gender Inequality Index, Global Hunger Index, etc., also present a bleak scenario of these countries, implying low standard of living being prevents in these countries. The root cause may be more than one, but one of the most important ones is the lack of sound of the education facilities in these countries.

The situation of India is no better as there remain numerous challenges facing it today on account of developing a sound education system even after 67 years of independence. While most of us keep blaming everything on the government for its faulty policies, lack of political will, or poor implementation of the existing good ones, we forget that the remaining four points towards us while pointing the finger at administration.

Problems in India have persisted because some think that getting a good education is their exclusive right. Many of them never, ever from the core of their thoughts, want the deprived sections of society to benefit from education because they fear that their domination will come to an end. On the contrary, lack of awareness and ignorance of these deprived people has led to deplorable conditions in which they are.

We don't see a change because we have never tried to bring about that change around us. Just sitting in our cozy living rooms holding a cup of tea and blaming the state solely for the poor health of education in India is not the way out. It needs to be taken more seriously. With the rising young population, the demographic dividend is highly in favor of our country; and the possibility of India as a potential leader of the world would be highly diminished if we fail to seize the benefits accruing at this point. Thus we need to reap the benefits from this favorable demographic dividend; this can be done by turning our population as assets, as human capital.

And the tool required for this is education and only education. Without this, no amount of FDI, FII inflow, or even export surplus can boost the country's economic growth and place us at par with the world's developed nations. A nation will grow only when its people will.

Initiatives on the part of government are being taken, but we as members of society must also fulfill our social responsibility. And a more significant role can be played by educational institutions. Education should not be a burden as schools and colleges now it to be; instead, there should be more excellent and fair chances for independent learning for every individual.

Education is so vital for a society that it's almost impossible to imagine the growth of civilization as we see it today. With the rise in social evils, whether it be an increase in crimes, corruption, poverty, scams, ethnic problems, problems of national importance such as Naxalism, regionalism, national integration problems, etc. We must halt for a while and think about the possible reasons; certainly we'll find the absence of sound education or the of faulty education as the perpetuating cause of these nuisances. It only reflects that roots of education aren't strong enough to stop us from treading the wrong path.

This is a severe threat to humankind at large; we must get up from our deep slumber and start making efforts to change this. But we must not get disheartened if our small actions don't bear fruits in a short span; they will definitely and surely do wonders in the long run. Because this requires a change in the system (the existing education system), we very well know that changes in the design, whether political, cultural, social or as the case here educational, cannot be changed suddenly. They are to be transformed slowly and steadily. Also, they can be transformed only when there is a fundamental change in ourselves.

We must remember that the individual is the center of all systems. If they only do not understand themselves, there can be no peace and order in the world; and this very understanding is facilitated by REAL EDUCATION.

Sahil Tanwar
M.A. English (Final)
Roll No - 2957110013

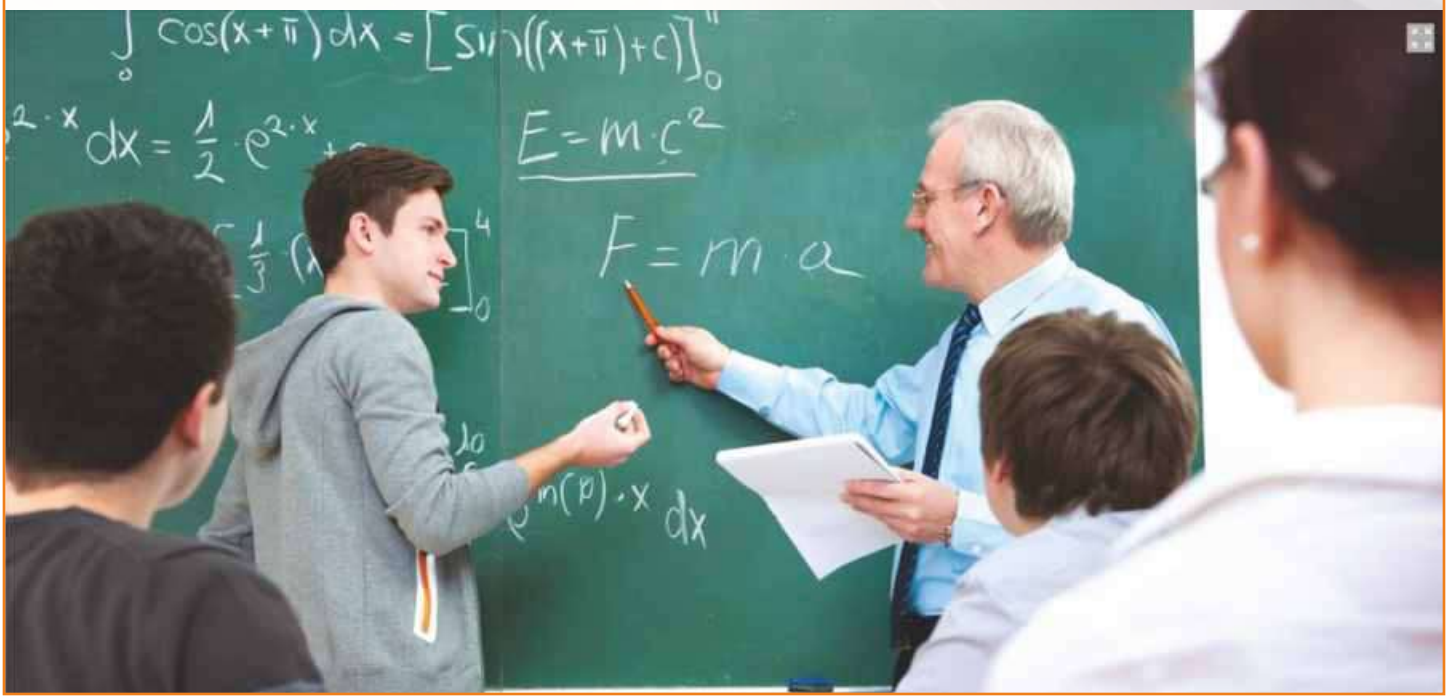

ONLINE EDUCATION

Online Education is a form of education where students use their home laptops/smartphone through the internet. We can also said that "Online Education is electronically supported learning that relies on the internet for teachers/students interaction and the distribution of class materials." Online Education refers to the use of electronic applications and learning processes.

Education is an important part of our life. It can also make our future and if it is not taken care can also spoil. The process of learning and teaching online education takes place through the electronic medium that is done thorough digital platforms. It enables students to gain educational experience through technology. With the emergence and spread of COVID-19 in India, Online Education has trickled down to the most basic level- schools and colleges ! Let me tell you about my experience of Online Education during lockdown - My online learning or Education experience is completely different than what I am used to doing in the offline classroom. No doubts online classes are a good method of teaching. But I like to be in a physical classroom than an online learning environment. Our teachers started online classes to continue the studies of students, each and every teacher is given his /her best to make our concept clear. But, Every student is not able to use. electronic devices effectively, I'm also one of them. But after sometime I'm familiar with this and can able to use it according to my meets. And my teachers have been really working hard to maintain the quality of the online lectures. The teacher interacts with students in very cool and interesting manner that attracts more and make students towards online.

In physical or offline classes, a teacher can help me in any doubts. But in online classes, I have to use the resources by myself and there is less communication with my teacher. Even my concentration is lacking sometimes and screen time causes irritation in my eyes. Even my teachers are staking weekly test to ensure our weekly learning efforts met by students and to enhance our answer writing skills. I am trying my best to be a good distance lecturer.

As we know, "Each coin has two plates", some is with online education. It has also some negative effects, One of the major negative effect of online education is that many students don't have smartphones or laptops to attend online classes. They are not able to continue their study. In such cases, government should have to provided the facility. to the poor students, who don't have! any electronic device to continue their study. So, overall in my experience, online classes experiences are better for those students who have proper gadgets, internet connection, etc. But it may be bad for those students who don't have all these facilities.

It can be said about online education that there are some challenges in online education that must be overcome." Also the benefits of online education are more as per the situation today. Online education has grown significantly due to the digital age and pandemic. Certainly, while looking at the situation it can be said that the future of online education is bright and it is bringing a revolution in the field of education.

Lalit Kumar
B.A. II (Eng. Hons.)
3029710002

It's Okay to not be Okay

Beauty
B.A. III Hons (English)
2148420002

It's okay to not be okay.
It's just not okay to stay that way.
The one thing I know about emotions is that they change.
One hour from right now you will not feel the same way.
And I wanna encourage you that you might be in your darkest moment,
You might be going through hell and high water,
But I know this,
It is always too soon to quit.
You have a reason to live.
Yours best days are in front of you.
Get up,
Your future is brighter than your past.
Get up,
Your latter is better than your former.
Get up,
because the best is still yet to come.

Life

Life is like a book.
Some chapters are sad,
Some are happy, and
Some are exciting,
but if you never turn the page,
you will never know what the next
chapter has in store for you.
Fill your life with experiences,
not things.
Have stories to tell,
not stuff to show.
Learn from everyone.
Follow No one.

Bhuteshwar

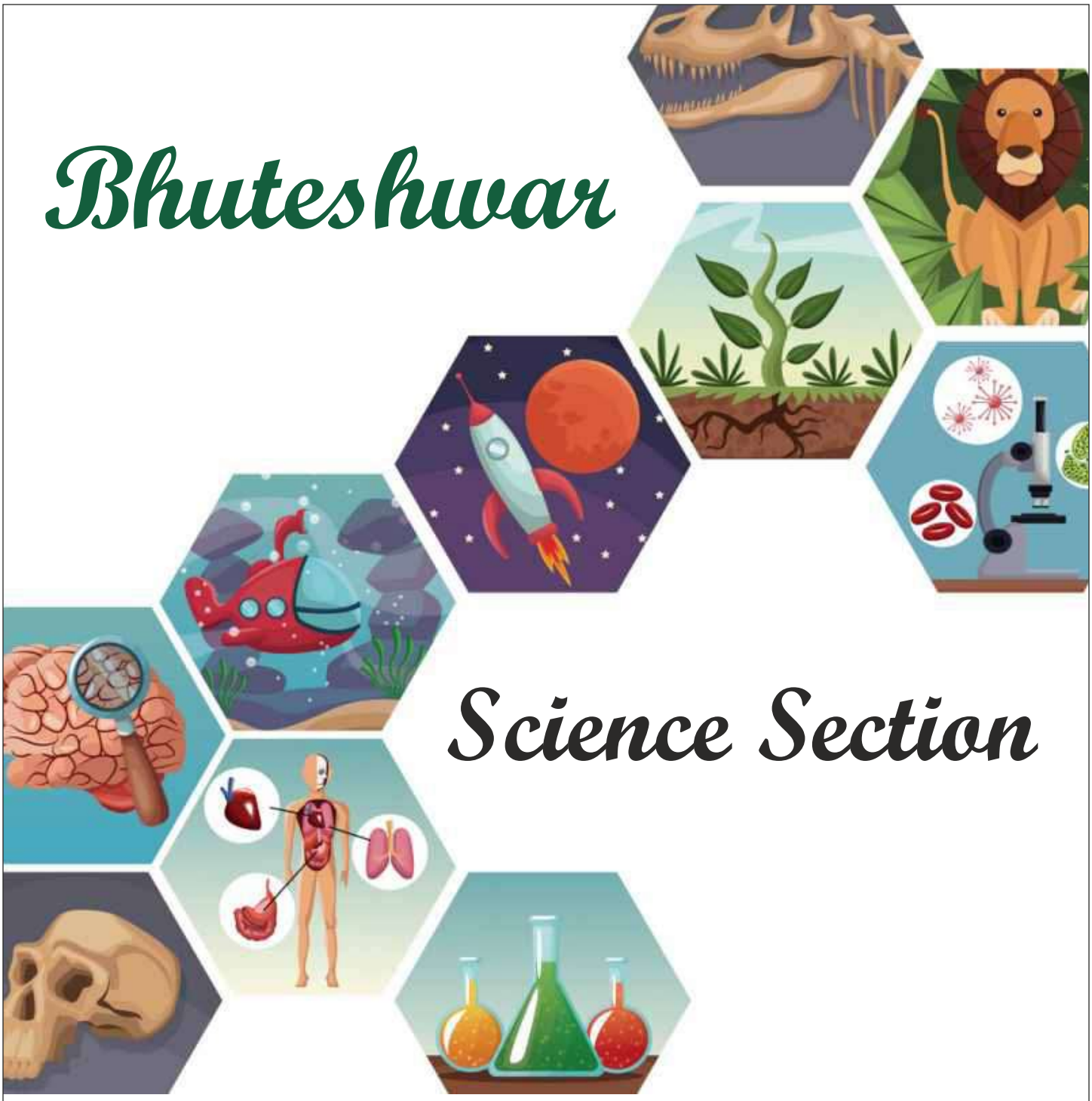

Science Section

Kamaljeet Singh
Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.

Editorial Message

Nurturing creativity and inspiring innovation are two of the key elements of a flourishing education, and a college magazine is the perfect amalgamation of both. It harnesses the creative energies of the academic community, and distils the essence of their inspired imagination in the most brilliant way possible.

Science and technology are important parts of our day to day life. We get up in the morning from the ringing of our alarm clocks and go to bed at night after switching our lights off. All these luxuries that we are able to afford are a resultant of science and technology. Most importantly, how we can do all this in a short time are because of the advancement of science and technology only. It is hard to imagine our life now without science and technology. Indeed our existence itself depends on it now. Every day new technologies are coming up which are making human life easier and more comfortable. Thus, we live in an era of science and technology.

Essentially, Science and Technology have introduced us to the establishment of modern civilization. This development contributes greatly to almost every aspect of our daily life. Hence, people get the chance to enjoy these results, which make our lives more relaxed and pleasurable. If we think about it, there are numerous benefits of science and technology. They range from the little things to the big ones. For instance, the morning paper which we read that delivers us reliable information is a result of scientific progress. In addition, the electrical devices without which life is hard to imagine like a refrigerator, AC, microwave and more are a result of technological advancement.

Furthermore, if we look at the transport scenario, we notice how science and technology play a major role here as well. We can quickly reach the other part of the earth within hours, all thanks to advancing technology. In addition, science and technology have enabled man to look further than our planet. The discovery of new planets and the establishment of satellites in space is because of the very same science and technology.

Similarly, science and technology have also made an impact on the medical and agricultural fields.

The various cures being discovered for diseases have saved millions of lives through science. Moreover, technology has enhanced the production of different crops benefitting the farmers largely.

I wish to congratulate the whole magazine team for effortlessly working out despite all odds to come up with this fabulous edition.

Kamaljeet Singh

Asstt. Prof of Physics

Contents

S. No.	Name	TOPIC	Page
1.	Mannu Arya	Definition	44
2.	Sushma Rani	Era of Medicinal Chemistry	46
3.	Poonam Sihag	Biodegradable Plastics	46
4.	Renu Devi	Chemistry in Every Day Life	47
5.	Savita Rani	Hydrogen Economy	47
6.	Monika Jaglan	Green House Gases	48
7.	Monika Sandhu	Modern Trend of Nanotechnology	48
8.	Dr. Balkrishna Kandpal	Energy Harvesting : Concept of Smart World	49
9.	Nisha Pruthi	Chemistry	51
10.	Ashish	Light	51
11.	Rachna	Love is Chaos	52
12.	Seema Redhu	Ground Water Chemistry	52
13.	Suman Rani	Reuse of Agriculture Aaquatic Waste	53
14.	Muskan	Higgs Boson	53

Definition

Recurrence relation is an equation that defines a sequence based on a rule that gives the next term as a function of the previous terms. The simplest form of a recurrence relation is the case where the next term depends only one immediate previous term. If we denote the term of the sequence by such a recurrence relation is of the form.

A recurrence relation can also be higher order, where the term could depend not only on the previous term but also on earlier terms such as, etc. A second order recurrence relation depends just on and and is of the form.

In mathematics, a **recurrence relation** is an equation that expresses the *n*th term of a sequence as a function of the m previous terms, for some fixed *m* , which is called the *order* of the relation. Once *k* initial terms of a sequence are given, the recurrence relation allows computing recursively all terms of the sequence.

General results on recurrence relations are about *linear recurrence relation,* which are recurrence relations such that the *n*th term is linear with respect to its previous terms. Among them, linear recurrences with constant coefficients, and linear recurrences with polynomial coefficients are important.

Order of recurrence relation

A **recurrence relation** is an equation that expresses the *n*th term of a sequence as a function of the m previous terms, for some fixed *m*, which is called the *order* of the relation. Once *k* initial terms of a sequence are given, the recurrence relation allows computing recursively all terms of the sequence.

First order recurrence relation

First order recurrence relation is the case where the next term depends only one immediate previous term. If we denote the term of the sequence bysuch a recurrence relation is of the form

2nd order recurrence relation

A recurrence relation can also be higher order, where the term could depend not only one previous term but also on earlier terms such as, etc. A second order recurrence relation depends just on and and is of the form

3rd order recurrence relation

A recurrence relation can also be higher order, where the term could depend not only one previous termbut also three earlier terms such as, and is of the form

The Fibonacci and Lucas Number Sequences

In number theory, discovery of number sequences with certain specified properties has been a source of attraction since ancient times. The most beautiful and simplest of all number sequences is the Fibonacci sequence [20]. This sequence was first invented by Leonardo of Pisa (1180 to 1250), who was also known as Fibonacci, to describe the growth of a rabbit population. It describes the number of pairs in a rabbit population after M months if it is assumed that

The first month there is just one newly born pair,

Newly born pairs become productive from their second month on,

There are no genetic problems whatsoever generated by inbreeding,

Each month every productive pair begets a new pair,

The rabbits never die.

Thus, if in the n^{th} month, we have rabbit and in the (month, we have rabbits, then in the month we will necessarily have rabbits. That's because we know each rabbit basically gives birth to another each month (actually each pair gives birth to another pair, but it's the same thing) and that means that all a rabbits give birth to another number of a rabbits, become fertile after two months, which is exactly in the month. That's why we have the population at moment (which is) plus exactly the population at moment n (which is ").

Perhaps the greatest investigator of the properties of the Fibonacci and related number sequences was François Edouard Anatole Lucas (1842 to 1891). A sequence related to the Fibonacci sequence bears his name, called the Lucas sequence in which the first term is 1, second term is 3 and satisfy recurrence relation identical to that of Fibonacci numbers.

Mannu Arya
(Extension Lecturer)

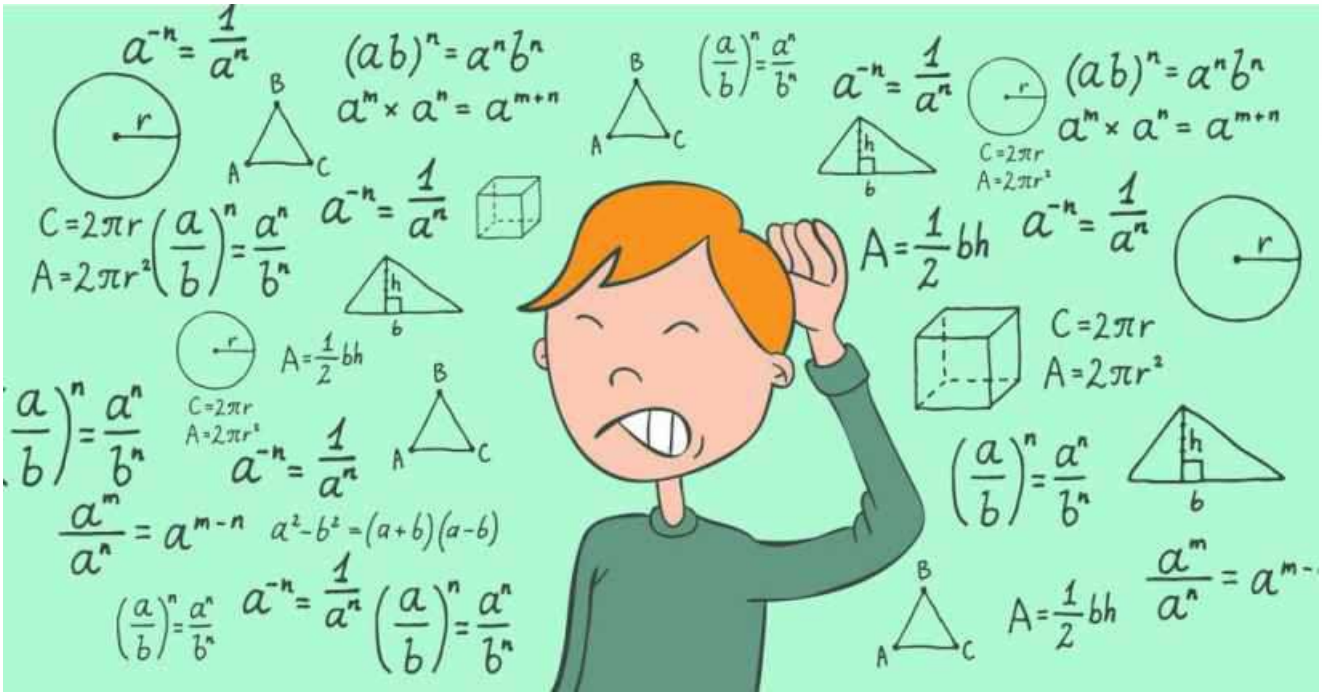

Era of Medicinal Chemistry

An introduction to Medicinal Chemistry help to unlock this fascinating subject. A glossary helps to familiarise the language of medicinal chemistry. The fundamental aspects of medicinal chemistry and contains comprehensive information on approximately 5,000 drugs currently in use, describing their therapeutic uses, their mechanisms of action, and their main side and harmful effects. Employs the latest World Health Organization (WHO) pharmacological classification and provides extensive information for drugs on WHO's latest list of basic or essential pharmaceuticals, including history: chemical, trade and generic names; chemical structure; obtention; physical and chemical properties; mechanisms of action; therapeutic uses; adverse reactions; biotransformation; chemical and pharmacological incompatibilities; bioavailability; dosage; storage; and assay. Over the past two decades our understanding of the unique and enigmatic properties of medicinal chemistry has deepened considerably.The medicinal chemistry has led to more sophisticated and creative approaches to the designing of drug candidates. In addition to the importance of medicinal chemistry in drug design, which offers considerable utility in both a preclinical and clinical setting where labeled ligands provide useful tools for understanding drug disposition and evaluating drug-target engagement. We anticipate that our under-standing of the organic and medicinal chemistry will continue to evolve and will contribute to the design and development of important future drugs to address the considerable unmet medical need that remain in human health.

Sushma Rani
(Extension Lecturer)

Biodegradable Plastics

- Biodegradable plastics are plastics that can be decomposed by the action of living organisms, usually microbes, into water, carbon dioxide, and biomass. Biodegradable plastics are commonly produced with renewable raw materials, micro-organisms, petrochemicals, or combinations of all three While the words "bioplastic" and "biodegradable plastic" are similar, they are not synonymous. Not all bioplastics (plastics derived partly or entirely from biomass are biodegradable. Biodegradable plastics are commonly used for disposable items, such as packaging, crockery, cutlery, and food service containers.
- In principle, biodegradable plastics could replace many applications for conventional plastics.
- P Poly lactic Acid is thermoplastic aliphatic polyester synthesized from renewable biomass, typically from fermented plant starch such as from corn ,sugarcane or sugar beet pulp. In 2010, PLA had the second highest consumption volume of any bioplastic of the world.
- Starch blends are thermoplastic polymers produced by blending starch with plasticizers. Because starch polymers on their own are brittle at room temperature, plasticizers are added in a process called starch gelatinization to augment its crystallization . While all starches are biodegradable, not all plasticizers are. Thus, the biodegradability of the plasticizer determines the biodegradability of the starch blend.

Poonam Sihag
(Extension lecturer)

CHEMISTRY IN EVERY DAY LIFE

We human beings are knowingly or unknowingly surrounded by chemistry. Morning to evening, life to death, it is a big aspect of our day-to-day life. One may think that it is a branch of science that deals with chemicals in the lab only but unknowingly he/she is applying it in daily works. We find its use in the food we eat, cleaning chemicals, the air we breathe and, every object we touch.

Literally, student's chemistry education takes place in lectures and books, lab playing with instruments and chemicals and they don't see the relevance in their everyday life. Understanding the importance of chemistry in our regular life is most important in our technological and competitive society.

It also helps to understand the world issue arising currently. One might get surprised when we say that our body is made of chemical elements and compounds so we can say we are the products of chemistry. Our emotions like love, respect, jealousy, frustration are also the aspect of chemistry.

Renu Devi
(Extension Lecturer)

HYDROGEN ECONOMY

The never ending debate on energy supply for a cleaner environment, recently associated with the worldwide effort to decrease global CO_2 emissions, has been revived by the steep increase in oil prices and the parallel controversy about the potential of nuclear energy, initiated in the mass media on the anniversary of the nuclear disaster of Chernobyl. Thus, now seems an appropriate time for the scientific community and energy producers to exchange their knowledge in this debate far away from the magic solutions provided by mass media prophets, in an attempt to arrive at realistic guidelines that may help society to understand the important issues involved in the move towards a cleaner energy system.

In this essay a description of the potential paths that may make it possible to change from the current energy sources to a cleaner energy production system is provided, the main focus being placed on how the so-called hydrogen economy might eventually be implemented. The milestones that the international agencies expect to emerge during the transition will be described, taking into account the issues of hydrogen production, distribution, storage and use. Additionally, the potential exploitation of the different hydrogen sources, both renewable and non-renewable, will be evaluated taking into account their availability and the efficiency of the processes used to transform them into hydrogen.

Savita Rani
(Extension Lecturer)

Green House Gases

Greenhouse gas, any gas that has the property of absorbing infrared radiation (net heat energy) emitted from Earth's surface and reradiating it back to Earth's surface, thus contributing to the greenhouse effect. Carbon dioxide, methane, and water vapour are the most important greenhouse gases. Greenhouse gases have a profound effect on the energy budget of the Earth system despite making up only a fraction of all atmospheric gases. Concentrations of greenhouse gases have varied substantially during Earth's history, and these variations have driven substantial climate changes at a wide range of timescales.

In general, greenhouse gas concentrations have been particularly high during warm periods and low during cold periods.The effect of each greenhouse gas on Earth's climate depends on its chemical nature and its relative concentration in the atmosphere. Some gases have a high capacity for absorbing infrared radiation or occur in significant quantities, whereas others have considerably lower capacities for absorption or occur only in trace amounts.

Major greenhouse gases

Water vapour

Carbon dioxide

Methane

Monika Jaglan
(Extension Lecturer)

Modern Trend of Nanotechnology

Nanotechnology can be defined as the science and engineering involved in the design, synthesis, characterization, and application of materials and devices whose smallest functional organization, in at least one dimension, is on the nanometer scale or one billionth of a meter.

At Nanotechnology has found many applications in medicine and this articles outlines some such applications. Nanotechnology is an exciting new area in science, with many possible applications in medicine. These applications include drug and gene delivery, bio-detection of pathogens, detection of protein, probing of DNA structure, tissue engineering, tumor detection, separation and purification of biological molecules and cells, contrast enhancement.

Precise control and manipulation of nanomachinery in cells can lead to better understanding of the cellular mechanisms in living cells, and to the development of advanced technologies, for the early diagnosis and treatment of various diseases. The significance of this research lies in the development of a platform technology that will influence nanoscale imaging approaches designed to probe molecular mechanisms in living cells. This article seeks to outline the role of different areas such as diagnosis of diseases, drug delivery, imaging, and so on.

Monika Sandhu
(Extension Lecturer)

Energy Harvesting : Concept of Smart World

Energy plays vital every aspect of life, without energy no any process can be initiated. Energy harvesting may be used for today's world in very vast fields, different studies has been carried out in this topic. Taking an example of perpetual motion machine in which a machine hypothetically can do work infinitely without an external energy source. These types of machines are impossible because not obeying first and second law of thermodynamics.

The perpetual motion may appear in rotations of celestial bodies such as planets motion. The size of system is big concern for laws of thermodynamics, so in compression of celestial of bodies if we are taking example of other bodies the dissipation of kinetic energy is fast in bodies other than celestial like solar, wind, interstellar medium resistance, gravitational radiation and thermal radiation, so they will not keep moving for ever.

Any machine cannot be operated for indefinite time, because machines are driven by energy source which may exhausted after some time. A state of was announced in 2017 known as '*time crystal*'. This new state of matter in microscopic scale the component of atom is continual repetitive motion, like perpetual motion.

Here without energy motion can be exhibited as on quantum ground no energy can be extracted and perpetual machine is not being constituted in traditional way or violate thermodynamics law. (Source: Wikipedia)

Source: YouTube Channel -The Things Network

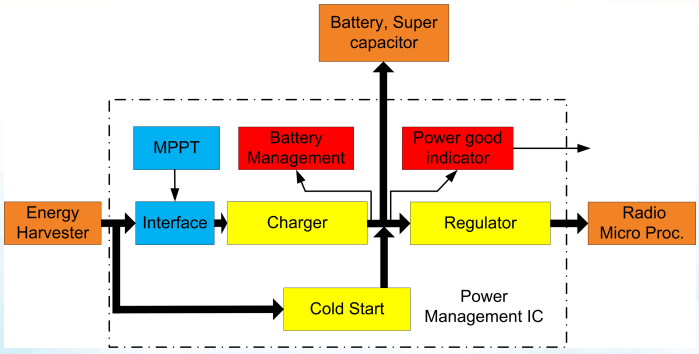

Energy Harvesting (also known as energy scavenging, power harvesting or ambient power) may be defined as 'the process in which energy come up from external sources captured and stored for small wireless autonomous device like those used in wearable electronics and wireless sensor networks'. For low energy electronic equipments energy harvesters provide very small among of energy.

An energy harvesting system may be used in different fields life as given below.

1. *Smart House*
2. *Factories*
3. *Public Facilities*
4. *Electric Vehicles*
5. *Power Plants*
6. *City and Building*

The working and necessary arrangement for the above said fields may understand with the example of smart house.

Energy harvesting System (Source: YouTube Channel Digi-Key)

Smart House: Using IoT (Internet of things) a house can be automized and can perform as smart house. The automation system in home will control and monitor the home appliances such as lighting, entertainment, security and other appliances by connecting through. A central smart hub(gateway) controlled the interface that may accessible Off site throgh internet.

Energy harvesting is a conversion of energy extracted from environment into electrical energy. Energy exists in different forms of like thermal, chemical, electrical, and R.F. etc.

(Source: International Journal on Advances in Information Sciences and Service Sciences Zakaria et al)

The technique of automation for smart house is basically reduction of batteries use in different application in home, in this automation method of energy such as solar, electromagnetic and wind energy is used. A device using artificial intelligence application like Alexa and Wireless Sensor Network (WSN) is part of energy harvesting.

As smart house similarly energy harvesting factories, power plants, public facilities, electric vehicle and city and building projects may applied to reduce the consumption and may work as part of smart world.

The Automation is playing key role in making the smart world for better future of mankind, this technology may be the best companion and may explore new innovative research field.

Dr. Balkrishna Kandpal,
Physics Department

Poem : Chemistry

Chemistry is the branch of science.
In which we study about chemicals and appliance.
Like NDA, We combine.
Chemistry molecules are so divine.
Solid, Liquid, Gas are States of matter.
But in the end you make me flatter.
As (Au) symbol for gold.
I will be with you Till we will old.
Law of periodic elements is not a history.
Periodic table in the heart of Chemistry.

Nisha Pruthi
Assistant Professor

Light

Perhaps I shine brightest now,
but my energy has changed;
what I know is difficult to know
in simple space and time;
passion is a system dying,
if not making new.

Precious is a luxury,
a jewel with maintenance.

I am a white dwarf, long in the truth
of life and death, weighted with mission
that follows me like a shadow,
a penumbra I must now leave behind.

This is the way of creation, nothing
begets nothing. Darkness moves me
into the light.

Ashish
Physics Deptartment

Love is Chaos

Love is Chaos
(It's relative, generally speaking)
The angle of incidence - the collision
The angle of reflection - the realization
Burned by the egregious refraction
Of searching eyes
What is the (anti) matter
Stretched between magnetic fields
Of reason and Desire
How will the equation balance
One side must invariably be solved
(You)
A centripetal force inveigling
Explain entropic delusions
and test assumptions of reality.

Rachna
Physics Department

GROUND WATER CHEMISTRY

Water is becoming an increasingly scarce resource for large parts of the global population. Ground water is a significant part of the total water resource and plays an important role as a water supply for both drinking and irrigation. The chemistry of ground water widely depends on complex geological, geochemical, hydro geological, and climatic factors, which control chemical evolution, giving rise to large spatial variations at a range of scales, and induce pollution issues. In addition, human activities may have an important effects on the chemistry of ground water due to pollution from agricultural, industrial, and mining activities.

Over recent decades, the science of ground water chemistry and pollution has experienced improvements, and the fundamental knowledge that exists on many of the controlling processes and ground water impacts from point and non-point sources of pollution has been widely studied. However, many issues still require the attention of the scientific community.

Seema Redhu
(Extension Lecturer)

Reuse of Agriculture Aaquatic Waste

Recently, the use of nanocomposites as a photocatalyst to remove organic or inorganic contaminants has been extensively studied. Photocatalytic activity for the degradation of pesticide organic compounds has recently become green and innovative process for agricultural waste treatment. Agricultural organic compounds contaminated with aquatic waste may cause carcinogenic and teratogenic properties in humans and the environment. Therefore, advanced and effective methods need to be developed to minimize or neutralize the environmental harm of pesticide organic compound contaminated aquatic waste.

Various advanced aquatic purification techniques employing photocatalyst mediated photo-degradation of toxic organic substances, zinc oxide (ZnO) and titanium dioxide (TiO_2) are the most widely used semiconductor due to their unique blend of properties. Most of these photocatalysts have a bandgap in the ultraviolet (UV) region, which is equal to or larger than 3.2 eV. Zinc oxide (ZnO) has been one of the most attractive sorbents, photocatalysts, and semiconductors for environmental remediation, due to its low cost, long-term stability, and very low toxicity for humans and the environment. It also has been found that the photocatalytic performance of ZnO as compared with TiO_2 can be improved by doping with metal oxides with the catalyst.

Suman Rani
(Extension Lecturer)

Higgs Boson

Muskan
2956720004
B.Sc. Final
(Non Medical)

A God Particle has the name, Higgs Boson.
Higgs Boson gives mass to a particle.
A particle nearby acquires more mass.
The mass of a particle is the amount of matter.
Matter, unknown of the Universe is missing energy.
The energy missing or dark is 94% of the Universe.
For the Universe and its creation, Higgs Boson was the cause.
The cause of the Universe was the God Particle.
The God Particle gave mass to even dusts where there're all gods.
The gods of all the religions were born out of this particle.
But this particle is a wonderful invention.
This invention will hurt the minds of the priests.
The priests won't nod to the Big Bang Theory.
The theory may solve the universal mystery.
The untied mystery will make the priests angry.
Their angry will make them refuse the single God Particle.

Bhuteshwar

Commerce Section

Subhash Duggal Kabir

Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.

वाणिज्य-अनुभाग

Contents

S.No.	Name	Topic	Page No.
1.	गौरव बंसल	E-Learning in India	56
2.	डॉ० शर्मिला	कन्या भ्रुण हत्या	58
3.	भूपेन्द्र	जिन्दगी	59
4.	सुमन रानी	पापा ..... True Love Papa	59
5.	साहिल	क्या बहन बेटियाँ मायके सिर्फ लेने के लिए आती हैं	60
6.	देवशी	भैया	61
7.	अंजली बंसल	नारी एक समंदर	62
8.	अंजली बंसल	वो ख्वाहिश	62
9.	विवेक	मिट्टी वाले दीये जलाना.....	63

E-learning in India

Gourav Bansal, Commerce Department
Director, IQAC

In poorly performing educational systems as in the country, online learning may not usher in a revolution.

Equality of opportunity to all is one of the basic principles of our Constitution. From an educational point of view, John Dewey, American philosopher, psychologist, and educational reformer, strongly argued that "An environment in which some are limited will always in reaction create conditions that prevent the full development even of those who fancy they enjoy complete freedom for unhindered growth." Another point he makes equally strongly is that for good education, one must lead the child's current interests and abilities organically to logically organised human knowledge. This second point is an indicator of the quality of education.

Our education system was never very efficient even in the best of times. The COVID-19 pandemic has rendered it extremely biased and faulty. The main thrust of providing learning opportunities while schools are shut is online teaching. There are several sets of guidelines and plans issues by the government, the National Council of Educational Research and Training (NCERT) and the Central Board of Secondary Education (CBSE) for this purpose. The Internet space is teeming with learning schemes, teaching videos, sites and portals for learning opportunities. The content of all government sites and schemes is primarily the NCERT-issued Alternative Academic Calendar, videos of teaching, digital editions of textbooks, and links to other such material.

There are three pertinent issues in this whole effort of online education and schemes that need serious consideration. One, an exacerbation of inequality; two, the pedagogical issues leading to bad quality education; and three, an unwarranted thrust on online education, post-COVID-19.

Exacerbation of inequality

It is worth repeating a truism that calamities, be they natural or man-made, affect the underprivileged the hardest; COVID-19 is no exception. The plight of millions of migrant labourers, many of who walked thousands of kilometres right in the beginning of the lockdown, proved the point adequately. A similar but less noticed deprivation is being visited to children of the same people, which may push the next generation in a direction of even greater comparative disadvantage.

In our society there is no large movement that may generate any hope of an improved situation in terms of equality and social justice. Therefore, any positive change that might come about will be a cumulative result of the development of capabilities and grit in individuals. The COVID-19 shutdown has affected this opportunity for the poor even harder than their counterparts from well-to-do sections of society. The government began plans for students with no online access only by the end of August. The plans themselves were the usual glib talk always served to the poor. These plans assume semi-literate or illiterate parents teaching children, community involvement, mobile pools, and so on. Anyone with an understanding of rural India will immediately note these to be imaginary. As a result, whatever online or digital education is available is for students with only online access. Thus, digital India may become even more unequal and divided than it already is.

Even if one takes it as an emergency measure (that 'something is better than nothing') and also accept 'for some is better than no one' despite it being against the principle of equal opportunity, the quality of online teaching-learning leaves much to be desired. The NCERT declares in its Learning Enhancement Guidelines, or LEG that 60-70% students, teachers and parents consider learning satisfactory. However, its survey asks a single question on the feeling of students using the criteria of 'joyful to burdensome'. The happiness or otherwise of the student while learning is, of course, important, but it says nothing about the quantum and depth of learning.

Listening to lectures on the mobile phone, copying from the board where the teacher is writing, frequent disconnections and/or having blurred video/audio can hardly and organically connect the child's present understanding with the logically organised bodies of human knowledge.

No focus on concepts

If one sees videos of teaching mathematics, science, history, and the English language, one can hardly avoid noticing problems with them. In the science and mathematics videos, in particular, there are many misconceptions and ambiguities. The emphasis is more on 'tricks' to remember for success in an examination than laying the stress on conceptual understanding.

The government of Delhi also uses videos by the Khan Academy ("a nonprofit with a mission to provide a free, world-class education to anyone, anywhere"). Many American educators have questioned the quality of teaching and have pointed out inadequate or plainly wrong concepts, particularly in mathematics. To quote an article in The Washington Post , Khan Academy: The revolution that isn't : "teachers... are concerned that... the guy who's delivered over 170 million lessons to students around the world... considers the precise explanation of mathematical concepts to be mere 'nitpicking'."

The thrust, post-COVID-19IT has been presented as a harbinger of a revolution in education for more than three decades now. However, all reliable studies seem to indicate that Information and Communication Technology (ICT) in the classroom helps in already well functioning systems, and either has no benefits or negative impact in poorly performing systems. That does not indicate much hope from IT in our education system.

The NCERT's LEG states that "COVID-19 has created a situation which demands transformation in school education... the transaction mechanisms in school education may go through a drastic change. Therefore, even if the pandemic will get over, its traces will be there and school education needs to remodel itself...." It recommends that "alternative modes of education for the whole academic session including Internet-based, radio, podcast, community radio, IVRS, TV DTH Channels, etc." should be developed. This transformation of schools in the current understanding of pedagogy, suitability of learning material and quality of learning provided through IT will further devastate the already inadequate system of school education in the country. Of course, IT can be used in a balanced manner where it can help; but it should not be seen as a silver bullet to remedy all ills in the education system.

Institutional environment

The importance of an institutional environment cannot be overemphasised when one thinks of online teaching. Even when the institutions function sub-optimally, students themselves create an environment that supports their growth morally, socially and intellectually in conversations and interactions with each other. The online mode of teaching completely forecloses this opportunity.

In conclusion, our democracy and public education system have, as usual, left the neediest in the lurch and are providing bad education to those who matter.

कन्या भ्रूण हत्या

हर लम्हा हर पल, हर वक्त सिर्फ दर्द से सने है।
ऐसा लगता है मानों सारे गम सिर्फ उसके लिए ही बने हैं।
जन्म लेते ही क्यों कुछ चेहरों पर मायूसी छा जाती है
कुछ कलियाँ खिलने से पहले ही क्यों मुरझा जाती हैं।
क्यों क्रुर हाथ ऐसा करके खुद विधाता बन जाते हैं।

अरे समाज के ठेकेदारों, क्यों तोलते हो उसे दहेज से
तोलकर तो देखो एक बार, नारी नर से भारी है
हाँ नारी नर से भारी है, और अतीत में उसने,
नर के लिए विधाता से बाजी मारी है ममता के रूप में
विधाता ने उसमें स्वयं अपनी छवि उतारी है
क्योंकि वो जग की सृजनहारी है।

अरे आरक्षण की शेखी मारने वालों, जरूरत नहीं उसे आरक्षण की
आज नारी को चाहत है बस, सुरक्षा, सहयोग और सम्मान की
न जाने कितने दुःशासन रोज चीर हर जाते हैं
और ना जाने किस-किस के जीवन आत्म ग्लानि से मिट जाते हैं
अब तो कोई कृष्ण भी उनकी न लाज बचाने आता है।
नारी तेरी इस करूणा कथा पर मुझको तो रोना आता है।

बहुत है ऐसा कहने वाले की नारी की दुश्मन नारी है
पर क्या समझा किसी ने उसकी भी मजबूरी है
मेरी तरह न ही लाचार सहन करे ना वो आघात
यह सोचकर मजबुरन नारी करवा लेती है गर्भपात

इससे भी बढ़कर उसको, निभाने पड़ते हैं दो-दो कर्तव्य
पहला ये कि बेटा पैदा कर वंश चलाए किसी के कुल का
और दूजा ये कि आबादी न बढ़ाकर फर्ज निभाए परिवार नियोजन का

ओ देश के कानून निर्माताओं, करो ऐसा कानून रचित
कि एक लड़की भी कर सके अपने पिता के वंश को चालित
कम होगी आबादी इससे और रूकेगा
कन्या भ्रूण हत्या अभिशाप
भारत भूमि बन जाएगी फिर से जन्नत अपने आप।

डॉ० शर्मिला
वाणिज्य विभाग

जिन्दगी

'जिंदगी' कभी देती है मुस्कान हमें, तो कभी छीन लेती पहचान है...
कभी दिखता है दुवाओं का असर, तो कभी मिट्टी में मिल जाती शान है...
कभी तोड़ देती है उम्मीदें सारी, तो कभी थमाती हौसलों की कमान है...
कभी दिखाती है खौफ का मंजर, तो कभी होंठों पे देती मुस्कान है...
कभी मिलाती है अनजानों से, तो कभी-कभी कर देती अंजान है...
कभी है खुबसूरत यादों का दरिया, तो कभी बुरे सपनों-सी हैवान है...
कभी लगती है किस्सों-कहानियों जैसी तो कभी पल भर की मेहमान है...
हम ले सकें जिन्दगी में दर्द किसी का बस यही तो मुकम्मल गीता और कुरान है।

भूपेन्द्र नरवाल
वाणिज्य विभाग

पापा ..... True Love Papa

सुमन रानी
1210681003203
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

उगँली पकड़कर जिसने चलना सिखाया,
हर मोड़ पर संभलना सिखाया,
करते प्यार हमसे कितना पापा ने न आज तक जतलाया,
जिसकी बदौलत घर संभलता है, जिसके ख्वाब हमारी खुशियाँ हैं,
खुशियाँ देते हम को अपार अपने गम को छिपाते हैं।
मैं क्या जानूं खुदा के बारे में .....
मेरा खुदा मेरे पापा कहलाते हैं।
करते दिन रात कड़ी मेहनत संभाले सारे परिवार को,
करते यही प्रार्थना हर पल ईश्वर सलामत रखे परिवार को,
खुशियाँ देते हमको अपार, अपने गम को छिपाते हैं
मैं क्या जानूं खुदा के बारे में .....
मेरा खुदा मेरे पापा कहलाते हैं।
खुदा से बढ़कर हैं मेरे लिए वे,
मेरे सपनों को अपना मानते हैं।
करते हमारी हर इच्छा पूरी, स्वयं रूखा-सुखा खाते हैं।

प्यार हमसे कितना है, कभी नहीं जतलाते हैं,
उनकी बदौलत हम सुखी रह पाते हैं
नए-नए ड्रेस, शूज हमको दिलवाते,
हमारी खुशियों को लिए वो अपना सब कुछ दाँव पर लगाते
खुशियाँ देते हमको अपार, अपने गम को छिपाते हैं,
मैं क्या जानूं खुदा के बारे में .....
मेरे खुदा मेरे पापा कहलाते हैं।

क्या बहन बेटियाँ मायके सिर्फ लेने के लिए आती हैं

साहिल
120068003230
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

खिडकी के पास खड़ी सिमरन सोचती हैं राखी आने वाली है पर इस बार न तो माँ ने फोन करके भैया के आने की बात कही और न ही मुझे आने को बोला ऐसा कैसे हो सकता है। हे भगवान बस ठीक हो सबकुछ। अपनी सास से बोली माँजी मुझे बहुत डर लग रहा है। पता नहीं क्या हो गया। मुझे कैसे भूल गए इस बार। आगे से सास बोली कोई बात नही बेटा तुम एक बार खुद जाकर देख आओ।

सास की आज्ञा मिलने भर की देर थी सिमरन अपने पति साथ मायके आती हैं परंतु इस बार घर के अंदर कदम रखते ही उसे सबकुछ बदला सा महसूस होता है। पहले जहाँ उसे देखते ही माँ-पिताजी के चेहरे खुशी से खिल उठते थे इस बार उन पर परेशानी की झलक साफ दिखाई दे रही थी, आगे भाभी उसे देखते ही दौडी चली आती और प्यार से गले लगा लेती थी पर इस बार दूर से ही एक हल्की सी मुस्कान दे डाली। भैया भी ज्यादा खुश नही थे।

सिमरन ने जैसे-तैसे एक रात बिताई परन्तु अगले दिन जैसे ही उसके पति उसे मायके छोड़ वापिस गये तो उसने अपनी माँ से बात की तो उन्होंने बताया इस बार कोरोना के चलते भैया का काम बिल्कुल बंद हो गया। ऊपर से और भी बहुत कुछ। बस इसी वजह से तेरे भैया को तेरे घर भी न भेज सकी। सिमरन बोली कोई बात नहीं माँ ये मुश्किल दिन भी जल्दी निकल जाएँगे आप चिंता न करो।

शाम को भैया भाभी आपस में बात कर रहे थे जो सिमरन ने सुन ली। भैया बोले पहले ही घर चलाना इतना मुश्किल हो रहा था ऊपर से बेटे की कॉलेज की फीस, परसो राखी है सिमरन को भी कुछ देना पड़ेगा। आगे से भाभी बोली कोई बात नहीं आप चिंता न करो। ये मेरी चूड़ियां बहुत पुरानी हो गई हैं। इन्हें बेचकर जो पैसे आएंगे उससे सिमरन दीदी को त्योहार भी दे देंगे और कॉलेज की फीस भी भर देंगे।

सिमरन को यह सब सुनकर बहुत बुरा लगा। वह बोली भैया-भाभी ये आप दोनों क्या कह रहे हो। क्या मैं आपको यहां तंग करके कुछ लेने के लिए ही आती हुँ। वह अपने कमरे में आ जाती हैं। तभी उसे याद आता है अपनी शादी से कुछ समय पहले जब वह नौकरी करती थी तो बड़े शौक से अपनी पहली तनख्वाह लाकर पापा को दी तो पापा ने कहा अपने पास ही रख ले बेटा मुश्किल वक्त में ये पैसे काम आएंगे। इसके बाद वह हर महीने अपनी सारी तनख्वाह बैंक में जमा करवा देती। शादी के बाद जब भी मायके आती तो माँ उसे पैसे निकलवाने को कहती पर सिमरन हर बार कहती अभी मुझे जरूरत नहीं, पर आज उन पैसों की उसके परिवार को जरुरत है।

वह अगले दिन ही सुबह भतीजे को साथ लेकर बैंक जाती है और सारे पैसे निकलवा पहले भतीजे की कॉलेज की फीस जमा करवाती है और फिर घर का जरूरी सामान खरीद घर वापस आती है। अगले दिन जब भैया के राखी बांधती है तो भैया भरी आँखी से उसके हाथ सौ का नोट रखते है। सिमरन मना करने लगती है तो भैया बोले ये तो शगुन है पगली मना मत करना।

सिमरन बोली भैया बेटियां मायके शगुन के नाम पर कुछ लेने नही बल्कि अपने माँ-बाप की अच्छी सेहत की कामना करने, भैया भाभी को माँ-बाप की सेवा करते देख ढेरों दुआएं देने, बडे होते भतीजे भतीजियो की नजर उतारने आती हैं। जितनी बार मायके की दहलीज पार करती हैं ईश्वर से उस दहलीज की सलामती की दुआएं माँगती हैं। जब मुझे देख माँ-पापा के चेहरे पर रौनक आ जाती हैं, भाभी दौड़ कर गले लगाती है, आप लाड़ लड़ाते हो, मुझे मेरा शगुन मिल जाता हैं। अगले दिन सिमरन मायके से विदा लेकर ससुराल जाने के लिए जैसे ही दहलीज पार करती हैं तो भैया का फोन बजता है। उन्हें अपने व्यापार के लिए बहुत बड़ा आर्डर मिलता है और वे सोचते है सचमुच बहनें कुछ लेने नही बल्कि बहुत कुछ देने आती हैं मायके और उनकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगते है।

सचमुच बहन बेटियाँ मायके कुछ लेने नही बल्कि अपनी बेशकीमती दुआएं देने आती हैं। जब वे घर की दहलीज पार कर अंदर आती हैं तो बरक़त भी अपने आप चली आती हैं। हर बहन बेटी के दिल की तमन्ना होती हैं कि उनका मायका हमेशा खुशहाल रहे और तरक्की करे। मायके की खुशहाली देख उनके अंदर एक अलग ही ताकत भर जाती हैं जिससे ससुराल में आने वाली मुश्किलो का डटकर सामना कर पाती है।

शीर्षक :-

मेरा यह लेख सभी बहन बेटियों को समर्पित है और साथ ही एक अहसास दिलाने की कोशिश है कि वे मायके का एक अटूट हिस्सा है। जब मन करे आ सकती हैं। उनके लिए घर और दिल के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगें।

भैया

मुझसे दूर जाओ ना
मुझे मनाने आओ ना।
ये रेश्म की डोर टूट नहीं सकती,
यू रूठकर मुझे रूलाओ ना।।

छोटी-सी मैं बहना तेरी
बस इक बार गले लगाओ ना।
थोड़ी सी खीर, जरा सी मिठाई,
अपने हाथों से खिलाओ ना।।

मेरी सारी खुशियाँ तुझ पर कुर्बान,
धीरे से जरा मुस्कराओ ना।
नहीं अकेले तुम दुनियां में,
अपनी बहन को प्यार से बुलाओ ना।।

मुझे मनाने आओ ना भैया,
इक आवाज लगाओ ना।।

देवशी
1210681003177
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

अंजली बंसल
120068003133
बी.कॉम.

नारी एक समंदर

सोच रही हूँ क्या लिखूँ ? राधा लिखूँ या मीरा लिखूँ ?
या चौबीस कैरेट का हीरा लिखूँ ? मेरे घर की शहनाई लिखूँ ?
या लक्ष्मी है तो कमाई लिखूँ ? अपने में ही एक नेचर लिखूँ ?
या मेरी पहली टीचर लिखूँ ? सिर का अपना बोझ लिखूँ ?
या एक अकेली फौज लिखूँ ? मेरे घर की शान लिखूँ ?
या ईश्वर का सम्मान लिखूँ ?

बाबूल का घर छोड़, तुम्हारे घर रहने आती है।
डोली जिसकी उठती है, फिर अर्थी में ही जाती है।
पाई-पाई जोड़कर तुम्हारे घर को बनाती है।
हाथ उठाते हो जिस पर, शर्म तुमको नहीं आती हैं ?

भूख उसे भी है, पर खाना उसने खाया नहीं।
पता लगाओ देखो, शायद पति घर पर आया नहीं।
भाग मनाओ फिर भी, तुमको छोड़कर नहीं वो जाती है।
हाथ उठाते हो जिस पर, शर्म तुमको नहीं आती हैं ?

कभी नशे में, कभी सनक तो, कभी भरे जज्बातों में।
सहते-सहते छाले पड़ गए, मेहंदी वाले हाथों में।
एक तुम्हारी चाहत में, हर दुःख को वही भुलाती है।
हाथ उठाते हो जिस पर, शर्म तुमको नहीं आती हैं ?

उस पर तुम्हारा अधिकार पूरा है, लेकिन तुम्हारा **'He'** बिना **'She'** अधूरा है।
लेकिन तुमने तो यह ठान लिया, तुम्हारा खजाना पराया धन मान लिया।
इतना सब कुछ वह सहती है, फिर भी मुस्कुराती है।
हाथ उठाते हो जिस पर, शर्म तुमको नहीं आती हैं ?

'वो ख्वाहिश'

भूपेन्द्र नरवाल
वाणिज्य विभाग

'वो ख्वाहिश' अनजानी, अनकही, अनसुनी, चुलबुली,
मेरे ज़हन में सुबहो-शाम महकती-सी वो ख्वाहिश.....
हदों से निकलती हवाओं में चलती, दिलों में पलती अलबेली-सी वो ख्वाहिश.....
उम्र के हर पड़ाव में बेचैन, हर दर्द में मरहम-सी वो ख्वाहिश.....
जुबां में अटकी हुई, अधर में लटकी-सी वो ख्वाहिश.....
सौ अंधेरों में भी रोशन होती, अरमानों की सूखी जमीन पर बारिशों-सी वो ख्वाहिश....
किनारों को चूमती लहरों की तरह, कभी भंवर में फंसी कश्ती-सी वो ख्वाहिश....
कभी बैरागी तो कभी बाघी बनती, राख के ढेर में चिंगारी-सी उड़ती वो ख्वाहिश....
पूरी हो या अधूरी हो मेरी आत्मा में बसी है,
कभी ना रूकी जिन्दगी के सफर में साथ-साथ चली हमसफर सी वो ख्वाहिश....

विवेक
120068003148
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

मिट्टी वाले दीये जलाना....

राष्ट्रहित का गला घोंटकर, छेद न करना थाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना, अबकी बार दीवाली में...
देश के धन को देश में रखना, नहीं बहाना नाली में..
मिट्टी वाले दीये जलाना, अबकी बार दीवाली में...

बने जो अपनी मिट्टी से, वो दिये बिकें बाज़ारों में...
छुपी है वैज्ञानिकता अपने, सभी तीज़-त्यौहारों में...
चायनिज़ झालर से आकर्षित, कीट-पतंगे आते हैं...
जबकि दीये में जलकर, बरसाती कीड़े मर जाते हैं...
कार्तिक दीप-दान से बदले, पितृ-दोष खुशहाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना... अबकी बार दीवाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना... अब की बार दिवाली में ...

कार्तिक की अमावस वाली, रात न अबकी काली हो...
दीये बनाने वालों की भी, खुशियों भरी दीवाली हो...
अपने देश का पैसा जाये, अपने भाई की झोली में...
गया जो दुश्मन देश में पैसा, लगेगा रायफ़ल गोली में...
देश की सीमा रहे सुरक्षित, चूक न हो रखवाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना... अबकी बार दीवाली में...
'मिट्टी वाले दीये जलाना..' 'अबकी बार दीवाली में...'

Bhuteshwar

Geography Section

Dr. Tanasa Hooda

Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self. Section Editor is not responsible for it.

GEOGRAPHY

Contents

S.No.	Name	Topic	Page No.
1.	Dr. Tanasa Hooda	हिमखंड के टूटने से मची तबाही	66
2.	Ravi Kumar	हम भूगोल वाले	68
3.	Amit Kumar	आज हम आपके समक्ष जनसंख्या वृद्धि से पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए कुछ जनसंख्या वृद्धि पर कविताएँ शेयर करते हैं	69
4.	Vikas	Cyclone	70
5.	Naveen Kumar	प्रदूषण पर कविता : कुछ तो मानव तुम	70
6.	Ritika	प्रकृति	71
7.	Sanvanshu	How COVID-19 Has Changed the Face of the Natural World	71
8.	Gourav	Global Warming - A Solution	72
9.	Ankit Garg	पहाड़ों को कैसे मापा जाता है	73
10.	Sanjeev Kumar	Environment Issues - Cause of Concern	74
11.	Reena	बाढ़ : एक अभिशाप	75

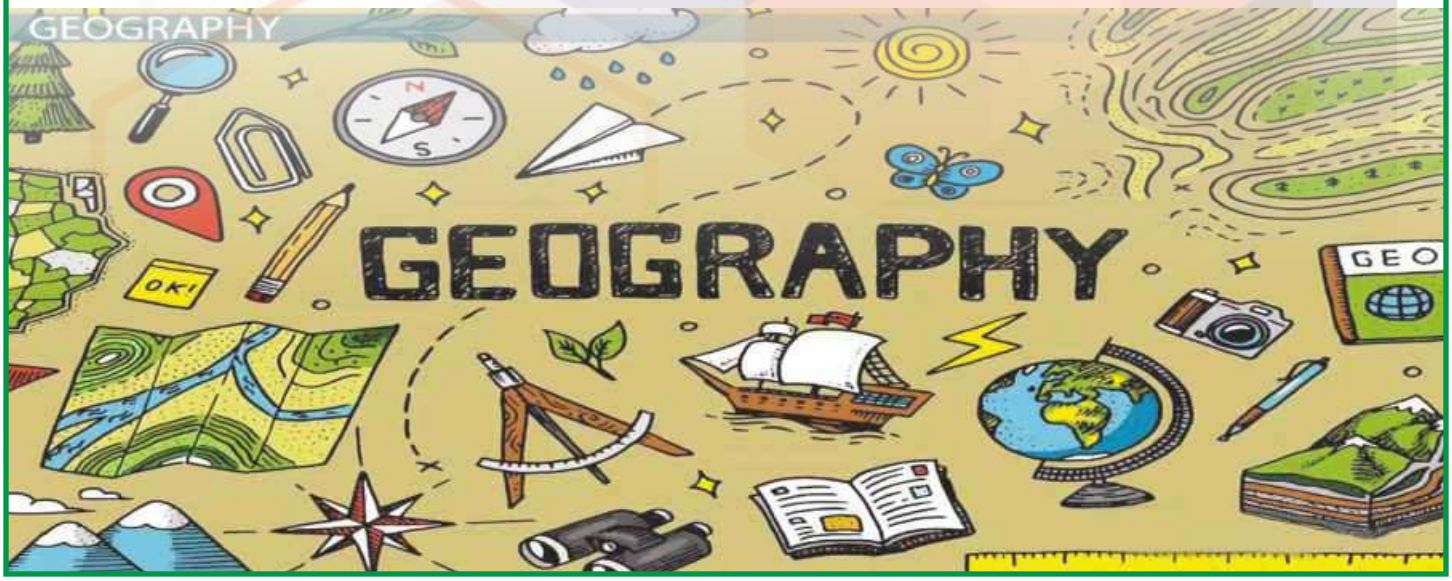

Editorial Message

हिमखंड के टूटने से मची तबाही

केदारनाथ हादसे के सात साल बाद उत्तराखंड में एक बार फिर तबाही का अलार्म बजा है। बर्फ के एक बड़े शिलाखंड के टूटने से आई बाढ़ के कारण चमोली जिले में ऋषिगंगा और धौलीगंगा जल विद्युत परियोजनाओं के लिए बनाए जा रहे बांध टूट गए। नतीजतन करीब 150 लोगों के बहने के साथ इस घटना ने एक बार फिर आधुनिक विकास बनाम प्रलय की चेतावनी दी है। आमतौर से हिमखंड ठंड के मौसम में नहीं टूटते हैं इसलिए इसे प्राकृतिक घटना की बजाय मानव उत्सर्जित आपदा माना जा रहा है। हालांकि इलाके के सचेत लोगों को पहले ही इस तरह के हादसे की आशंका थी, इसलिए 2019 में नंदा देवी संरक्षित क्षेत्र में बिजली के लिए बन रहे बांधों को रोकने के लिए अदालत में याचिका दायर की गयी थी। आखिरकार सात फरवरी 2021 की सुबह यह शंका हकीकत में सामने आ ही गई।

ग्लेशियर जब टूटा तो ऋषिगंगा नदी में मलबे के साथ आया, इसने पहले भारत-चीन सीमा को जोड़ने वाला पुल ध्वस्त किया और फिर विद्युत परियोजना को तबाह कर दिया। इसका 95 प्रतिशत काम पूरा हो चुका था। इसी सयंत्र पर काम करने वाले 150 मजदूर व कर्मचारी बाढ़ में बह गए। 2013 में केदारनाथ हादसे के बाद सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर उत्तराखंड सरकार ने एक समिति बनाई थी, जिसे हिमालय परिक्षेत्र में निर्माणाधीन 80 विद्युत परियोजनाओं की समीक्षा कर रिपोर्ट देनी थी। इसमें ऋषिगंगा परियोजना भी शामिल थी। इस समिति को उन सभी परियोजनाओं का अध्ययन कर परियोजना को आगे बढ़ाने की अनुमति देनी थी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं और घटना घट गई।

कुछ समय पहले ही गोमुख के विशाल हिमखंड का एक हिस्सा टूटकर भागीरथी, यानि गंगा नदी के उद्गम स्थल पर गिरा था। हिमालय के हिमखंडों का इस तरह से टूटना प्रकृति का अशुभ संकेत था। इन टुकड़ों को गोमुख से 18 किलोमीटर दूर गंगोत्री के भागीरथी के तेज प्रवाह में बहते देखा गया।

गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान के वनाधिकारी ने इस हिमखंड के टुकड़ों के चित्रों से इसके टूटने की पुष्टि की थी। हालांकि इस तरह के जल प्रलय का संकेत 37 साल पहले 'उत्तराखंड अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र' के निदेशक एवं भूविज्ञानी एम.पी.एस. विष्ट और वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान एक शोध में दे चुके थे। इस शोध के मुताबिक ऋषिगंगा अधिग्रहण क्षेत्र के आठ से अधिक हिमखंड सामान्य से अधिक रफ्तार से पिघल रहे थे। इससे अधिक जल बहेगा तो हिमखंडों के टूटने की घटनाएं बढ़ना स्वाभाविक है। यही नहीं इन हिमखंडों से बहे पानी का दबाव अकेले ऋषिगंगा पर था। यही जल आगे जाकर धौलीगंगा, विष्णुगंगा, अलकनंदा और भागीरथी गंगा में प्रवाहित होता है। ये सब गंगा की सहायक नदियां हैं। इसलिए यूनेस्कों ने भी इस पूरे क्षेत्र को आरक्षित घोषित किया हुआ है।

यहां 6500 मीटर ऊँची हिमालय की चोटियां हैं। इन खड़े शिखरों पर जो हिमखंड हजारों साल की प्राकृतिक प्रक्रिया के चलते बनने के बाद टूटते हैं तो अत्यंत घातक साबित होते हैं। 1970 से लेकर 2017 तक इस क्षेत्र में जो अध्ययन हुए हैं, उनसे पता चलता है कि आठ हिमखंड बीते 37 वर्ष में 26 वर्ग किलोमीटर से ज्यादा पिघल चुके हैं। मसलन ये 26 किमी व्यास में सिकुड़ गए हैं। यह अध्ययन इसलिए विश्वसनीय है क्योंकि इसे उपग्रह चित्रों के साथ-साथ जमीनी सर्वेक्षण में भी सही पाया गया है। इन हमखंडों का जो आकार 37 साल पहले था, उसमें से 10 प्रतिशत भाग अब तक पिघल चुका है।

ग्लेशियर वैज्ञानिक इन घटना की पृष्ठभूमि में कम बर्फबारी होने के साथ धरती का बढ़ा तामपान मानते हैं। नंदादेवी हिमखंडों के तेजी से पिघलने के पीछे भौगोलिक परिस्थितियां हैं। यहां का तापमान 0.5 डिग्री बढ़ चुका है और इस क्षेत्र में 30 प्रतिशत बारिश भी कम हो रही है। यदि कालांतर में धरती पर गर्मी इसी तरह बढ़ती रही और ग्लेशियर क्षरण होने के साथ टूटते भी रहे तो इनका असर समुद्र का जल स्तर बढ़ने और नदियों के अस्तित्व पर पड़ना तय है। गरमाती पृथ्वी की वजह से हिमखंडों के टूटने का सिलसिला आगे भी जारी रहा तो समुद्र का जल स्तर बढ़ेगा, जिससे कई लघु-द्वीप और समुद्र तटीय शहर डूबने लग जाएंगे।

शताब्दियों से प्राकृतिक रूप मं हिमखंड पिघलकर नदियों की अविरल जलधारा बनते रहे हैं। लेकिन भूमण्डलीकरण के बाद प्राकृतिक संपदा के दोहन पर आधारित जो औद्योगिक विकास हुआ है, उससे उत्सर्जित कार्बन ने इनके पिघलने की तीव्रता को बढ़ा दिया है। एक शताब्दी पूर्व भी हिमखंड पिघलते थे, लेकिन बर्फ गिरने के बाद इनका दायरा निरंतर बढ़ता रहता था। इसलिए गंगा और यमुना जैसी नदियों का प्रवाह बना रहा। किन्तु 1950 के दशक से ही इनका दायरा तीन से चार मीटर प्रति वर्ष घटना शुरू हो गया था। 1990 के बाद यह गति और तेज हो गई, इसके बाद से गंगोत्री के हिमखंड प्रत्येक वर्ष 5 से 20 मीटर की गति से पिघल रहे हैं।

भारतीय हिमालय में कुल 9975 हिमखंड हैं। इनमें 900 उत्तराखंड के क्षेत्र में आते हैं। इन हिमखंडों से ही ज्यादातर नदियां निकली हैं, जो देश की 40 प्रतिशत आबादी को पेय, सिंचाई व आजीविका के अनेक संसाधन उपलब्ध कराती हैं। किन्तु हिमखंडों के पिघलने और टूटने का यही सिलसिला बना रहा तो देश के पास ऐसा कोई उपाय नहीं है कि वह इन नदियों से जीवन-यापन कर रही 50 करोड़ की आबादी को रोजगार व आजीविका के वैकल्पिक संसाधन दे सके।

बढ़ते तापमान के चलते अंटार्कटिका के भी हिमखंड टूट रहे हैं। यूएस नेशनल एंड आइस डाटा सेंटर ने उपग्रह के जरिए जो चित्र हासिल किए हैं, उनसे ज्ञात हुआ है कि 1 जून 2016 तक यहां 11.1 मिलियन वर्ग कि.मी. क्षेत्र में बर्फ थी, जबकि 2015 में यहां औसतन 12.7 मिलियन वर्ग कि.मी. क्षेत्र में बर्फ थी।

रूस के उत्तरी कोस्ट में समुद्री बर्फ लुप्त हो रही है। कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पोलर ओशन फीजिक्स समूह के मुख्य प्राध्यापक पीटर वैडहैम्स का दावा है कि आर्कटिक क्षेत्र के केन्द्रीय भाग और उत्तरी क्षेत्र में बर्फ अगले कुछ सालों में पूरी तरह गायब हो जाएगी। अभी तक आर्कटिक में 900 घन कि.मी. बर्फ पिघल चुकी है। वैज्ञानिक ब्रिटेन और अमेरिका में आ रही बाढ़ों का कारण बर्फ का पिघलना मान रहे हैं। यदि यहां की बर्फ वाकई खत्म हो जाती है तो दुनियाभर में तापमान तेजी से बढ़ जाएगा।

बढ़ते तापमान को रोकना आसान काम नहीं है, बावजूद हम अपने हिमखंडों को टूटने और पिघलने से बचाने के उपाय औद्योगिक गतिविधियों को विराम देकर कर सकते हैं। हिमखंडों के टूटने की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत तो है ही, पहाड़ों को चीरकर बांध और सड़कों के चौड़ीकरण की प्रक्रिया को भी रोकना होगा। अन्यथा हिमखंडों और पहाड़ों का सब्र इसी तरह टूटता रहा तो आपदाओं का सिलसिला भी बना रहेगा।

Dr. Tanasa Hooda
HOD Geography
Editor, Geography Section

हम भूगोल वाले

रवि कुमार
सहायक प्रोफैसर, भूगोल

रूकने की बात नहीं बस चलना जानते हैं हम भूगोल वाले।
धरती से जुड़कर धरती की तरह आगे बढ़ना जानते हैं हम भूगोल वाले।।
केवल नक्शा दिखाना नहीं नक्शा बनाना (Cartography) जानते हैं हम भूगोल वाले,
हम दिखा देते हैं पूरा भारत (Geo of India) किताबों में,
हम घूमा देते हैं पूरा संसार (Geo of World) किताबों में,
धरती से लेकर सूरज तक पहाड़ों से लेकर नीरद तक,
पर्यावरण का पाठ पढ़ाकर जीने के लिए स्वच्छ हवा बनाकर,
हम राह दिखाना जानते हैं।
दुनियां में कहाँ, कब होगी गर्मी, सर्दी और बारिश (Climatology) हम मौसम बताना जानते हैं,
हम अध्ययन अक्षांश और देशान्तरों का करवाना जानते हैं,
दुनियां में कौन, कहाँ किस जगह है ये सिखाना जानते हैं,
हम संसाधनों की बात करते हैं संसाधनों का प्रयोग करना सिखाते हैं,
अगली पीढ़ियों तक कैसे बचाकर रखना है ये पाठ पढ़ाते हैं,
हम बढ़िया किसान (Agriculture Geography) और
व्यापारी (Economic Geography) बनाना जानते हैं।
जनसंख्या नियत्रंण (Population Control) का पाठ पढ़ाकर,
लोगों की गिनती (Census) करके,
स्त्री-पुरूष अनुपात (Sex Ratio) बताना जानते हैं।
ग्लोबल वार्मिंग का पाठ पढ़ाकर बढ़ती गर्मी को कम करवाना जानते हैं,
लोगों के साथ रहकर लोगों को जागरूक बनाना जानते हैं हम भूगोल वाले,
कौन, कहाँ, क्यों, कब, कैसे (Cause-Effect Relationship) सवालों के जवाब देना जानते हैं हम भूगोल वाले,
चीजों को केवल पढ़ना नहीं देखना (Map Reading) सिखाते हैं हम भूगोल वाले,
इसलिए बिना पढ़े भी याद करवाना जानते हैं हम भूगोल वाले।
तकनीकि समावेश्न से (Remote Sensing & GIS),
पहले महीनों में होने वाले क्षेत्रिय अध्ययन और योजना (Regional Studies & Planning),
अब कुछ ही समय में निपटाना जानते हैं, हम भूगोल वाले,
क्षेत्र का अध्ययन करके हम क्षेत्रिय योजना (Regional Planning) बनाना जानते हैं,
रूकने की बात नहीं बस चलना जानते हैं हम भूगोल वाले।
धरती से जुड़कर धरती की तरह आगे बढ़ना जानते हैं हम भूगोल वाले।।

आज हम आपके समक्ष जनसंख्या वृद्धि से पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए कुछ जनसंख्या वृद्धि पर कविताएँ शेयर करते हैं

जनसंख्या एक भयंकर महामारी

बढ़ती हुई ये जनसंख्या भी, है एक भयंकर महामारी,
अगर इसी तरह से ही बढ़ता रहा इसका घनत्व, तो खत्म हो जाएगी धरा से प्रकृति हमारी।
मच जाएगा फिर जग में हाहाकार, करने को पूरा जब बढ़ेंगे लोग अपना अधिकार,
होगा पतन मानवता का तब, और बढ़ेगा विश्व में अनाचार।
हो जाएगा सभ्यता का ह्रास, और रूक जाएगा मनुष्य का विकास,
होगी चारों तरफ बेकारी, नाकामयाबी और विनाश।
और एक दिन फिर, जब होगा सब चरम पर, निश्चित हो जाएगा इस धरा का भी अंत,
न होगी, प्रकृति और ये मानव जाति, और न होगा ये जीवन अनंत।

'हम दो' - 'हमारे एक'

अगर धरा को जनसंख्या वृद्धि से है बचाना, तो अब 'हम दो' पर 'हमारे एक' का वचन निभाना होगा।
बदलनी होगी हमें अपनी सोच, और एक नया समाज बनाना होगा।
करने को जनसंख्या नियंत्रण, परिवार नियोजन को अपनाना होगा।
स्वयं को जागरूक करने के साथ-साथ, समाज में भी जागरूकता अभियान चलाना होगा।
परिवार नियोजन के महत्व को, हर घर में पहुंचाना होगा।
करने जनसंख्या वृद्धि का अभियान ये सफल, हर व्यक्ति को जिम्मेवार बनना होगा।
कर पूरा दायित्व अपना, हर नागरिक को फर्ज निभाना होगा।

स्वस्थ और छोटा परिवार

होगा अगर स्वस्थ और छोटा परिवार, रहेगा तभी वहां खुशियों का संसार।
होगी सबकी हर जरूरत पूरी, नहीं रहेगी किसी की भी कोई इच्छा अधूरी।
मिलेंगे सबको सबके बराबर अधिकार, नहीं होगा जिससे फिर कोई अनाचार।
स्वस्थ होगी सभी की मानसिकताएं और व्यवहार, होंगे तब सबके सुन्दर और सात्विक विचार।
होगा तब ही मनुष्य का विकास, और होगा सफल उसका हर एक प्रयास।
होगा हर मनुष्य, जब अपने काम में समर्पित, तब ही हो सकेगा विश्व में भी, अपने देश का नाम गर्वित।

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि, है एक सामाजिक अभिश्राप,
नहीं हो पा रहा जिसके कारण इस समाज में, एक स्वस्थ मानसिकता का विकास।
क्योंकि दे दी है जिसने इतनी जटिलता, जिससे उलझा है हर मानव,
करने को पूर्ति शारीरिक आवश्यकताओं की, जैसे रोटी कपड़ा और मकान।
कर दिया इसने हर एक मनुष्य को, बस पेट तक ही सीमित,
बढ़ नहीं पा रहा वो इससे ऊपर, जिससे हो गयी है उसकी मानसिकता संकुचित।

अमित कुमार (छात्र संपादक)
2148510028
बी.ए. तृतीय वर्ष (भूगोल ऑनर्ज)

चक्रवात

विकास
2956410082
बी.ए. द्वितीय वर्ष

26 मई 2021 को ओडिशा में आए चक्रवात ने भयानक तबाही मचाई। इस चक्रवात की 130 से 140 कि.मी. प्रति घण्टे की हवा की गति बताई गई थी। इस चक्रवात का असर आस-पास के राज्यों ओडिशा, झारखंड, छतीसगढ़ और बिहार समेत 8 राज्यों में देखा गया। यह चक्रवात ओडिशा के पारादीप से 120 कि.मी. और बालासोर से 180 कि.मी. दूर हैं। यह पिछले छह घंटों से 12 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से बढ़ रहा है।

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रेस कॉन्फ्रैंस में बताया कि तूफान यास के चलते दो घटनाएं हुई, हालिशहर में 40 घर क्षतिग्रस्त हो गए है, दूसरी घटना चिनसराह में हुई, कुछ घर ग्रस्त हैं, पांडुआ में करंट लगने से 2 लोगों की मौत हो गई है, चक्रवात यास के प्रभाव से बचाने के लिए 2 लाख लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया। यास चक्रवात का असर बिहार के दक्षिण जिलों में देखने को मिला, एक-दो जिलों में भारी बारिश की संभावना है।

ओडिशा-बंगाल के इन इलाकों में प्रभावित होने की संभावना :-

भद्रक, केंद्रपारा, जाजपुर, जगतसिंहपुर, मयूरभंज तूफान से ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं। चक्रवात के बचाव से बहुत से इलाके खाली करवाए गए। तूफान के अलर्ट के बाद रेलवे ने दिल्ली से पुरी, भुवनेश्वर जाने वाली सभी ट्रेनों को रद्द कर दिया गया था।

प्रदूषण पर कविता :
कुछ तो जागो मानव तुम

नवीन कुमार
2956410119
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कुछ जागो मानव तुम जग के नहीं तो बहुत पछताओगे।
करते रहे दूषित धरती को यूँ, तो फिर तुम हरियाली कहाँ से पाओगे ?
जागो मानव,
करते रहे जो वायु प्रदूषित,
तो एक पल भी न जी पाओगे।
करते रहे यूँ दूषित वायु,
तो जीवन की एक सांस को भी तरस जाओगे।
कुछ जागो मानव तुम जग के,
नहीं तो बहुत पछताओगे।
किया जो अगर प्रदूषित जल तो
धरती का कण-कण बंजर पाओगे।
बिन जल की बूंदों के, तुम एक पल भी जी न पाओगे।
कुछ जागो मानव तुम नहीं तो बहुत पछताओगे।
रोको ध्वनि प्रदूषण, वरना मानसिक रोगी बनकर रह जाओगे।
जागो मानव, रोको जन प्रदूषण जल्दी ही, वरना तुम बेघर हो जाओगे।
रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या से, फिर तुम कभी न पार पाओगे।
जागो मानव बिन इस धरती के तुम अपने वशंज कहाँ से पाओगे।
कुछ जागो मानव तुम जग के।
नहीं तो बहुत पछताओगे।।

रीतिका
120068063008
बी.ए. प्रथम वर्ष
(भूगोल ऑनर्ज)

प्रकृति

जलमग्न हुई कहीं धरा, कहीं बूंद-बूंद को तरसे धरती
किसने छोड़ा है इसको ? क्यों गुस्से में है प्रकृति ?
किसने घोला विष हवा में ? किसने वृक्षों को काटा ?
क्यों बढ़ा है ताप धरा का ? क्यों धरती जल रही ?
जिम्मेवार है इसका कौन ? क्यों ग्लेशियर पिघल रहे ?
किसने इसका अपमान किया ? कौन मिटा रहा इसकी कलाकृति ?
किसने छेड़ा है इसको ? क्यों गुस्से में है प्रकृति ?
धरती माँ का छलनी कर सीना, प्यास बुझाकर नीर बहाया।
जल स्तर और नैतिकता को, भूतल के नीचे पहुँचाया।
विलुप्त हुये जो जीव धरा से, जिम्मेवार है उसका कौन ?
जुल्म सह-सह कर तेरा, अब नहीं रहेगी प्रकृति मौन।
आने वाले कल का जलवायु परिवर्तन अभी बाकी है।
ट्रेलर है भूकम्प सुनामी, पिक्चर अभी बाकी है।
फिर नहीं कहना कि, क्यों कुदरत की हो गई बेदर्दी।
किसने छेड़ा है इसको ? क्यों गुस्से में है प्रकृति ?

How COVID - 19 Has Changed The Face of the Natural World

Sanvanshu
2956410384
B.A. IInd Year

COVID-19 Some how has affected the environment positively but their exists some negative aspects also.

Pandemic has brought about the significant reductions in climate and water pollution. One study found that daily global Co2 (Carbon dioxide) levels dropped by 17% during the early months of the pandemic.

These reductions reduced levels of the harmful particles present in vehicular emission, decreasing black carbon by 22-46% and ultra fine particle number concentration by 60-80%. Researchers claim that the pandemic situation has been improving air quality, reducing green house gas emissions. It also seems to have reduced the pressure on sensitive tourist destinations, such as heavily visited beaches.

Experts suggests that the unprecedented decrease in air pollutant emissions during the pandemic could reduce seasonal Ozone concentrations.

Travel restrictions and reduced commercial activity improved the health of the world's bodies of water.

On the other hand, reduced ecotourism rates are crippling many organisations worldwide that rely on human visitors to feed and care for their animals.

Meanwhile, the negative affect of corona can be seen, as plastic pollution from improperly disposed of single use. COVID-19 protective gear also seems to be increasing the global plastic pollution problem and causing wildlife deaths, as animals can ingest plastic items or become entangled or trapped in them.

Global Warming - A Solution

The Himalayan glaciers have been the perennial source of water for the rivers such as Ganga, Yamuna, Brahmaputra and Sindhu. Now the disturbing news is that the glaciers are receding due to global warming. This problem of increase in global temperature is real and in India it will cause irredeemable damage in more than one way is it is not addressed. One will find it difficult to believe the contention of some ecologist that the river Ganga would cease to be perennial in six to forty years of time, that the other rivers of Himalayan origin would suffer the same fate.

As a human being I have a custodial relationship to the Mother Earth. Global warming testifies how indifferent and careless we have been in discharging our care taking responsibilities. Now that we see the seriousness of this problem we need to take certain ameliorating measure. A report from the United Nations in the year 2006 reveals the surprising fact that "raising animals for food generate more green house gases than all the cars and trucks in the world combined". Tens of billions of animals farmed for hood release gases such as methane, nitrous-oxide and carbon-dioxide through their massive amount of manure. Animals such as cows and sheep, being ruminant, emit huge amount of methane due to flatulence and burping. "The released methane, the reports says," has 23 times the global warming potential of CO2". It is very alarming to note that the livestock industry alone is responsible for 37% of human induced methane emissions. To make room for these animals to graze, virgin forests are cleared. The livestock industry also needs oats stretches of land to raise mono crops to feed the animals. The CO2 that the trees and plants store escapes back into the air when they are destroyed.

Growing fodder for farmed animals implies heavy use of synthetic fertilisers produced with fossil fuels. While this process emits a huge amount of CO2, fertiliser itself relases nitrous-oxide (3) - a green house gas effect is 296 times more patent than CO2. Alarming though these facts are I see in them a reason for hope. All that the people all the world over have to do is to avoid meat eating. In the absence of demand for meat these is no more needs of for breeding millions of animals for daily slaughter. The reversal of global warming is a certainty.

The meat lobby cannot do anything if the change is from the individuals. A single individual by simply not consuming meat prevents the equivalent of 1.5 tons CO2 emissions in a year. This is more than the one ton of CO2 emission prevented by switching from a large sedan to a small car. One needs to have an honest commitment to save the mother earth who has been relentlessly patient and magnanimous since she began bearing life. There are a number of reasons for one to be a vegetarian. People given to meat eating think that a pure vegetarian diet is optional. But now they have no choice if they are alive to what is happening to this life bearing planet. There is no justification whatsover for one to continue to be a non-vegetarian knowing the devastating consequences of meat eating.

Promotion of vegetarianism does not require any legislation from the state. It does require a change of heart on the part of meat eating individuals anywhere on this planet. I cannot apperal to the tigers and wolves. They are programmed to be what they are. Being endo wed with free will only a human being can make a difference by exercising responsibly his or her choice.

The threatening inundation from the melting ice-bergs in the North Pole is avoidable and the perennial flow of the holy Ganga and Yamuna would continue if only there is a change of heart on the part of every meat eater. If it is too much for one to switch to be a total vegetarian one needs to give up at least red-meat eating. This is the only option one has.

Gourav
20068063007
B.A. Ist Year
(Geo. Hons.)

अंकित गर्ग
120068063013
बी.ए. प्रथम वर्ष
(भूगोल ऑनर्ज)

पहाड़ों को कैसे मापा जाता है

पहाड़ों की ऊँचाई को मापना कठिन कार्य होता है, जिसमें कई पड़ावों से गुजरना पड़ता है। हाल ही में, चीन और नेपाल ने संयुक्त सर्वेक्षण किया, जिसमें दुनियां की सबसे ऊँची पर्वत चोटी 'माऊंट एवरेस्ट' की ऊँचाई 8,848.86 मीटर बताई गई। जिसमें 86 सेंटीमीटर की वृद्धि पाई गई।

ऊँचाई को कैसे मापे :-

ऊँचाई को मापने का मूल सिद्धांत 'त्रिकोणमिति' विधि है। इस विधि में किसी पहाड़ की ऊँचाई मापने के लिए हम जमीन पर किसी बिन्दू को इच्छानुसार चिह्नित करते हैं, जिसे अवलोकन बिन्दू (Point of observation) कहते हैं।

अब दो बातें महत्वपूर्ण हैं :-

क) अवलोकन बिन्दू से पहाड़ की दूरी, और ऊँचाई का कोण, जो पहाड़ की चोटी से अवलोकन दूरी के साथ बनता है।

त्रिकोणमिति (Trignometry) सरल विधि है, जिससे पहाड़ों की ऊँचाई की गणना की जा सकती है, वो भी सटीक। ऐसा जी.पी.एस. (G.P.S.), सैटेलाइट और अन्य आधुनिक तकनीकों के द्वारा संभव है।

सन् 1954 में सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा माऊंट एवरेस्ट की ऊँचाई को 8848 मीटर मापा गया था। जोकि अब तक मात्र 86 सेंटीमीटर ही वृद्धि हो पाई है। वैज्ञानिकों के अनुसार, माऊंट एवरेस्ट की ऊँचाई बहुत धीमी दर से बढ़ रही है, जिसका मुख्य कारण भूकंपीय घटनाओं को माना तथा स्वीकार किया है।

Sanjeev Kumar
2148510020
B.A. Final Year
(Geo. Hons.)

Environment Issues Cause of Concern

Earth is the only planet in the solar system with life. It is home to numerous species. But today, our planet is affected with environmental issues. They are life threatening. Now water, air and soil are polluted. Because of increasing population and irresponsible human behaviour, the environmental conditions are becoming worse and perhaps uninhabitable. Some of the major environmental problems faced by the world are listed below :-

1. **Global Warming :-**
   It is responsible for higher percentage of CO_2 present in earth atmosphere. The earth is becoming more and more warm and temperature is soaring worldwide which needs to be controlled.
2. **Deforestation :-**
   Forests are central to the ecological cycle that supply oxygen, rainfall, moisture etc. But deforestation has drastically changed the ecological balance of the earth.
3. **Ozone Layer Depletion :-**
   Ozone, the protective layer, saves earth from harmful UV rays of the Sun. But, it is depleting and can cause life threatening diseases in the near future.
4. **Pollution :-**
   All sorts of pollution be it water, soil, air or noise need to be minimized. These are very harmful and can effect human beings.
5. **Waste :-**
   The world has progressed a lot but with this progress, the amount of harmful and toxic wastes have increased which is again looming threat to all.
6. **Depletion of Resources :-**
   Resources can be classified into renewable and non-renewable resources. Resource depletion has become a major environmental issue.
7. **Over Population :-**
   Experts Consider Overpopulation to be the worst amongst the other environmental issues with increase in population their needs also increase. Insufficient land, resources, food and other basic necessity may give rise to many other problems and may also contribute to the existing ones.

In order to save the planet, the only way is to go green. We need to save energy to reduce the energy crisis and to save nature. Switch off all electrical appliances when not in use. Try to avoid non-renewable energy sources and concentrate on renewable energy like solar energy, save water. Preserve rain water and stop water pollution. Use recycled things.

Stop using plastic bags and plastic bottles. Use Eco-Friendly things. Control overpopulation. Save trees, avoid using paper. Plant more and more trees. Go green stay healthy !

बाढ़ : एक अभिशाप

रीना
2148520010
बी.ए. तृतीय वर्ष
(भूगोल ऑनर्ज)

कुदरत हमारी सबसे अच्छी साथी होती है। जो हमें इस धरती पर जीवन जीनें के लिए सभी संसाधन उपलब्ध कराती है, प्रकृति हमें सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी, और खाने के लिए खाना और रहने के लिए जमीन देती है। लेकिन जब मनुष्य स्वयं के लाभ हेतु प्रकृति से खिलवाड़ करने लग जाता है, तो उसे भूकम्प, भू-स्खलन, सूखा और बाढ़ जैसी भयंकर आपदाओं का सामना करना पड़ता है, यही कुदरत (प्रकृति) मनुष्य के लिए अभिशाप का रूप धारण कर लेती है।

बाढ़ का एक सामान्य कारण असामान्य रूप से भारी वर्षा है। बाढ़ एक उच्च जल घटना है, जिसमें पानी अपने प्राकृतिक तटबंधों से आस-पास के सभी रिहायसी स्थानों पर भर जाता है, और पूरा स्थान जलमग्न हो जाता है।

''बहा कर ले गया सैलाब सब कुछ,
फकत आँखों की वीरानी बची है''

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात, जिन्हें हरिकेन और टाइफून भी कहा जाता है, इसके साथ मूसलाधार बारिश होती है। **1998** में जब तूफान मिच ने मध्य अमेरिका के पूर्वी तट पर प्रहार किया, तो इसकी बारिश ने व्यापक बाढ़ और विनाशकारी भू-स्खलन का कारण बना। होडंरास, निकारागुआ, अल सल्वाडोर, ग्वाटेमाला और कोस्टा रिका में **1.5** मिलियन से अधिक लोग बेघर हो गए थे और **20,000** से अधिक लोग मारे गए थे लुइसिइना में **2005** में तूफान कैटरीना के दौरान खाड़ी तट पर न्यू ऑरलियन्स के बाढ़ के परिणाम स्वरूप **10** इंच बारिश और तूफान की वृद्धि लेवी प्रणाली विफल हो गई।

हाल ही के वर्तमान समय में **7** फरवरी, **2021** को भारत के उत्तराखंड राज्य के बाहरी गढ़वाल हिमालय में युनेस्कों की विश्व धरोहर स्थल, नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान से शुरू हुई। ऐसा माना जाता है, कि यह भू-स्खलन, हिम-स्खलन था ग्लेशियर झील के बहने के कारण हुआ। इसके कारण चमोली जिले में बाढ़ की स्थिति बन गई। इस आपदा में कम से कम **38** लोगों की मृत्यु हुई, और लगभग **168** लोग लापता हैं।

1931 में बाढ़ के परिणाम-स्वरूप **35** लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई, और भारी बारिश के बाद भुखमरी और बीमारी के कारण चीन की यांग्त्जी नदी अपने किनारों पर बह गई। इतिहास में **3** सबसे घातक बाढ़ अब तक दर्ज की गई हैं। सबसे विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं में से **1887, 1931** और **1938** में चीन में हुआंग है, बाढ़ थी, जिसने सामूहिक रूप से लाखों लोगों की जान ले ली। **2004** में हिन्द महासागर एक घातक सुनामी, पूरे गाँव, जलमग्न द्वीपों को बहा ले गई।

इन्हीं घटनाओं के आधार पर देखा जा सकता है कि मनुष्य द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने पर यह एक भयंकर अभिशाप का रूप धारण कर लेती है।

''कुदरत की बेबसी में फंस गया इंसान,
कहीं बाढ़, कहीं सूखे में मर गया इंसान''।।

Bhuteshwar

Women Cell Section

Ms. Suman

Editor

**All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.**

Women Cell

Message

''सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान''
- श्री गुरु नानक देव जी
(जब जिसने राजा - महाराजाओं को जन्म दिया
तो उसे क्यों बुरा-भला कहा जाता है)

महिला जिसे हम माँ बहन, बेटी, बहू आदि जैसे अनेक नामों से जानते हैं, भगवान की सबसे सुन्दर रचना है। नारी प्रकृति को चलाने में अग्रिम भूमिका निभाती है। आज के समय में एक परिवार समाज और देश की प्रगति में नारी का सराहनीय योगदान है। क्या-क्या नहीं कर रही है नारी आज !! नारी हर क्षेत्र में उन्नति कर रही है। शिक्षा से लेकर चिकित्सा तक या फिर हवाई जहाज उड़ाने से लेकर आर्मी फोर्स ही क्यों हो, हर क्षेत्र में नारी पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। इसलिए हर पुरुष जाति का कर्तव्य है कि वह नारी का सम्मान करे और उसे कमजोर ना समझे। पर वास्तव में क्या ऐसा होता है ? दया और ममता की मूर्ति स्त्री सदियों से ही पुरुषों के वर्चस्व के आगे दबी हुई दिखाई देती है। आज हमारे देश की आधी बेटियाँ 18 साल की उमर से पहले ही ब्याह दी जाती हैं। देश में हर घण्टे में दहेज हत्या होती है। 100 में से 40 औरतें घरेलु हिंसा का शिकार है। आज भी लड़की के जन्म पर घर में उदासी छा जाती है।

क्या यही वह सम्मान है जिसकी वो हकदार है। कहते हैं किसी देश की उन्नति का अंदाजा वहाँ रहने वाली महिलाओं की स्थिति से लगाया जा सकता है। हमारे देश की महिलाओं की स्थिति जग जाहिर है। कितनी बार यहाँ स्त्री को पुरुषों के आगे भेदभाव, हिंसा, बुरे बर्ताव का सामना करना पड़ता है। नारी सम्मान, सुरक्षा और अधिकारों के बारे में काफी कुछ बोला और सुना गया है। लेकिन सदियों से नारी के प्रति इस मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया। पुरुष समाज का एक वर्ग आज भी नारी को अपने सामने तुच्छ मानता है। पर वह यह नहीं जानता कि यदि नारी वर्तमान के साथ भविष्य को भी अपने हाथ में ले ले तो वह अपनी शक्ति से बिजली की तड़प को भी लज्जित कर सकती है।

नारी पुरुष की गुलाम नहीं बल्कि सहधर्मिनी मित्र, अर्धांगिनी है। कुछ लोग कहते हैं वि नारी का घर नहीं होता पर मेरा मानना हैं कि नारी के बिना कोई घर-घर नहीं बनता। नारी सम्मान एक सभ्य परिवार, समाज और देश की पहचान है। अब यह जिम्मा आज की युवा पीढ़ी को उठाना होगा क्योंकि उसे ही आगे चलकर कल के समाज का निर्माण करना है। उसे ही उन विषैली परम्पराओं को, जिसमें नारी को तुच्छ माना जाता है, उखाड़ कर फेंकना होगा ताकि कल ऐसे समाज का निर्माण हो सके जिसमें स्त्री और पुरुष प्रतिद्वन्दी ना होकर एक साथ मिलकर सुनहरे समाज का निर्माण करें।

शुभकामनाओं सहित !

श्रीमती सुमन
सहायक प्रोफेसर
कम्प्यूटर विज्ञान

महिला-अनुभाग

Contents

S. No.	Name	TOPIC	Page
1.	नीतिका	Importance of Women's Education	80
2.	मनीषा चहल	Female Foeticide	81
3.	मीना	Beti Bachao Beti Padhao	82
4.	अदिति जैन	स्मार्ट स्त्री स्मार्ट राष्ट्र	84
5.	मीनू गोयत	All She Wants	85
6.	विनीती	Girls Power (Empowerment)	85
7.	अंजू	Save Girl Child	86
8.	वंशिका	Women Empowerment	86

Nitika
PGDCA
220068192038

Importance of Women's Education.

"You educate a man;
you educate a man.
You educate a woman;
you educate a generation."

Women play a vital role in the all round. progress of a country. Without educating the women f of the country country, we can't hope! for a developed nation.

Women are the real builders of happy homes. Educated Women can take care of their families in a better way. It is said that if we educate a man, we educate a man only, but if we educate a women we educate the whole family. This highlights the importance of women education. It is a fact, the women are the first teacher's of their children receive the very first lessons. Hence if mother's are well educated, they can play an important role in shaping their children.

Women's education is a must for a good Society. Society runs on two wheels (men & women), both the wheels must be equally strong to run smoothly. It is a good sign that today's women are not considered a weaker sex. As a result we see women working in almost every field. Improving educational opportunities for girls and women helps them to develop skill. These skills allow them to make decision & influence community change in important areas.

Women's role can not be ignored in the progress of a country. For a country women's education is as important as that of men's.

Women's education leads directly to improved family health, economic growth for the family and society. Women's education also lowers rates of child mortality & malnutrition. Hence women's education is very important.

"Until have get equality in education, we won't have an equal society."

Female Foeticide

Manisha Chahal
3059920030
B.Sc. IInd Year
(Medical)

"Gender is blunder Save the girl child wonder."

What is Female Foeticide :-

Female Foeticide is a medical procedure where a female fetus is aborted in the womb of the pregnant woman after identifying the gender through ultrasound. This act is illegal in India.

Cause of Female Foeticide :-

1. Some people believe that boys are an investment but girls are economic drainers and put family under his burden of debts.
2. They think that boys would grow that family's lineage and would secure family's future.
3. Girls are considered as a liability a they need to marriage off with enormous dowry.
4. Some believed that in a male domine society it is easy to bring a boy since the safety of a female is a big issue and so rising girls up involves troubles.
5. Poverty, illiteracy and insecurity play a major role.
6. Some backward families believe that having a boy is going to uplift the status of the family.

Impacts :-

As per the report of ministry of public health, it is estimated that despite the attempts to reduce the fluctuation between the birth of boys and girls in 2020 there will be 4.3 million boys (men) than the women which might have huge repercussions.

Measurement to control :-

1. Indian government provide education & media ad etc. and shouldered efforts to prevent its meetings and conferences.
2. Campaign of 'Beti Bachao' is raised by PM Modi to increase awareness.
3. Dowry system, one of the main cause of female foeticide should be abolished from society.
4. Some policies provide scholarships and cash credits to girls.

Conclusion :-

Though a lot of awareness, consideration, understanding can bring a shift in our beliefs and perceptions of society to give equal place to the girl child.

Beti Bachao Beti Padhao

Meena
120068011028
B.Sc.
(Computer Science)

Prime Minister Narendra Modi has inaugurated a scheme for girls called Beti Bachao Beti Padhao. It is also called save girls and educate the girls child. This program was started on the 22nd of January 2015 at Panipat. This scheme was initiated in firstly in Haryana because this state has as very low female sex ratio.

Aim of Beti Bachao Beti Padhao :-

The aim of Beti Bachao Beti Padhao scheme is to stop the drop in girls child sex ratio. It will encourage women's empowerment in order to improve women status in the country.

Conclusion :-

Beti Bachao Beti Padhao scheme is an initiative by the government of India to address the issues revolving around girl children in India. People now have a serious impact to work for girls upliftment in society. Today girls are affording high education save the girl child and ensure her safety with a view to strengthen and create a better India. Make girls educated make future bright.

Rising against crime against women :-

In our society, there are still a hugs number of illiterate who think having a females child seems like burden to the family as they do not contribute anything back in return.

Lots of abortion cases against girls have resulted in the decline of the female population with this, crime and sex abuse are on a constant rise. Keeping this in mind, the Beti Bachao Beti Padhao scheme has been initiated to stop such crimes.

Low Sex Ratio :-

According to the data of census in 2001, there were 933 girls every thousand boys for 0 to 6 years. In the year 2011 this number dropped to approximently 918 girls per thousand boys. In 2012 as per report presented by UNICEF, Amongst 195 countries, India can in the 41st rank. To maintain the ratio in 2015 Prime Minister Narendra Modi invited the Beti Bachao Beti Padhao scheme and decline that abortion and died girls and doing marry before 18 year age and stop girls to education are crimes. Ministerial bodies are respossible for the scheme like Child & development Ministry Health & Family Welfare Ministry etc.

Actually humans are on earth is not possible without the equal participation of Men and Women. But in actual one woman is enemy of other woman they don't think that she is like you.

Function of Beti Bachao Beti Padhao Scheme :-

The scheme functions through the three Ministers of the government of India - Ministry of Women and Child Development, Ministry of Health and Family Welfare and Ministry of Human Resource Development.

These Ministers tend to work in close coordination together with district level staff of Anganwadi Cruler Child Care Center and other departments. 100 districts across India, with poor sex ratio.

Through the Anganwadi government provide food and some fund for girls. They work in close coordination with villagers and advise them from time to time on scheme of government. Anganwadi workers also keep a record of pregnancy in the village Ministry of Health and Family Welfare keeps a record of the entire girls child. The government also ensures that every girls child reaches school and get equal education rights as the boys. Due to all this today girls are save and well educated.

अदिति जैन
220068192039
पीजीडीसीए

स्मार्ट स्त्री स्मार्ट राष्ट्र

हमारा देश प्रतिदिन विकास की नई ऊँचाई छू रहा है और उसमें सबसे बड़ा योगदान हमारे देश की स्त्रियों का है। आज की स्त्री बढ़-चढ़कर हर क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। स्त्रायों की भक्ति, शक्ति और युक्ति हमेशा पुरूषों से आगे रही है। आज ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां स्त्रियों ने अपना वर्चस्व न दिखाया हो, मीराबाई चानू टोक्यो ओलंपिक में पहला पदक जीतने वाली एक स्त्री ही है। समय अब बदल रहा है, ऐसे में हमें भी अपनी सोच को विकसित करना चाहिए।

आज का युग कम्प्यूटर (इंटरनेट) का युग है। हर रोज नई-नई टैक्नोलजियां आ रही हैं। देश डिजिटल हो रहे हं। एक टच से सब काम हो जाते हैं। खरीददारी से लेकर देश की बड़ी-बड़ी सम्मेलन हो जाते हैं। आज के समय में सब संभव है। लोग, देश एक दूसरे के और करीब आ गए हैं, और इस क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान मानने लायक है।

इसकी शुरूआत हुई आगस्तय एडा किंग नोएल लबलेस की काउन्टैंस से (10 दिसम्बर 1815-27 नवम्बर, 1852) रही। वह एक अंग्रेज गणितज्ञ तथा लेखक थी। उन्होंने चार्ल्स बैबेज द्वारा प्रस्तावित यांत्रिक जनरल-परपस कम्प्यूटर (एनालिटिकल इंजन) पर काम किया और पहले यह समझा कि यह मशीन 'शुद्ध गणना' के साथ-साथ बहुत कुछ और भी कर सकती है। उन्होंने इस प्रकार की मशीन पर चलने वाली प्रथम कलन विधि (अल्गाशिया) का भी निर्माण किया। इसी कारण माना जाता है कि एडा ही पहली व्यक्ति थी। जिसने 'कम्प्यूटिंग मशीन' की पूरी क्षमता को समझा और ये भी माना जाता है कि वे दुनियां की पहली प्रोग्रामर थी। सिर्फ ये नहीं ग्रेस हॉपर मार्गरेट हैमिल्टन जैसी औरतों ने विश्व में अपने नाम अगणनीत खिताब अपने नाम किये।

हिन्दूस्तान में भी ऐसी स्त्रियां हैं जिन्होंने अकेले अपने बल पर देश का नाम रोशन किया और कर रही हैं। शंकुतला देवा जो कि मानव कम्प्यूटर के नाम से जानी जाती हैं। इसका जीता जागता उदाहरण हैं।

किन्तु इस क्षेत्र में भारत को अभी काफी काम करने की जरूरत है। कम्प्यूटर और स्त्रियों की शिक्षा पर सरकार ने कई कदम उठाये पर नतीजा उतना नहीं। अगर हमारे देश को एक नई ऊँचाई पर ले जाने है, तो स्त्री सशक्तिकरण पर जोर देना होगा और उसके लिए कम्प्यूटर का ज्ञान होना आवश्यक है।

आज का समय :- आज के समय में कम्प्यूटर (इंटरनेट) हमारी जरूरत बन गया है। दुनियां 3G, 4G और 5G की स्पीड से आगे बढ़ रही है।

ऐसे में हमारे लिए भी जरूरी है, हम भी पूरी ताकत से दुनियां के साथ कदम से कदम मिलाकर चले। महिलाओं के कम्प्यूटर ज्ञान के लिए कई कदम उठाये जाने बहुत आवश्यक हैं। अगर हम सब मिल-जुलकर इस क्षेत्र में काम करें तो दुनियां का कुछ देश हमें विकसित होने से नहीं रोक पाएगा।

कम्प्यूटर की शिक्षा के कदम :- कम्प्यूटर की शिक्षा को स्कूल से प्रारंभ करना चाहिए, नए कम्प्यूटर केन्द्र बनाने चाहिए जो मुफ्त में कम्प्यूटर के बारे में जागरूकता फैलानी चाहिए। कम्प्यूटर आज हर क्षेत्र में उपयोग होता है, इससे काम जल्दी व कम समय में हो जाता है। देश, दुनियां की हर खबर हम घर बैठे जान सकते हैं और अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

देश के उज्जवल भविष्य के लिए और आने वाली पीढ़ी के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

एक स्त्री की शिक्षा :- एक स्त्री की शिक्षा से, परिवार, समाज और देश का भी नाम रोशन होता है। स्त्री की शिक्षा से दुनियां शिक्षित बनती है, इसलिए कम्प्यूटर का ज्ञान हमारी स्त्रियों के लिए भी बेहद जरूरी है।

घर की स्त्री स्मार्ट होगी, तो देश की आने वाली पीढ़ी भी स्मार्ट बनेगी। आओ मिल-जुलकर नया, मजबूत और डिजिटल भारत बनायें।

Meenu Goyat
220068152038
M.A. Ist Year

All She Wants

She will fly, she will shine
Don't her wings before time.
Give her a chance to try
You are stopping her, she isn't shy
She plays so many roles
She done want to leave her goals
Responsibilities will be throughout life,
Sometimes of a daughter or sometimes of a wife,
There are already so many challenges for her
She is working is respect
To rationise your intellect
I hope, things would change
As a whole new ball game
Write a safe society
Make it happen, Almighty !!

Girls Power (Empowerment)

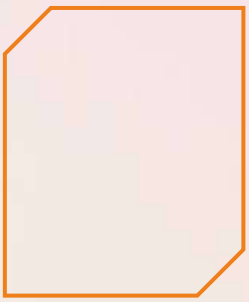

Viniti
3059920075
B.Sc. IInd Year
(Medical)

Girls power refers to the activities to improve social, economic and political status of girl in the world.

Girls power begins with the act of considering girls equal to boys. Most girls grow up to believe that they are inferior to boys thus surrender before the regressive and patriarchal structure of the society.

Young girls must be taught that they are no less than boys and can achieve anything if they are determined to do so.

Education is a key prospect of this movement. Following this, the Government of India has passed the Right to Education below the age of 14 is entitled to free and compulsory education.

Actually, girls are already empowered they are strong and equal to boys and what we need is to reform the society that makes them feel weak.

Empowering then involves encouraging them to be financially, culturally and socially independent.

Anju
120068002408
B.A. Ist Year

Save Girl Child

Girls are equally as important as boys in the society to maintain the social equilibrium. Few years age, there was huge reduction in the number of women in comparison to the man.

It was so because of the increasing crimes against women such as female feticide, dowry deaths, rape, poverty, illiteracy, gender discrimination and many more to equalize the number of women in the society.

It is very necessary to aware people greatly about the save girl child. Government of India has taken some positive steps regarding save girl child such as a protection of women from domestic violence Act 2005 ban of female infanticide immoral traffic Act, Proper education gender equality etc.

Women Empowerment

Vashakha
120068002234
B.A. Ist Year

God as gifted women with compassion, tender-heartedness, caring nature, concern for others. These are very positive signs which imply that women can be leaders. Though some women to be in limelight, they need to be empowered. Razia Sultana, Rani of Jhansi, Sarojini Naidu and Indira Gandhi are motivation example of women empowerment.

Earlier, most women were able to demonstrate the leadership qualities only on their home fronts, as in Indian Society man has always been taken by him. According to the 2001 Census the percentage of female literacy in the country is 54% up from 9% in 1951. But we should not forget that history in a witness to the women who have in the past demonstrated unique leadership capabilities. The best definition of women empowerment refers to educating women and helping them build an identity of their own.

A women must be entitled to pursue what she loves and develop into a fully functioning human. We need women empowerment to bring about a change in the patriarchal construct of society and improve the status of women who have been oppressed throughout their lives.

Bhuteshwar

Jan Sanchar Department

Shiv Kumar

Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.

Contents

S.No.	Name	Topic	Page No.
1.	आकाश	समाचार-पत्र का महत्व	89
2.	सुमित	टेलिविजन का महत्व	89
3.	पल्लवी	वर्तमान शिक्षा प्रणाली	90
4.	शुभम्	वॉक्स पोप	91
5.	सोनिया	टेलिविजन	92
6.	वाजिदा	मोबाईल	92
7.	रीतू	फोटोग्राफी का परिचय	93
8.	शुभम्	मेरा राजस्थान का यात्रा वृतांत	94
9.	हिमांशु	मिडिया के सकारात्मक व नकारात्मक पहलु दैनिक जीवन में	95
10.	पूनम	न्यूजपेपर	97

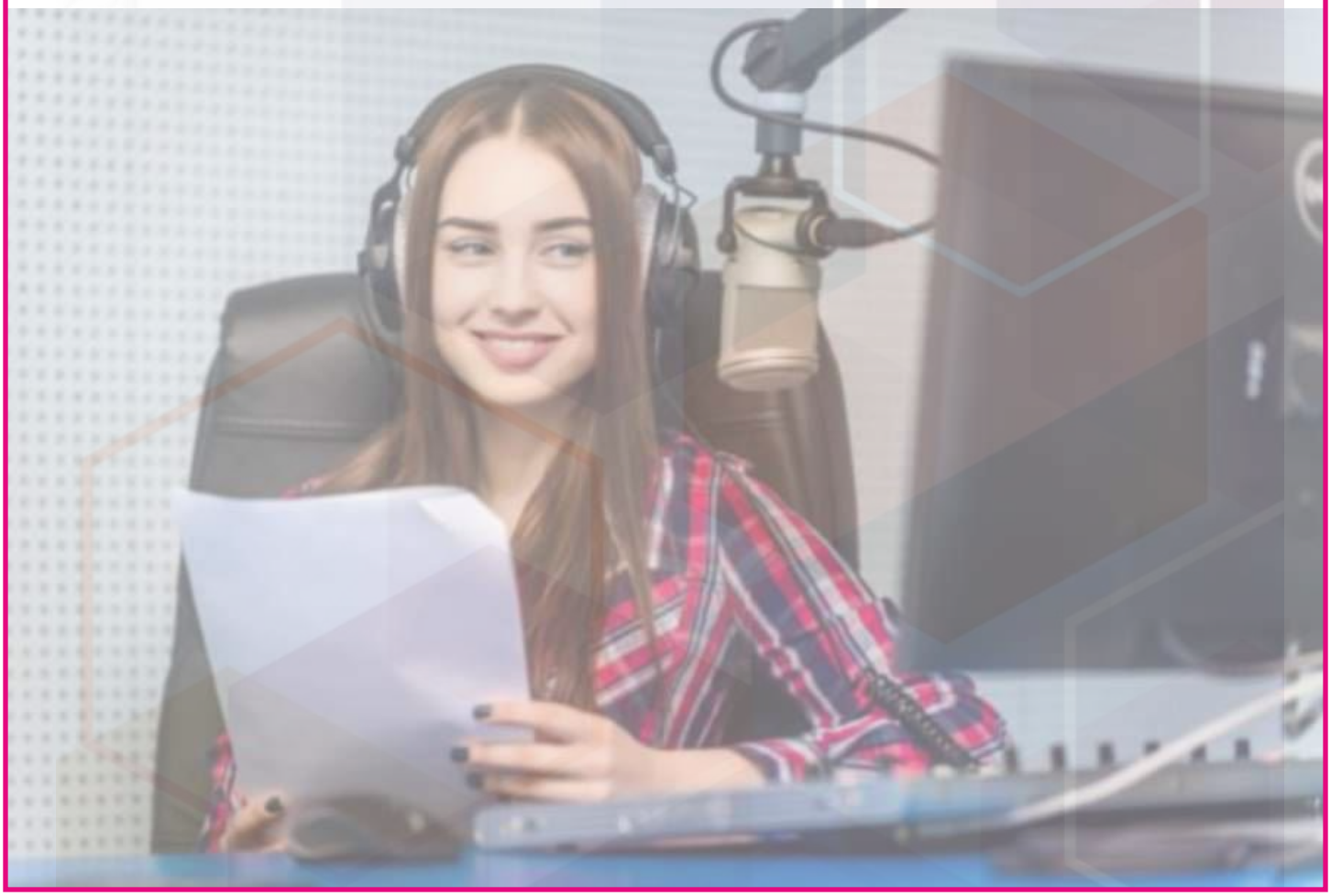

आकाश
120068002463
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

समाचार-पत्र का महत्त्व

अगर हम सामचार-पत्र के बारे में ऐसा कहें कि यह हमारे सुबह की पहली जरूरत है, तो यह गलत नहीं होगा। हममें से कुछ लोग तो ऐसे हैं, जिन्हें बिना समाचार-पत्र पढ़े सुबह की चाय पीना भी पसंद नहीं। याद कीजिये दीपावली और होली का दूसरा दिन जब समाचार-पत्र की अनुपस्थिति में हमारी सूनि-सूनि सी होती है, साल में यही दो-तीन दिन होते हैं, जब हमें सुबह समाचार-पत्र प्राप्त नहीं होता, अन्यथा अन्य सभी दिन हर सुबह बहुत ही अनुशासित ढंग से हमें हमारा समाचार-पत्र प्राप्त होता है। चाहे वह बारिश भरी रात हो या ठंड से भरी सुबह हमें हमारा समाचार-पत्र रोज की ताजा खबरों के साथ अपने घर की दहलीज पर मिल ही जाता है।

आज हम घर बैठे दुनिया के हर देश हर कोने की जानकारी समाचार-पत्र में पढ़ सकते हैं। आज-कल पाठक की सुविधा का ध्यान रखते हुए हर भाषा में समाचार-पत्र उपलब्ध है, जिसमें खेल-कूद, बिजनेस, राजनीति, शासन-प्रशासन आदि कई सारी जानकारी इसमें पाठक को उपलब्ध कराई जाती है।

आजकल कई समाचार-पत्रों का प्रकाशन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है, जिससे देश-विदेश की जानकारी मिलती है।

अनेक प्रकार के ऐसे समाचार-पत्र हैं जिनका हमारे जीवन में अनेक महत्व है। जैसे :- हरिभूमि, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी आदि।

टेलीविजन का महत्त्व

सुमित
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

टेलिविजन के आविष्कार को हम 'विज्ञान का चमत्कार' या 'विज्ञान की अनोखी देन' कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। टेलिविजन के माध्यम से हमें देश, दुनियां की हर खबर पलक झपकते ही मिल जाती है। विज्ञान के इस आविष्कार ने लोगों का मनोरंजन करने, उन्हें ज्ञान-विज्ञान की बातों को सिखाने तथा दुनिया भर की खबरें व जानकारी देने की जिम्मेदारी बखूबी उठाई है।

टेलिविजन का आविष्कार स्कॉटिश इंजीनियर और अन्वेषक जॉन लॉगी बेयर्ड **(John Logie Baird)** ने किया था। टेलिविजन का महत्त्व इसी बात से समझा जा सकता है कि आज हर घर में कुछ हो ना हो लेकिन टेलिविजन अवश्य होता है। इसका स्थान हर घर में एक सदस्य के जैसे ही है। मजे की बात यह है कि इस टेलिविजन में हर वर्ग की रूचि के अनुसार कुछ ना कुछ कार्यक्रम अवश्य मिल जाएगा।

जहाँ एक ओर बुजुर्ग लोगों के लिए धार्मिक प्रोग्राम या भजनों के कार्यक्रम आते हैं। वहीं दूसरी ओर युवा वर्ग के लिए उनके मनपसंद के कार्यक्रम मिल जाएंगे। महिलाओं के लिए उनकी रूचि के अनुसार कई सारे सीरियल दिनभर चलते रहते हैं। इसी तरह बच्चों के लिए कार्टून चैनलों की भरमार है।

यानि एक टेलिविजन घर के हर सदस्य की 'अलादीन का चिराग' की तरह इच्छाएं पूरी करता है। शुरू-शुरू में टेलिविजन सिर्फ **'Black and White'** होते थे। लेकिन अब तो टेलिविजन की दुनिया पूरी तरह से रंगीन है। पहले सिर्फ रेडियो ही हुआ करते थे। लेकिन टेलिविजन के आने के बाद बहुत बदलाव आया। क्योंकि रेडियो व टेलिविजन में बहुत बड़ा अन्तर है। रेडियो पर केवल आवाज ही सुनाई देती है। जबकि टेलिविजन में हम आवाज के साथ-साथ दृश्य भी देख सकते हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली

पल्लवी
120068002431
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली परतंत्रता काल की शिक्षा प्रणाली से सीधे तौर पर जुड़ी है। इसके जन्मदाता लॉर्ड मैकेल थे। जिनका विचार था कि मुझे विश्वास है कि इस शिक्षा प्रणाली से भारत में एक ऐसे शिक्षित वर्ग का जन्म होगा, जो रंग, रक्त से भारतीय होगा परन्तु आचार-विचार, रूचि व मन-मस्तिष्क से अंग्रेज होगा। लेकिन वास्तविक स्थिति यह है कि इस शिक्षा प्रणाली के कारण विद्यार्थियों की मानसिक आत्मिक व शारीरिक शक्तियों का पूर्णतः विकास नहीं हो पाता। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ खामियाँ भी हैं।

भारत में प्राचीनकाल से ही शिक्षा का महत्त्व काफी अधिक है। यहाँ तक की हम यह भी कह सकते हैं कि सर्वप्रथम शिक्षा का उदय व विकास भारत में ही हुआ। प्राचीनकाल से ही भारत शिक्षा का विश्व-विख्यात केन्द्र रहा है। जिनके प्रमाण हमें आज भी मिलते हैं। प्रायः प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरू चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त करते थे। वे ब्रह्मचार्य का पालन करते थे। यही नहीं विदेशों से भी विद्यार्थी प्राचीनकाल में यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आते थे। मुस्लमानों के काल तक आते-आते अरबी फारसी की शिक्षा का प्रसार हुआ। 18-19 शताब्दी तक शिक्षा केवल अमीरों तक ही सिमट कर रही गई। जिसके सबसे ज्यादा प्रभाव स्त्रियों पर पड़े। स्त्री-शिक्षा तो लगभग समाप्त ही हो गई।

वस्तुतः नई शिक्षा प्रणाली सन् 1964-66 के वर्षों में कोठारी आयोग की सिफारिशों के अनुरूप लागू की गई। जिसमें दसवीं कक्षा तक सामान्यतः पाँच विषय जिनमें दो भाषाएँ, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान सम्मिलित हैं। इसके बाद विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार कोई भी कोर्स में प्रशिक्षण ले सकता है।

इस प्रकार वस्तुतः नई शिक्षा प्रणाली रोजगार को सामने रखकर बनाई गई है। प्रायः इस शिक्षा प्रणाली के अनुसार विद्यार्थी कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की ओर भागते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि इस वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ सुधार किए जाएँ ताकि विद्यार्थी अनुशासनहीनता व अराजकतावाद का मार्ग न अपनाएँ। इसलिए यह आवश्यक है स्थान-स्थान पर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी आरम्भ किए जाएँ ताकि शिक्षित बेरोजगारों में कमी आए। शिक्षित लोगों का समाज में मान-सम्मान हो। इसके साथ-साथ इस शिक्षा प्रणाली को सफल बनाने का दायित्व हमारे शिक्षकों पर भी हैं। समय-समय पर शिक्षकों को अत्याधुनिक प्रशिक्षण दिया जाए। समय-समय पर कुछ सेमिनारों का आयोजन भी किया जाए, जिससे विद्यार्थियों को भविष्य निर्माण में सहायता मिल सके। तभी यह शिक्षा प्रणाली सफल हो सकेगी। इन अतीत की शिक्षा नीतियों के पश्चात् देश की शिक्षा नीतियों में परिवर्तन इस प्रकार आज समक्ष हमारे सामने दिखाई देते हैं।

दिन-प्रतिदिन वर्षों के बीतने के पश्चात् शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बदलाव किए गए हैं। उच्च शिक्षा के लिए भी अब सिर्फ एक नियामक होगा। पढ़ाई बीच में छूटने पर पहले की पढ़ाई बेकार नहीं होगी। एक साल की पढ़ाई पूरी होने पर सर्टिफिकेट और दो साल की पढ़ाई पर डिप्लोगा सर्टिफिकेट दिया जाएगा।

नई नीति में एम.फिल खत्म :-

नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद अब छात्र-ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन और उसके बाद सीधे पी.एच.डी. करेंगे। चार साल का ग्रेजुएशन डिग्री प्रोग्राम फिर एम.ए. और उसके बाद बिना एम.फिल. के सीधा पी.एच.डी. कर सकते हैं।

खत्म होंगे UGC, NCTE & AICTE बनेगी एक रेगूलेटरी बॉडी :-

यू.जी.सी., ए.आई.सी.टी.ई. का युग खत्म हो गया है। उच्च शिक्षा सचिव अमीर खरे ने बताया कि उच्च शिक्षा में यू.जी.सी., ए.आई.सी.टी.ई., एन.सी.टी.ई. की जगह एक नियामक होगा। कॉलेजों को स्वायत्ता (ग्रेडेड ओटोनामी) देकर 15 साल में विश्वविद्यालयों से संबद्धता की प्रक्रिया को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा।

कॉलेजों को कॉमन एग्जाम का ऑफर :-

नई शिक्षा नीति के महत्त्व के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए कॉमन एंट्रेंस एग्जाम का ऑफर दिया जाएगा। यह संस्थान के लिए अनिवार्य नहीं होगा। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी यह परीक्षा कराएगी।

स्कूल, कॉलेजों की फीस पर नियंत्रक के लिए तंत्र बनेगा :-

खर ने बताया कि उच्च शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन स्वतः घोषणा के आधार पर मंजूरी मिलेगी। भविष्य में सभी नियम एक समान बनाए जाएंगे। फीस पर नियंत्रण का भी एक तंत्र तैयार किया जाएगा।

विदेशी यूनिवर्सिटी को भारत में कैंपस खोलने की अनुमति और स्कॉलरशिप पोर्टल का विस्तार :-

इससे भारत में स्टूडेंट्स विश्व के बेस्ट इंस्ट्टियूट व यूनिवर्सिटी में एडमिशन ले सकेंगे। इससे उन्हें विदेश नहीं जाना पड़ेगा।

पाँचवीं कक्षा तक के बच्चों की पढ़ाई उनकी मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा में होगी।

कक्षा छह से कौशल विकास - इसके तहत इच्छुक छात्रों को छठी कक्षा के बाद से ही इंटर्नशिप करवाई जाएगी।

निजी और सरकारी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए समान नियम बनाए गए :-

पुरानी नीति के 10+2 के ढांचे में बदलाव करते हुए नई नीति में 5+3+3+4 का ढांचा लागू किया गया है। एम. फिल. खत्म कर दिया गया है और निजी और सरकारी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए समान नियम बनाए गए हैं।

शुभम्
2075110207
बी.ए. तृतीय वर्ष

वॉक्स पोप

वॉक्स पोप वॉक्स पोपुली शब्द का छोटा रूप है। जिसका शाब्दिक अर्थ वॉइस ऑफ पिपल (Voice of People) होता है। यानि जनता की आवाज होता है। इस कार्यक्रम में किसी विषय, मुद्दे या घटनाक्रम पर आम जनता के विचार जानने का प्रयास किया जाता है। यह कार्यक्रम साक्षात्कार से भिन्न होता है। इसमें लोगों से बातचीत की जाती है। इस कार्यक्रम में जिन लोगों से बातचीत की जाती है, उनका पहले से निर्धारण नहीं किया जाता, क्योंकि यह आम जनता की आवाज है। इसमें आम आदमी को अपनी आवाज उठाने का अच्छा असवसर मिलता है। इसमें आम जनमानस को ही शामिल किया जाता है। भारत में वॉक्स पोप की शुरूआत सर्वप्रथम मशहूर एंकर विनोद दुआ ने 1985 में अपने कार्यक्रम जनवाणी के माध्यम से की थी। इस कार्यक्रम में किसी क्षेत्र के विधायक या सांसद को स्टूडियों में बुलाते हैं और उस क्षेत्र की जनता ही राय से रूबरू करवाते हैं।

सोनिया
120068002201
बी.ए. प्रथम वर्ष

टेलीविजन

टेलिविजन एक जनसंचार माध्यम है। यह एक वीडियो माध्यम है। टेलिविजन में सभी कार्यक्रमों को सुना व देखा जाता है। टेलिविजन कार्यक्रम दो प्रकार के होते हैं :-

क) काल्पनिक कार्यक्रम ख) अकाल्पनिक कार्यक्रम

टेलिविजन में आधुनिक समय में बहुत से बदलाव आए हैं। आज के समय में काल्पनिक कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया बहुत तेजी से चल रही है। इन कार्यक्रमों के कारण ही टेलिविजन ने अपने अन्दर बहुत से बदलाव किए हैं।

काल्पनिक कार्यक्रम :- काल्पनिक कार्यक्रम कल्पना व नाटकीयता पर आधारित होते हैं। आधुनिक समय में सभी लोग काल्पनिक कार्यक्रमों में नाटक जैसे नागिन, सी.आई.डी. आदि। एक परिवार में सभी लोगों की रिमोट पर झगड़ा करते हैं, लेकिन रिमोट धारावाहिक चैनल पर आकर टिकता है। काल्पनिकता देखने के बाद हम भी ऐसी लाइफ स्टाईल के बारे में सोचने लगते हैं। लेकिन हम असलियत में ये जिन्दगी नहीं जी पाते हैं। इन कार्यक्रमों में लेखक अपनी लेखन कला, रचनात्मकता से सब का मन मोह लेता है।

धारावाहिक :- धारावाहिक काल्पनिक कार्यक्रमों का प्रसिद्ध प्रारूप है। धारावाहिक अलग-अलग लोग प्रत्येक धारावाहिक में अलग-अलग पात्रों का रोल करते हैं। धारावाहिक लोगों द्वारा अत्याधिक पसंद किया जाता है। रामायण ने भी टेलिविजन पर धारावाहिकों को नई लोकप्रियता प्रदान की है। धारावाहिक हमारी असल जिन्दगी में नए उतार-चढ़ावों को दिखाती है। **90** के दशक के बाद धारावाहिकों के प्रसारण में अधिक तेजी आई थी। आज टेलिविजन पर धारावाहिक चैनलों की भरमार हो गई है।

विज्ञापन :- विज्ञापन में हमें किसी भी फिल्म व धारावाहिक का नाम पहले से ही पता चल जाता है। धारावाहिक का नाम याद रखना ही विज्ञापन की शक्ति है। विज्ञापन किसी उत्पाद को खरीदने के लिए लोगों को उसके प्रति सूचित व जागरूक करता है।

वाजिदा
2956420058
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मोबाईल

भूमिका :- यह मुख्य रूप से वॉयस कॉल के लिए उपयोग किया जाता है। वर्तमान में तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है। आज मोबाइल फोन की मदद से हम दुनियां भर में कहीं भी किसी से भी बात कर सकते हैं।

मोबाइल फोन आज के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। हमारे दिन की शुरूआत मोबाइल से होती है और अंत भी। बड़े तो बड़े, बच्चों को भी इसकी लत लग गई है। आजकल के अभिभावक भी अपनी परेशानी से बचने के लिए छोटे-छोटे बच्चों के हाथ में फोन पकड़ा देते हैं। वहीं से बच्चों को आदत हो जाती है, जोकि बिल्कुल ठीक नहीं है। मोबाइल फोन को ''सेल्युर फोन'' भी कहते हैं। यह मुख्य रूप से वायस कॉल के लिए प्रयोग किया जाता है। फोन ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है। **1973** से पहले मोबाइल टेलिफोन कारों और वाहनों में स्थापित था। मोटोरोला कंपनी थी जिसने हैंड हेल्ड मोबाइल फोन का उत्पादन किया। आज मोबाइल फोन विभिन्न आकृति और आकारों में उपलब्ध विभिन्न तकनीकी फीचर्स है। और कई उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं।

जैसे - वॉयस, कॉलिंग, वीडियो चैटिंग, इंटरनेट ब्राउजिंग, ईमेल, वीडियो गेम और फोटोग्राफी आदि। इसलिए इसे स्मार्ट फोन कहा जाता है। आजकल आदमी के सारे जरूरी काम फोन ने संभाल लिए हैं। व्यस्त से व्यस्त आदमी भी फोन के लिए टाईम निकाल ही लेता है। आजकल फेसबुक, वॉट्स्ऐप ने इतनी आदत खराब कर दी है। हर कोई दो-दो मिनट पर वॉट्स्ऐप चैक करता है।

हानियाँ :- मोबाइल फोन भले ही हमारी जिन्दगी का अभिन्न अंग बन गया हो, परन्तु इससे हानियाँ भी बहुत हैं। मोबाइल को हरदम अपने पास रखना भी सेहत के लिए हानिकारक मोबाइल को वाइब्रेशन मोड पर ज्यादातर रखने से कैंसर का खतरा रहता है। यह मनुष्य के मस्तिष्क की कोशिकाओं को प्रभावित करती है। आजकल बच्चों का ध्यान पढ़ाई की तरफ कम केवल मोबाइल की तरफ ज्यादा हो गया है। फोन पर पाए जाने वाले रोगाणु से जुकाम, खांसी, फ्लू आदि भी लग जाता है।

रीतु
2956420119
बी.ए. द्वितीय वर्ष

फोटोग्राफी का परिचय

फोटोग्राफी का परिचय :-

फोटोग्राफी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसे आप अलग कर देख सकते हैं यहाँ फोटो का अर्थ है प्रकाश तथा 'ग्राफी' शब्द 'ग्राफिक्स' से लिया गया है, जिसका अर्थ रेखांकन है। अतः कैमरे की मदद से किसी दृश्य को अनुकृति बनाने की फोटोग्राफी कहते हैं।

फिल्म फोटोग्राफी :-

फिल्म प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है। अतः जब हम बटन दबाकर इसे प्रकाश के समक्ष लाते हैं तो प्रकाश के प्रभाव का अंकन फिल्म पर हो जाता है। यह फिल्म लैबोरेटरी में प्रसंस्करित होती है। बहुत लंबे समय तक फोटोग्राफ श्वेत-श्याम होती थी, क्योंकि फिल्म रंग का अंकन नहीं कर पाती थी। रंगीन फिल्म बहुत बाद में बनाई गयी।

रसायन संवेदी फिल्म पर पिक्चर निगेटिव बनाने के लिए चित्रांकन। फिल्म को ऑप्टिकल निगेटिव के रूप में प्रसंस्करित किया जाता है।

फिल्म कैमरा बड़ा होता है तथा बैटरी के बिना भी काम कर सकता है। फिल्म कैमरे की तस्वीरों को लैब में प्रिंट करना होता है। फिल्म कैमरे की तस्वीरों को भौतिक रूप से भेजा जा सकता है। जिसमें समय लगता है।

डिजिटल फोटोग्राफी :-

आजकल फोटोग्राफी में एक नई प्रौद्योगिकी का आगमन हुआ है जिसे डिजिटल फोटोग्राफी कहा जाता है। डिजिटल फोटोग्राफी की काफी उपयोगी बनाने के पीछे दो कारण प्रमुख हैं।

डिजिटल फोटोग्राफी कैमरे की मदद से फोटोग्राफी सस्ती हो गयी है तथा इसे करना आसान हो गया है। डिजिटल कैमरे में फोटो को डिजिटल संकेतों के रूप में अंकित कर चिप में संग्रहित करता है।

डिजिटल तस्वीर कैमरे में तुरन्त देखी जा सकती है। प्रसंस्करण तथा निगेटिव की जरूरत नहीं होती। डिजिटल कैमरा बहुत छोटा होता है। इसके लिए बैटरी जरूरी होती है। डिजिटल कैमरे की तस्वीरें कम्प्यूटर पर कॉपी हो सकती हैं तथा प्रिन्ट भी की जा सकती हैं।

कम्प्यूटर पर ई-मेल की सहायता से डिजिटल कैमरा का फोटोग्राफ आसानी से भेजा जा सकता है।

शुभम्
2075110207
बी.ए. तृतीय वर्ष

मेरा राजस्थान का यात्रा वृतांत

कुछ समय पहले मैं राजस्थान में किसी काम के सिलसिले में गया हुआ था। वहाँ पर मेरे अन्दर का रिपोर्टर भी साथ-साथ काम कर रहा था। मैं उनसे उनके रहन-सहन और अतीत के बारे में पूछता तो ऐसी-ऐसी बातें पता चलती कि मैं एक रिपोर्टर की तरह उनसे सवाल पर सवाल पूछता ही चला जाता। वह एक आदिवासी एरिया था जोकि राजस्थान में पिण्डवाड़ा के पास ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की तलहटी में बसा था। वे जो बाते बताते थे वो किसी हिन्दी फिल्म की तरह होती थी।

वे बताते थे कि वे आज भी अपने घरों में तीर-कमान रखते हैं और उन्हें अच्छी तरह से चलाना भी आता है। वे बताते थे कि पहाड़ियों पर लूटेरे रहते हैं जो रात में गाड़ियों को लूट लेते हैं जो वहाँ से गुजरती हैं तथा कभी-कभी उनके गांव में भी आकार लूटमार करते हैं। वे उनकी औरतों को भी उठाकर ले जाते हैं।

इसलिए वे रात में अपने घरों में ताले लगा देते हैं तथा हर घर में हथियार रखते हैं, जैसे - तीर-कमान, बन्दूकें व तलवारें। मुझे उनकी सबसे अच्छी जो बात लगी, वह थी उनकी एकता। यदि बाहर वालों को उनमें से एक से भी झगड़ा होता है तो पूरा गाँव उसकी मदद के लिए आ जाता है।

वे लोग पहाड़ियों को साफ करके खेती के लायक जमीन बनाकर खेती करके अपना गुजारा करते हैं। वे नेकदिल इंसान हैं। उनमें औरतों को पहनावा अजीब है। वे पाँच साल की बच्ची को भी दामन-कुर्ता व चुनरी उढ़ाते हैं। सच में, जो समय मैंने वहाँ बिताया, वह मुझे हमेशा याद रहेगा।

वहाँ के लोग बड़े साफ दिल के थे। वे सबकी मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। उनका खान-पान बहुत सादा है। वहाँ पर मुझे जिस चीज की कमी महसूस हुई, वह थी शिक्षा। वे लोग ज्यादा अशिक्षित हैं। बहुत कम लोग ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं और उनमें से भी काफी कम लोग अच्छी जॉब तक पहुंच पाते हैं। बाकी कम्पनियों में धक्के खाते हैं। अन्यथा थोड़ी बहुत पहाड़ी जमीन को साफ कर, खेती करके अपना पेट भरते हैं।

वे ज्यादातर गाय-बकरियाँ पालते हैं और पहाड़ियों व जंगल मं चराने ले जाते हैं। उनके शादी के रीति-रिवाज भी हमसे काफी भिन्न थे। वे कम उम्र में ही बच्ची की शादी कर देते हैं। मुझे एक लड़का मिला उसकी 15 वर्ष की उम्र में ही शादी हो गई थी। अब वह 20 वर्ष का है और उसके 2 बच्चे हैं।

वहाँ चारों तरफ पहाड़ियों व जंगल के अलावा कुछ भी नहीं है। मिलों दूर तक पहाड़ ही पहाड़। बहुत सारे घर तो पहाड़ों पर भी बने हैं। उन सभी आदिवासियों के घर कच्चे किसी झोपड़े जैसे हैं। वहाँ पर गरीबी बहुत है। बेश्क वे गरीब हैं मगर दिल से वे इतने अमीर हैं कि शायद ही मुझे अपनी जिन्दगी में कोई मिला हो।

हिमांशु
2956410307
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मिडिया के सकारात्मक व नकारात्मक पहलु दैनिक जीवन में

मिडिया एक ऐसा जरिया है, जिसके द्वारा देश-विदेश की जानकारी, डाटा को एक साथ लाखों लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। पहले लोग अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए डांस, गाने, नाटक का प्रयोग करते थे। मिडिया ने जब पहली बार काम शुरू किया तो प्रिंट मिडिया आया, इसका मतलब समाचार-पत्र के इतिहास के बारे में यहाँ जाने की समाचर-पत्रों के द्वारा लोग अपनी बात या महत्वपूर्ण बातें उसमें छापने लगे।

लोकल न्यूज, टीवी सितारे, राजनेता के लिए पेपर मिडिया का कार्य करता है। उसी में इन सभी के बारे में विस्तार से पढ़ा जा सकता है। समय के साथ टीवी में चैनल बढ़े लोगों का रूझान बढ़ा। जिसके साथ इसमें समाचार के लिए अलग से चैनल बना दिए गए, जिसमें 24 घण्टे न्यूज आने लगी। अब गानों के लिए अलग चैनल, फिल्मों के लिए अलग चैनल, धार्मिक चैनल, बच्चों के लिए चैनल, हर भाषा के लिए चैनल आ गए हैं। इस तरह मिडिया का विस्तार होते चला गया व मीडिया नाम का जाल देश, समाज में फैल गया।

भारत में प्रसारित होने वाले चैनल (तथ्य)

न्यूज चैनल	25	(सभी लगभग की श्रेणी में)
मनोरंजन चैनल	25	
फिल्म	20	
म्यूजिक	15	
किड्स	14	
न्यूज (जानकारी)	18	
धार्मिक	29	
स्पोर्ट्स	13	

टीवी में बढ़ते मीडिया का समाज पर अपना ही प्रभाव है, मीडिया का जनजीवन पर दोनों सकारात्मक व नकारात्मक फायदे हैं।

सकारात्मक प्रभाव

क) मीडिया के द्वारा लोगों को शिक्षा मिलती है, वे टीवी, रेडियो के द्वारा स्वास्थ वातावरण, दूसरी अन्य जानकारी का पता लगाते हैं।

ख) मीडिया के द्वारा लोगों को अपना टैलेंट पूरी दुनियां मं सबके सामने रखने का अवसर मिलता है।

ग) रेडियो भी एक अच्छा माध्यम है, इसके द्वारा कहीं पर भी रहकर जानकारी मिल जाती है। आजकल मोबाइल में भी रेडियो (FM) की सुविधा मौजूद है।

घ) टीवी पर ढेरों स्पोर्ट्स चैनल भी आते हैं, इन्हीं की बदौलत हम घर बैठे दूर दराज चल रहे क्रिकेट मैच का मजा ले पाते हैं।

ङ) मीडिया का रूप बढ़ने से बड़े नेता अभिनेता कुछ भी गलत काम करने से डरते हैं, यह इसका सबसे सकारात्मक प्रभाव है।

इसका सबसे प्रभावपूर्ण सकारात्मक उदाहरण के तौर पर इंडियन आइडल शो में पवनदीप जिसने मीडिया के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई एक और उदाहरण के तौर पर राजकीय महाविद्यालय कॉलेज जीन्द में हाल ही में पौधारोपण के कार्य से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संदेश गोचर हुआ।

नकारात्मक पहलु

क) बढ़ते चैनलों के साथ एक चैनल दूसरे का प्रतिद्वंदी हो गया। **TRP** की होड़ में ये प्रोग्राम की **Quality** में ध्यान नहीं देते।

ख) किसी व्यक्ति विशेष के बारे कई बार कुछ गलत अफवाह फैला दी जाती है।

ग) मीडिया ने जातिवाद को बढ़ावा दिया जाता है कई बार चैनल वाले किसी विशेष के लिए ऐसा बोल देते हैं, जिससे उस धर्म के लोग आहत होते हैं।

मीडिया के सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष एक तौल के बराबर हैं, जहाँ इसको समान वजन दिया जाता है, किन्तु इसके सकारात्मक पक्ष का वजन नकारात्मक की और से अधिक है। इसका कारण यह है कि मीडिया समाज के लिए अभिशाप से कहीं अधिक गुणा वरदान के रूप में अग्रसर है।

दैनिक जीवन में

क) मीडिया वालों को ये ध्यान रखना चाहिए कि जो वो दिखा रहे हैं, उसमें सच्चाई हो, झूठी बात, अफवाह को नहीं दिखाना चाहिए।

ख) अपने कार्यक्रम के द्वारा किसी को मानसिक रूप से परेशान नहीं करना चाहिए।

सरकार को मास-मीडिया व सोशल मीडिया पर पैनी नजर रखनी चाहिए, किसी भी गलत बात, बेढ़ंगे प्रोग्राम को नहीं चलाना चाहिए।

पूनम
2956420112
बी.ए. द्वितीय वर्ष

न्यूज पेपर

अखबार हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है पर डिजिटल विकास के बाद इसका महत्व कुछ कम हो गया है, लेकिन जो लोग इसके महत्व को जानते हैं वे अभी भी अखबार खरीद और पढ़ रहे हैं।

समाचार-पत्र का महत्व और लाभ :-

क) शिक्षा में समाचार-पत्र का उपयोग :-

किसी भी देश में समाचार-पत्र और समाचार शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ख) छात्रों के लिए समाचार-पत्र का लाभ :-

छात्रों को समाचार-पत्र पढ़ने से विभिन्न लाभ मिल सकते हैं। अखबार पढ़ने से न केवल छात्रों को अपने विषयों में लाभ पहुंचाता है। बल्कि देश के विभिन्न भागों में सामान्य ज्ञान और संस्कृति का ज्ञान भी प्राप्त किया है।

ग) करियर में समाचार-पत्र का योगदान :-

नौकरी तलाशने वालों को अखबारों में नई नौकरियाँ और रोजगार के मौके मिल सकते हैं। अखबार में नौकरियों के लिए अनेक विज्ञापन छापे जाते हैं।

घ) व्यापारियों के लिए समाचार-पत्र का महत्व :-

भारत में लगभग सभी दुकानदार और कार्यालय अखबार के नियमित उपभोक्ता है। अखबार से दुकानदारों, व्यापार मालिकों को व्यवसायी के लिए आर्थिक प्रवृतियों, बाजार मूल्यों, नए कानूनों और सरकारी नीतियों को समझने में मदद करता है।

ङ) राजनीतिज्ञों के लिए समाचार-पत्र का महत्व :-

राजनेताओं के लिए समाचार-पत्र और समाचार राजनेताओं के लिए जानकारी का प्रमुख स्त्रोत है। अखबार उन्हें नए मुद्दों और विचार-विमर्श करने में मदद करता है।

च) शिक्षकों के लिए समाचार-पत्र का महत्व :-

शिक्षक अखबार पढ़कर कई लोगों का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं। अध्यापक उचित तरीके से छात्रों को ज्ञान दे सकते हैं।

छ) प्रकाशकों के लिए समाचार-पत्र का महत्व :-

अखबार प्रकाशन दुनियां भर में सबसे बड़ा उद्योग है। अखबार के प्रकाशन में विज्ञापन, विपणन, डिजाइन और प्रबंधन में कई लोग शामिल होते हैं। और जनता तक तथ्यों और आंकड़ों के साथ ताजा जानकारी पहुंचा रहे हैं।

निष्कर्ष :-

अखबार सरकार के लिए कर संग्रहण का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। यह कई लोगों के लिए आय और नौकरी का स्त्रोत है। समाचार-पत्र कभी-कभी घटनाओं के सबूत के रूप में काम करता है। देश की जागरूकता बढ़ाने, नागरिकों के ज्ञान की वृद्धि करने में सहायता प्रदान करता है।

Bhuteshwar

National Cadet Corps
NCC

Lt. Pankaj Batra
Editor

**All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.**

Youth Exchange Program (YEP)

Selected NCC cadets participate in Youth Exchange Programme which is a country to country exchange of cadets belonging to NCC/equivalent Govt./youth organization of friendly countries. They participate in NCC activities of the host country to create an increased awareness and appreciation of each other's socio-economic and cultural realities. NCC has a vibrant YEP with 11 countries. The benefits of this programme have been widely acknowledged. Our cadets share a strong bond with out YEP partners. As of now more than 100 cadets proceed abroad on YEP annually.

Cadets Welfare Society

1. The NCC Cadets Welfare Society was established in 1985 is functioning at HQ DGNCC, New Delhi.
2. It is mandatory for anyone joining NCC as a cadet to become a member of this society by paying Rs. 15/- One time) at the time of enrollment.
3. The society provides following benefits :-
   a. Financial assistance/relief. In case of a death during normal NCC activity, the nominee is provided a financial assistance of Rs. 4,50,000/- and in case of death in hight risk activity Rs. 5 lacs. It also takes care of treatment if injury takes place during any NCC activity.
   b. Scholarships. It provides yearly 1000 scholarships of Rs. 6000/- each (one time) based on academic performance. Out of total 1000 cadets coming from rural/disturbed areas.
   c. Best Cadet awards. Based on the performance of a cadet in NCC, there are Best and 2nd Best Cadet awards constituted at the Group HQ level. The Best cadet is given an award of Rs. 3,500/- and 2nd Best Rs. 2,500/-.
4. The details about the above can be obtained from the respective NCC units.

Lt. Pankaj Batra

पर्यावरण सुरक्षा को लेकर किया मंथन

राजकीय पी.जी. कॉलेज में पौधारोपण करते एन.सी.सी. कैडेट्स। (सुनील)

जींद, 4 अगस्त (ललित): राजकीय पी.जी. कॉलेज की एन.सी.सी. यूनिट ने 15वीं हरियाणा बटालियन जींद के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल जयंती घोष के निर्देशानुसार पर्यावरण की सुरक्षा कार्यक्रम को लेकर चर्चा की।

इसमें लैफ्टिनैंट पंकज बत्तरा ने एन.सी.सी. कैडेट्स को बताया कि यदि हमें अपनी और आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ रखना है तो हमें पर्यावरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों पेड़ पौधों, जंगलों, नदियों, वायु मंडल आदि की सुरक्षा करनी होगी ताकि बाढ़, सूखा, भूकंप, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण पाया जा सके और राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुक्सान से बचाया जा सके। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्या शीला दहिया ने एन.सी.सी. कैडेट्स को अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया और मुफ्त पौधों का वितरण किया गया। इस मौके पर पूनम, शर्मिला आदि मौजूद रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने चलाया पर्यावरण सुरक्षा कार्यक्रम

पौधे रोपित करने की तैयारी करते एनसीसी यूनिट के कैडेट्स। • विज्ञप्ति।

जींद (विज्ञप्ति) : राजकीय महाविद्यालय की एनसीसी यूनिट की ओर से 15वीं हरियाणा बटालियन जींद के कमांडिंग आफिसर कर्नल जयंती घोष के निर्देशानुसार पर्यावरण की सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया।

इसमें लेफ्टिनेंट पंकज बत्रा ने एनसीसी कैडेट्स को बताया कि यदि हमें अपनी और आगे आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ रखना है तो हमे पर्यावरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों पेड़ पौधों, जंगलों, नदियों, वायु मंडल इत्यादि की सुरक्षा करनी होगी। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्या शीला दहिया ने एनसीसी कैडेट्स को अधिक से अधिक संख्या मे पेड़ पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर पूनम, शर्मिला भी उपस्थित रहे।

3 लाइन, निकट लाइन और खुली लाइन बनाने का एन.सी.सी. कैडेट्स को दिया प्रशिक्षण

■ राजकीय कालेज में एन.सी.सी. कैडेट्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते एन.सी.सी. कैडेट्स। (सुनील)

जींद, 15 सितम्बर (हिमांशु) : गोहाना रोड स्थित राजकीय कालेज में 15 हरियाणा बटालियन के एन.सी.सी. कैडेट्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बटालियन के कमांडिंग आफिसर कर्नल जयंती घोष के निर्देशन में किया गया। इसमें हवलदार मुकेश और पूर्ण सिंह ने कालेज की महिला और पुरुष दोनों विंग को प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ एन.सी.सी. अधिकारी लैफ्टिनैंट पंकज बत्रा ने किया।

हवलदार मुकेश ने कैडेट्स को 3 लाइन बनाना, निकट लाइन, खुली लाइन, .22 राइफल की कार्य प्रणाली, कलपुर्जों और बाधा प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी और हवलदार पूर्ण सिंह ने कैडेट्स को इंसास राइफल की कार्य प्रणाली, लाइन तोड़, तेज चल, धीरे चल, सेना में सम्मान के तौर पर दिए जाने वाले पदक और शौर्य पुरस्कारों के बारे में बताया।

लैफ्टिनैंट पंकज बत्रा ने बताया कि अभी इस प्रशिक्षण का साप्ताहिक कार्यक्रम नियोजित किया गया है और इसमें कैडेट्स को प्रैक्टिकल और थ्योरी दोनों प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम विद्यार्थियों में देश प्रेम और भक्ति की भावना पैदा करते हैं और युवाओं में देश की जल, थल और वायु सेना में सेवा के लिए शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वस्थ जीवन शैली के लिए फिटनैस की लें प्रतिदिन डोज

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम में हिस्सा लेते एनसीसी यूनिट के सदस्य। (सुनील)

जींद, 13 अगस्त (प्रमोद): राजकीय महाविद्यालय जींद की एन.सी.सी. यूनिट 15 हरियाणा ने आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्या शीला दहिया एवं कमांडिंग ऑफिसर कर्नल जयंती घोष ने की। इस कार्यक्रम के तहत फिट इंडिया फ्रीडम रन 2.0 महाविद्यालय के मेन गेट से पुलिस लाइन ग्राउंड तक आयोजित की गई। इसमें लगभग 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। एनसीसी अधिकारी लैफ्टिनेंट पंकज बत्रा ने स्वस्थ जीवन शैली के लिए फिटनैस की डोज आधा घंटा रोज उद्घोष के साथ सभी विद्यार्थियों से प्रतिदिन आधा घंटा शारीरिक व्यायाम करने का आग्रह किया। इससे वो मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार से मजबूती हासिल कर गंभीर बीमारियों पर होने वाले खर्चे को बचा सकते हैं।

इसके पश्चात एनसीसी कैडेट्स ने जिला प्रशासन द्वारा स्वतंत्रता दिवस की तैयारी हेतु पुलिस ग्राउंड में आयोजित अंतिम परेड रिहर्सल में भाग लेते हुए राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। इस अवसर पर नायब सूबेदार मोतीराम, हवलदार मुकेश, राजबीर मौजूद रहे।

हरिभूमि

रोहतक - जीन्द

30 Aug 2021

पर्यावरण रैली में 85 छात्रों ने लिया भाग, फिट रहने की ली शपथ

साइकिल रैली निकाल स्वास्थ्य, ईंधन और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

फिट इंडिया कार्यक्रम की वर्षगांठ पर साइकिल रन का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▸▸ जींद

राजकीय महाविद्यालय की एनसीसी, एनएसएस एवं खेल विभाग यूनिट द्वारा संयुक्त रूप से उच्चतर शिक्षा निदेशालय और 15 हरियाणा बटालियन के निर्देशानुसार फिट इंडिया कार्यक्रम की दूसरी वर्षगांठ पर साइकिल रन का आयोजन किया गया। इस साइकिल रन को उप प्राचार्य ओमप्रकाश गुप्ता और कर्नल जयंतो घोष ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

रैली राजकीय महाविद्यालय जींद के मेन गेट से पुलिसलाइन को क्रॉस करते हुए गोहना रोड फ्लाइओवर तक निकाली गई और इसमें लगभग 85 विद्यार्थियो और स्टाफ ने भाग लिया। इस दौरान सदस्यों ने साइकिल चला कर पर्यावरण बचाने, ईंधन बचाने, प्रतिदिन व्यायाम करने, फिट रहने का आह्वान करते हुए आमजन को जागरूक किया। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट पंकज बत्रा ने बताया कि पेट्रोल और डीजल की बढ़ती हुई कीमतों, पर्यावरण प्रदूषण, नौजवानों के गिरते स्वास्थ्य आदि समस्याओं के मद्देनजर हमें साइकिल वाहन का 'ज्यादा से 'ज्यादा प्रयोग करना चाहिए। इससे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ बढ़ती महंगाई पर अंकुश लगाने के लिए पेट्रोल और डीजल के अनावश्यक खर्चे और पर्यावरण को भी बचाया जा सके। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हेतु फिटनेस की डोज आधा घंटा रोज व्यायाम का संकल्प दिलाया। इस मौके पर सहायक प्रो. सतीश, कशिश कोचर सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। वहीं चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में भारत सरकार के खेल मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए फिट इंडिया अभियान के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलसचिव डा. राजेश बंसल व डा. जितेंद्र द्वारा तिरंगा झंडा लहरा कर दौड़ को शुरू किया गया इस कार्यक्रम में 200 से अधिक युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम प्रभारी डा. संदीप पुरवा ने कहा कि शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति किसी भी मुश्किल काम को आसानी से कर सकता है।

जींद। साइकिल रैली में भाग लेते हुए छात्र। फोटो : हरिभूमि

पंजाब केसरी

THU,23 SEPTEMBER 2021

EDITION: JIND KESARI, PAGE NO. 2

राजकीय कालेज में एन.सी.सी. कैडेट्स ने मनाया शहीदी दिवस समारोह

जींद, 22 सितम्बर (हिमांशु) : गोहाना रोड स्थित राजकीय कालेज के एन.सी.सी. कैडेट्स ने 15 हरियाणा बटालियन के निर्देशानुसार शहीदी दिवस समारोह मनाया। कार्यक्रम में अमर शहीद राव तुला राम सहित सभी ज्ञात और अज्ञात शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एन.सी.सी. अधिकारी लैफ्टिनैंट पंकज बत्रा ने की। देश की रक्षा के लिए कुर्बानी देने वाले हरियाणा के वीर सपूतों की याद में 2 मिनट का मौन धारण किया गया।

इस अवसर पर सभी कैडेट्स को कारगिल युद्ध के हीरो शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा के जीवन पर आधारित शेरशाह फिल्म दिखाई गई। कारगिल का युद्ध आप्रेशन विजय के तहत 1999 में भारत और पाकिस्तान के बीच 60 दिन तक लड़ा गया और भारत ने 26 जुलाई को विजय हासिल की। एन.सी.सी. अधिकारी पंकज बत्रा ने बताया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों की शहादत विद्यार्थियों के लिए और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रही है। इस अवसर पर सहायक प्रोफैसर पूनम, तनाशा हुड्डा, रचना शर्मा और मुकेश रेढू मौजूद रहे।

राजकीय कालेज में हुए कार्यक्रम में मौजूद एन.सी.सी. कैडेट्स व अधिकारी। (छाया)

'स्वास्थ्य, ईंधन और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए चलाएं साइकिल : गुप्ता'

राजकीय पी.जी. कालेज से साइकिल रन कार्यक्रम में भाग लेते युवा। (सुनील)

जींद, 28 अगस्त (ललित) : राजकीय पी.जी. कालेज की एन.सी.सी., एन.एस.एस. और खेल यूनिट ने संयुक्त रूप से उच्चतर शिक्षा निदेशालय और 15 हरियाणा बटालियन के निर्देशानुसार बोल्ट जिम के सहयोग से फिट इंडिया साइकिल रन कार्यक्रम का आयोजन उप-प्राचार्य ओमप्रकाश गुप्ता और कर्नल जयंतो घोष की अध्यक्षता में किया। यह कार्यक्रम आजादी की 75वीं वर्षगांठ की स्मृति में एक महोत्सव के रूप में मनाया गया।

सर्वप्रथम अध्यक्ष सहित सभी प्रतिभागियों द्वारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए फिटनैस की डोज आधा घंटा रोज व्यायाम का संकल्प लिया गया। इसके बाद उप प्राचार्य द्वारा हरी झंडी दिखा कर तिरंगा साइकिल रैली को रवाना किया गया। रैली का नेतृत्व एन.सी.सी. अधिकारी लैफ्टिनैंट पंकज बतरा एवं खेल विभाग के सहायक प्रोफैसर सतीश मालिक ने किया। रैली राजकीय महाविद्यालय के मेन गेट से पुलिस लाइन को क्रास करते हुए गोहना रोड फ्लाईओवर तक निकाली गई। इसमें लगभग 85 विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों द्वारा साइकिल चलाकर पर्यावरण बचाने का संदेश दिया गया।

कलाकृतियों के माध्यम से एन.सी.सी. कैडेट्स ने दिया संदेश

जींद, 13 सितम्बर (हिमांशु) : राजकीय कालेज में 15 हरियाणा एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा सोमवार को विजय शृंखला और संस्कृतियों का महासंगम कार्यक्रम किया गया। इसमें एन.सी.सी. कैडेट्स ने यूनिटी आफ डायवर्सिटी विषय पर अपनी हस्तशिल्प कलाकृतियां प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम में एन.सी.सी. कैडेट विशाखा, अभिषेक, कीर्ति, रितिक और साहिल ने अपनी कलाकृतियां पेश कीं। इन कलाकृतियों के माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि भिन्न-भिन्न जातियों, वर्गों और धर्मों के होने के बावजूद भी हम सभी भारतीयों का खून एक है और हमें एकजुट होकर अपनी मातृभूमि की सेवा और रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इस मौके पर प्रेम, पूनम, शर्मिला, एन.सी.सी. अधिकारी पंकज बत्रा और पूनम मौजूद रहीं।

कलाकृतियों के माध्यम से संदेश देते एन.सी.सी. कैडेट्स। (सुनील)

'राजकीय कालेज के 2 एन.सी.सी. कैडेट्स का राज्यस्तरीय योग प्रतियोगिता में चयन'

जींद, 23 अगस्त (हिमांशु) : गोहाना रोड स्थित राजकीय कालेज के 2 एन.सी.सी. कैडेट्स का राज्यस्तरीय योग प्रतियोगिता के लिए चयन हो गया है। इन 2 कैडेट्स में अभिषेक और विशाखा शामिल हैं।

कालेज प्राचार्या शीला दहिया, 15 हरियाणा बटालियन के कमांडिंग अधिकारी कर्नल जयंतो घोष, एन.सी.सी. अधिकारी पंकज बत्रा एवं पूनम ने कैडेट्स को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एन.सी.सी. अधिकारी पंकज बत्रा ने बताया कि जिला खेल एवं युवा कार्यक्रम विभाग अधिकारी कार्यालय द्वारा पिछले दिनों योग प्रतियोगिता करवाई गई थी। इस प्रतियोगिता में कालेज से भी एन.सी.सी. कैडेट्स ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। उनमें 2 कैडेट्स ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए राज्यस्तर पर होने वाली प्रतियोगिता में अपनी जगह बना ली है। दोनों कैडेट्स अब सितम्बर माह में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय योग प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। उनकी इस उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं उपलब्धि के लिए वे बधाई के पात्र हैं।

राजकीय कालेज के 2 एन.सी.सी. कैडेट्स, जिनका योग की राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ चयन। (सुनील)

जींद की पुलिस लाइन में जिलास्तरीय समारोह में परेड में एनसीसी महिला वर्ग की टुकड़ी सीनियर अंडर आफिसर किरण के नेतृत्व में प्रथम रही। चित्र में सम्मानित करते डीसी नरेश कुमार। ● जागरण

परेड में राजकीय महाविद्यालय की लड़कियां रहीं प्रथम

पुलिस लाइन ग्राउंड में परेड में 15 हरियाणा बटालियन के नेतृत्व में राजकीय महाविद्यालय से एनसीसी की दो टुकड़ियों ने भाग लिया। प्रत्येक टुकड़ी में 22-22 कैडेट्स ने भाग लिया। महिला वर्ग की टुकड़ी का नेतृत्व सीनियर अंडर आफिसर किरण एवं पुरुष विंग की टुकड़ी का नेतृत्व सीनियर अंडर आफिसर सचिन ने किया। महिला वर्ग की टुकड़ी को प्रथम एवं पुरुष वर्ग की टुकड़ी को तृतीय रहने पर डीसी ने सम्मानित किया। दूसरा स्थान हरियाणा पुलिस की महिला वर्ग की टुकड़ी ने हासिल किया। राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्या शीला दहिया, कमांडिंग आफिसर कर्नल जयंतो घोष एवं एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट पंकज बत्रा और पूनम को शुभकामनाएं दी। महाविद्यालय के प्रांगण में भी प्राचार्या ने स्टाफ सदस्यों की मौजूदगी में ध्वजारोहण किया।

कार्यक्रमों में मोतीलाल स्कूल प्रथम तो डीएवी स्कूल तृतीय

सांस्कृतिक कार्यक्रम में मोती लाल नेहरू स्कूल की टीम प्रथम रही। दूसरे स्थान पर रहने वाले राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय व तीसरे स्थान पर डीएवी पब्लिक स्कूल की टीम रही। डीसी ने तीनों टीमों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। सुप्रीम सीनियर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों ने राष्ट्रगान की शानदार प्रस्तुत दी। गोपाल विद्या मंदिर स्कूल ने ग्रुप डांस में अच्छी प्रस्तुति दी।

Bhuteshwar

National Service Scheme
NSS

Aman
Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.

National Service Scheme (NSS)

About National Service Scheme (NSS)

The National Service Scheme (NSS) is a Central Sector Scheme of Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports. It provides opportunity to the student youth of 11th & 12th Class of schools at +2 Board level and student youth of Technical Institution, Graduate & Post Graduate at colleges and University level of India to take part in various government led community service activities & programmes.The sole aim of the NSS is to provide hands on experience to young students in delivering community service. Since inception of the NSS in the year 1969, the number of students strength increased from 40,000 to over 3.8 million up to the end of March 2018 students in various universities, colleges and Institutions of higher learning have volunteered to take part in various community service programmes.

The NSS Badge Proud to Serve the Nation:

All the youth volunteers who opt to serve the nation through the NSS led community service wear the NSS badge with pride and a sense of responsibility towards helping needy.

The Konark wheel in the NSS badge having 8 bars signifies the 24 hours of a the day, reminding the wearer to be ready for the service of the nation round the clock i.e. for 24 hours.

Red colour in the badge signifies energy and spirit displayed by the NSS volunteers.

The Blue colour signifies the cosmos of which the NSS is a tiny part, ready to contribute its share for the welfare of the mankind.

Motto: The motto of National Service Scheme is NOT ME BUT YOU

Benefits of Being a NSS Volunteer:

A NSS volunteer who takes part in the community service programme would either be a college level or a senior secondary level student. Being an active member these student volunteers would have the exposure and experience to be the following:

i) an accomplished social leader
ii) an efficient administrator
iii) a person who understands human nature

Major Activities:

i) National Integration Camp (NIC):

The National Integration Camp (NIC) is organized every year and the duration of each camp is of 7 days with day-night boarding & lodging. These camps are held in different parts of the country. Each camp involves 200 NSS volunteers to undertake the scheduled activities.

ii) Objectives of the National Integration Camp

Make the NSS volunteers aware of the following:

a) Rich cultural diversity of India
b) History of our diversified culture
c) National pride through knowledge about India
d) To integrate the nation through social service

iii) Adventure Program:

The camps are held every year which are attended by approximately 1500 NSS volunteers with at least 50% of the volunteers being girl students. These camps are conducted in Himalayan Region in the North and Arunachal Pradesh in North East region. The adventure activities undertaken in these camps includes trekking of mountains, water rafting, Para-sailing and basic skiing.

Objectives of Adventure Program

a) Promote various adventure activities among NSS volunteers
b) Infuse the sense of love towards the various regions of India
c) Enhance leadership qualities, fraternity, team spirit and risk taking capacity.
d) Improvement of physical and mental strength
e) Exposure to new vocational possibilities

iv) NSS Republic Day Parade Camp:

The first Republic Day Camp of NSS Volunteers was held in 1988. The camp takes place in Delhi between 1st and 31st January every year with 200 NSS selected volunteers who are good in discipline, March-past and cultural activities.

A Contingent of selected NSS volunteers participates in the Republic Day Parade at Rajpath, New Delhi on 26th of January every year in accordance with the guidelines and requisition of the Ministry of Defence.

Objectives of NSS Republic Day Parade Camp

a) Enable the volunteers to interact with fellow members hailing from various parts of India.
b) Experience the tradition, custom, culture, language of all states of India.
c) Provide a chance to develop overall personality of the Student volunteers.
d) Constitute the bond of patriotism, national integration, brotherhood and communal harmony.

v) National Youth Festivals

National Youth Festivals are organized every year from 12th to 16th January by the Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports in collaboration with the State Governments in different parts of the country. Eminent guests, speakers and youth icons are invited to address and interact with about 1500 participating NSS volunteers during the National Youth Festivals.

Objectives of National Youth Festivals

a) Make the volunteers aware of the various festivals celebrated in the country
b) Remind the volunteers of the cultural importance of festivals celebrated in our country
c) Provide a chance to the NSS volunteers to interact with the resource person/speaker/youth icons

vi) National Service Scheme Award

The Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India had instituted the National Service Scheme Awards to recognize the voluntary service rendered by NSS volunteers, Programme Officers, N.S.S. units and the university/senior secondary council.

Aman
NSS Programme Officer

एनएसएस से युवाओं में पैदा होती है राष्ट्र निर्माण की भावना : डॉ. जितेंद्र

जींद । राजकीय पीजी कॉलेज में एनएसएस के तत्वाशधान में चल रहे सात दिवसीय शिविर में शुक्रवार को छठे दिन चौधरी रणबीर सिंह विवि (सीआरएसयू) के एनएसएस संयोजक डॉ. जितेंद्र कुमार ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं में राष्ट्र निर्माण की भावना पैदा करती है। यह युवाओं को स्वच्छता, सड़क सुरक्षा, नशा मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान तथा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ सहित अन्य विषयों के बारे में जागरूक करती है। इस अवसर पर डॉ. शिवकुमार, डॉ. रामनिवास व डॉ. पूनम मौजूद रहे। (संवाद)

पांडु-पिंडरा तीर्थ पर चलाया स्वच्छता अभियान

जींद (संवाद)। राजकीय पीजी कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट के सात दिवसीय शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने पांडु-पिंडारा तीर्थ स्थल पर स्वच्छता अभियान चलाया। योगाचार्य सूर्यदेव ने स्वयंसेवकों ने योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने के लिए आह्वान किया। प्राचार्य शीला दहिया ने कहा कि योग कर हम बहुत सी बीमारियों को दूर रख सकते हैं।

कोरोना महामारी को गंभीरता से लें लोग : डॉ. भोला

जगत क्रान्ति ▶▶ जींद

राजकीय पीजी कालेज जींद में उच्चतर शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित रोड सेफ्टी पर जागरूकता वर्कशाप का शनिवार को समापन हुआ। जागरूकता वर्कशाप का आयोजन ट्रैफिक इंटरप्रटेशन सैंटर द्वारा किया गया। इसमें मुख्यातिथि के तौर पर सिविल अस्पताल के डिप्टी एमएस डॉ. राजेश भोला ने शिरकत कीए जबकि कार्यक्रम में खास तौर पर रैडक्रास सचिव राजकपूर सूरा और यातायात पुलिस में एसएस नरेश ढांडा रहे। डिप्टी एमएस डॉण् राजेश भोला ने उपस्थित प्रतिभागियों को फर्स्ट एड की ट्रेनिंग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किस प्रकार से घायल व्यक्ति को उपचार दिया जा सकता है और किस प्रकार से अस्पताल तक पहुंचाया जाता है।

सरकार की तरफ से टोल फ्री नंबर 108 डायल करके एम्बुलैंस की सहायता ली जा सकती है। उन्होंने कोविड.19 से बचाव के बारे में प्रतिभागियों को जागरूक किया। उन्होंने कहा कि लोगों को कोरोना महामारी को गंभीरता से लेना चाहिए। पिछले कई महीने से कोरोना कंट्रोल में थाए लेकिन अब लोगों की लापरवाही के कारण कोरोना के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को कोरोना के लिए जारी गाइडलाइन की पालना करनी चाहिए। मास्क का प्रयोग नियमित तौर पर करना चाहिए। हाथों को लगातार सैनेटाइज करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से इंडियन वैक्सीन लांच की गई है। यह तीसरे चरण में पहुंच गई है। यह वैक्सीन पूरी तरह से सुरक्षित है। हर व्यक्ति को यह वैक्सीन लगवानी चाहिए।

शिविर

राजकीय पीजी कॉलेज में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की होती है अहम भूमिका : शीला

एनएसएस शिविर के दौरान सफाई करते स्वयंसेवक। संवाद

पार्क में सफाई करते स्वयंसेवक। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। राजकीय पीजी कॉलेज में प्राचार्य शीला दहिया की अध्यक्षता में एनएसएस द्वारा सात दिवसीय शिविर का शुभारंभ किया गया।

प्राचार्य शीला दहिया ने कहा कि युवाओं की राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका होती है। शिविर के माध्यम से युवाओं के व्यक्तित्व का विकास होता है। वहीं उप प्राचार्य ओपी गुप्ता ने स्वयंसेवकों को राष्ट्रीय बालिका दिवस के तत्वाधान में बालिका संरक्षण की शपथ दिलाई गई। उन्होंने कहा कि आज बेटियां बेटों से हर क्षेत्र में आगे हैं, इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वह बेटा-बेटी में भेदभाव न कर उन्हें समान अवसर प्रदान करें।

छात्रों ने ट्रैफिक नियमों की जानकारी दी

जुलाना। आरपीएस स्कूल में एनएसेस शिविर का आयोजन किया गया। शिविरो में बच्चों को यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी गई। रविवार को शिविर के चौथे दिन मुख्य अतिथि के रूप में संस्था के निदेशक धर्मेंद्र धतरवाल और स्कूल की प्राचार्य आशा सैनी ने शिरकत की। धतरवाल ने कहा कि जिस प्रकार सेना और पुलिस दिन-रात अपनी ड्यूटी करके लोगों को सुरक्षित रखती है, उसी प्रकार बच्चों को भी चाहिए कि वह अपने देश के प्रति ऐसी ही प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। प्राचार्य आशा सैनी ने कहा कि सभी को यातायात नियमों का पालन करना चाहिए। इसके लिए 18 वर्ष से पहले दो पहिया वाहन नहीं चलाना चाहिए। संवाद

शिविर में स्वयंसेवकों ने किया श्रमदान

उचाना। राजीव गांधी महाविद्यालय में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के दूसरे दिन स्वयंसेवकों ने श्रमदान करते हुए महाविद्यालय के प्रशासनिक भवन और टीचिंग ब्लॉक की सफाई की। स्वयंसेवकों ने राजीव पार्क में खुदाई और मिट्टी भराई का कार्य किया। प्रोग्राम अधिकारी डॉ. राजेश श्योकंद ने कहा कि एनएसएस की शुरुआत महात्मा गांधी की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में की गई, ताकि स्वयंसेवक महात्मा गांधी के समाज में दिए योगदान को दोहरा सकें। एनएसएस का उद्देश्य स्वयंसेवकों में समाज के लिए कार्य करने का है। समाज में फैली बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक करना चाहिए। संवाद

राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस यूनिट ने मनाया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

जींद। राजकीय महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें एनएसएस के अधिकारियों तथा वालियंटर्स ने सक्रिय रूप से भाग लेकर योग किया।

एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर शिव कुमार ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र की ओर से हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस बार कोरोना संक्रमण के चलते यह ऑनलाइन तरीके से मनाया है। इस अवसर पर प्रोफेसर रामनिवास, प्रोफेसर अन्नू मौजूद रहे। संवाद

योग दिवस पर योग करता साधक। संवाद

महर्षि स्कूल के विद्यार्थियों ने ऑनलाइन मनाया योग दिवस

जींद। महर्षि स्कूल में सोमवार को विद्यार्थियों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को ऑनलाइन तरीके से मनाया। इसमें हर विद्यार्थी ने घर पर रहकर ही योग किया। महर्षि संस्थान के चेयरमैन गिरीश वर्मा ने विद्यार्थियों को योग के महत्व बताकर प्रतिदिन योग करने के लिए प्रेरित किया। अध्यापिका रेखा ने कहा कि योग तन और मन से जुड़े तमाम तरह के रोग और विकारों को दूर कर मानव का जीवन को आसान कर देता है। इसलिए हमें स्वयं तथा दूसरों को भी योग के प्रति प्रेरित करना चाहिए। संवाद

वाहन चलाते समय सिग्नल का रखें ध्यान : सूरा

जींद। राजकीय पीजी कॉलेज में सड़क सुरक्षा को लेकर विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्यातिथि के रूप में नागरिक अस्पताल के डिप्टी एमएस डॉ. राजेश भोला ने शिरकत की। जबकि विशिष्ट अतिथि के तौर पर रेडक्रॉस सचिव राजकपूर सूरा और यातायात थाना प्रभारी नरेश ढांडा ने शिरकत की। नरेश ढांडा ने कहा कि वाहन चलाते समय सिग्नल का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इससे दुर्घटना से बचा जा सकता है। वहीं डिप्टी एमएस डॉ. राजेश भोला ने विद्यार्थियों को प्राथमिक उपचार के बारे में प्रशिक्षण दिया। सचिव राजकपूर सूरा ने कहा कि स्वस्थ व्यक्ति हर तीन महीने में रक्तदान कर सकता है। इससे किसी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं आती, बल्कि नए रक्त का संचार होता है। उन्होंने खुद का उदाहरण देते हुए कहा कि वह 43 से ज्यादा बार रक्तदान कर चुके हैं। संवाद

नशीली दवाओं और अवैध तस्करी के खिलाफ हुआ वेबीनार

⏭ ड्रग्स पर तथ्य साझा कर जीवन बचाएं थीम माध्यम से किया प्रहार

जगत क्रांति ⏭ जींद

राजकीय महाविद्यालय की एनएसएस इकाइयों द्वारा 26 जून को नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर एक वेबीनार का आयोजन प्राचार्य शीला दहिया की अध्यक्षता में किया गया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर शिव कुमार ने बताया कि इस साल इसकी थीम ड्रग्स पर तथ्य साझा कर जीवन बचाएं हैं। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनओडीसी के अनुसार दुनिया भर के लोगों खासकर बच्चों और युवाओं को नशे के प्रति जागरूक करना है। इसकी रिपोर्ट 2021 के मुताबिक पिछले वर्ष दुनिया भर में लगभग 275 मिलियन लोगों ने ड्रग्स का इस्तेमाल किया। भारत में नशे का जाल लगातार फैलता जा रहा है। यहां हेरोइन, अफीम, भांग, कोकीन जैसे नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी होती है। नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर वेबीनार को संबोधित करते हुए समाजशास्त्र विभाग के फैकेल्टी डॉ मनजीत सिंह ने कहा कि भारत में जहरीली शराब पीने से बड़ी संख्या में आम लोगों की मौतें असमय हो रही हैं। नशा नींद को बढ़ा देता है और व्यक्ति नशे का आदी हो जाता है। भारत में सस्ते और महंगे दोनों ही प्रकार का नशा और इसका व्यवहार बढ़ रहा है। बच्चे और युवा नासमझी में इसका शिकार बन रहे हैं और नशे में फंसकर सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर शिव कुमार प्रोफेसर, प्रोफेसर राम निवास, मनजीत सिंह तथा प्रोफेसर अन्नू का विशेष योगदान रहा।

कोरोना के लक्षण दिखने पर तुरंत लें उपचार

जींद। एनएसएस द्वारा कोविड-19 महामारी से जागरूकता विषय पर लघु वेबीनार का आयोजन किया गया। एनएसएस संयोजक प्रो. शिवकुमार ने स्वयंसेवकों को समझाते हुए बताया कि हमें इस महामारी का मजबूती और दृढ़ निश्चय के साथ मुकाबला करना है अपने मनोबल को कमजोर नहीं बनाना है। यदि हमारा मनोबल ऊंचा है तो हमें कोई भी परेशानी हरा नहीं सकती। हमें कोविड-19 महामारी के संबंध में अपने आप को, अपने परिवार को, अपने आस-पड़ोस को, अपने समाज को जागरूक बनाना है क्योंकि आज सबसे बड़ा उपाय जागरूकता ही है। कोविड-19 लक्षण दिखाई देते ही हमें प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, जिला अस्पताल में संपर्क करना है।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. आंबेडकर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता

जींद। 'डॉ. भीमराव आंबेडकर का आधुनिक भारत और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण' विषय पर राजकीय महाविद्यालय में मंगलवार को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वेबिनार आयोजित किया गया। जिसमें कॉलेज प्राचार्य शीला दहिया ने कहा कि डॉ. आंबेडकर द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

'डॉ. भीमराव आंबेडकर का आधुनिक भारत और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण' विषय पर वेबिनार आयोजित

प्राचार्य ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने भारत को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए रिजर्व बैंक की स्थापना करवाई। सामाजिकता व भाईचारे, मानवतावादी दृष्टिकोण को मजबूत बनाने की बात कही। उन्होंने क महिलाओं की शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। उन्होंने ही शिक्षित बनने, संगठित रहने और संघर्ष करने की भावना पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ. शिव कुमार, राम निवास, निश व अन्य मौजूद रहे। संवाद

राजकीय महाविद्यालय में वेबिनार का आयोजन

जींद। राजकीय महाविद्यालय की एनएसएस इकाइयों द्वारा नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस पर एक वेबीनार का आयोजन प्राचार्य शीला दहिया की अध्यक्षता में किया गया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रो. शिवकुमार ने बताया कि इस साल इसकी थीम ड्रग्स पर तथ्य सांझा कर जीवन बचाए हैं। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनओ डीसी के अनुसार दुनिया भर के लोगों खास कर बच्चों और युवाओं को नशे के प्रति जागरूक करना है।

डिफेंस कॉलोनी में स्वयंसेवकों ने की सफाई

जींद (संवाद)। राजकीय पीजी कॉलेज में एनसीसी इकाई की ओर से चलाए जा रहे शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने वीरवार को डिफेंस कॉलोनी में साफ-सफाई की। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शिव कुमार व डॉ. रामनिवास ने कहा कि हमें अपने घर के आसपास सफाई रखनी चाहिए। इसके लिए हमें अपने परिजनों व जानकारों को भी जागरूक करना चाहिए। साफ-सफाई का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। अगर हम अपने आसपास सफाई रखेंगे तो बहुत सी बीमारियों से बच सकते हैं।

शिविर में 77 यूनिट रक्त एकत्र किया

जींद (संवाद)। राजकीय पीजी कॉलेज में वीरवार को प्राचार्य शीला दहिया की अध्यक्षता में रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में 77 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। नागरिक अस्पताल की स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। प्राचार्य ने कहा कि रक्त का कोई विकल्प नहीं होता, इसलिए हमें रक्तदान करना चाहिए। रक्तदान करने से किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति की जिंदगी बचाई जा सकती है। इस अवसर पर डॉ. तनाशा हुड्डा, मुनीष, पंकज बतरा, विक्रम डांडा, पूनम, मनोज, सोनू सिहाग, नीरू व भूपेंद्र भी मौजूद रहे।

युवा को नशे से बचाओ, देश खुद बचेगा : शिव कुमार

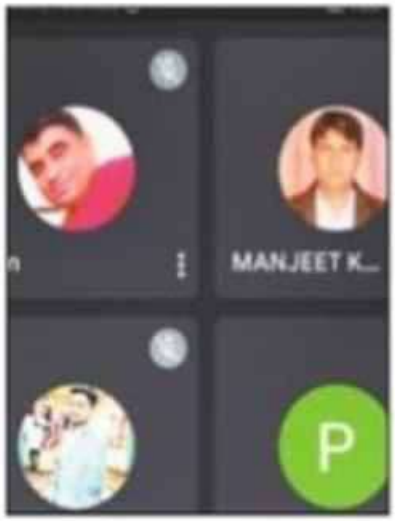

जींद। राजकीय महाविद्यालय जींद की एनएसएस इकाई ने शनिवार को नशीली दवाइयों के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय नशा निषेध दिवस पर बेविनार का आयोजन प्राचार्य शीला दहिया की अध्यक्षता में किया। इसमें एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर शिव कुमार ने बताया कि नशे का प्रकोप हमारे देश में लगातार बढ़ रहा है। खासकर युवा वर्ग नशे की ज्यादा चपेट में है। इस दिन का उद्देश्य यह है कि हमें नशे को समाप्त करने के लिए युवा व बच्चों को जागरूक करना होगा। अगर यह नशे के प्रति लामबंद हो गए तो देश को शत प्रतिशत नशे की लत से बचाया जा सकता है। रिपोर्ट 2021 के मुताबिक पिछले वर्ष दुनिया भर में लगभग 275 मिलियन लोगों ने ड्रग्स का इस्तेमाल किया। भारत में नशे का जाल लगातार फैलता जा रहा है। यहां हेरोइन, अफीम, भांग, कोकीन जैसे नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी होती है। नशा नींद को बढ़ा देता है और व्यक्ति नशे का आदी हो जाता है। बच्चे और युवा नासमझी में इसका शिकार बन रहे हैं और नशे में फं सकर सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इस अवसर पर मनजीत सिंह, रामनिवास व अन्नू मौजूद रही। संवाद

स्वयंसेवकों ने खेल मैदान, पार्किंग व पार्क में किया श्रमदान

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। राजकीय पीजी कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत एक दिवसीय शिविर का आयोजन प्राचार्य शीला दहिया के नेतृत्व में किया गया। स्वयंसेवकों ने खेल मैदान, पार्किंग व पार्क में श्रमदान किया।

कार्यक्रम अधिकारी शिव कुमार ने कहा कि स्वच्छता का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। अगर हम अपने आसपास साफ सफाई रखेंगे तो बहुत सी बीमारियों पर रोक लग सक ती है। इसके अलावा युवाओं को नशे से दूर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र तभी तरक्की कर सकता है जब उस देश का युवा सही दिशा में मेहनत करे। इस अवसर पर रामनिवास व पूनम चहल भी मौजूद रहे।

राजकीय पीजी कॉलेज में आयोजित एनएसएस कार्यक्रम में मौजूद स्वयंसेवक। संवाद

जागरूकता अभियान चलाते संस्था के सदस्य। संवाद

संस्था ने चलाया स्वच्छता जागरूकता अभियान

जींद।(संवाद) सामाजिक संस्था सोसायटी फॉर एडवांसमेंट ऑफ विलेज एंड अर्बन एनवायरमेंट सेव ने दखनिया मोहल्ला, हनुमान गली, रामराय गेट, हरिजन बस्ती, जैन नगर, वॉर्ड नंबर 9, 10 और 11 में स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया गया। संस्था द्वारा चलाया गया यह 263वां कार्यक्रम था। यह अभियान संस्था प्रधान नरेंद्र नाडा की अध्यक्षता में चलाया गया। सेव संस्था के सदस्यों ने घर-घर जाकर लोगों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित किया। नरेंद्र नाडा ने कहा कि स्वच्छता तब रहेगी जब हर आदमी स्वच्छता के लिए आगे आएगा। स्वच्छता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। सेव सदस्यों ने कहा कि संस्था 2014 से स्वच्छता की अलख जगाए हुए है, लेकिन जब तक सभी आदमी इसमें अपना योगदान नहीं देंगे तब तक सफलता नहीं मिल सकती।

कूड़ेदान का सही प्रयोग करने से ही स्वच्छता आ सकती है। इस अवसर पर पार्षद राकेश चुघ, पूर्व उप प्रधान रमेश, हरफूल सैनी, ओमप्रकाश, वेद, बलजीत रेढ़ू, सत्यवान बरोली, अजमेर चौहान, बलबीर सिंह, जोरा सिंह रेढ़ू, महेश सैनी नंबरदार, धर्मबीर पूनिया, अशोक व हरबीर मौजूद रहे।

स्वयंसेवकों ने सनातन धर्म महिला महाविद्यालय में चलाया सफाई अभियान

नरवाना। सनातन धर्म महिला महाविद्यालय में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर में शुरुआत मां सरस्वती के सामने दीप प्रज्वलन से हुई। उसके बाद योगाभ्यास किया गया। एनएसएस इंचार्ज डॉ. शालू सचदेवा और सुमनलता ने छात्राओं को एनएसएस के महत्व के विषय में बताया। डॉ. नवनदीप ने कहा कि हमें हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। इस संसार में असंभव कुछ भी नहीं है। इसके बाद छात्राओं ने अल्पाहार किया। फिर दोनों यूनिट की छात्राओं ने महाविद्यालय में सूक्ष्म स्तर पर सफाई अभियान की शुरुआत की। दोपहर बाद भाषण प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें 15 छात्राओं ने भाग लिया। प्राचार्य पूनम शर्मा ने छात्राओं का उत्साह वर्धन किया। संवाद

राजकीय महाविद्यालय, जीन्द

राजकीय महाविद्यालय, जीन्द
राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)
राष्ट्रीय कैडेट कोर

राष्ट्रीय सेवा योजना
NATIONAL SERVICE SCHEME

Cultural Activities

Cultural Activities

Bhuteshwar

Sports Section

Randhir Singh

Editor

All the views expressed in this magazine are of the author him self.
Section Editor is not responsible for it.

खेलकूद-अनुभाग

Contents

S.No.	Name	Topic	Page No.
1.	अमित	खेल-कूद	2
2.	सुमन रानी	कविता	2
3.	अंजली बंसल	खेलों का महत्व	3

खेल–कूद

अमित

खेल-कूद का करो विचार,
यह देता है स्वस्थ जीवन जीने का अधिकार।
स्मार्टफोन्स को स्वयं से दूर रखें,
खेल-कूद को जीवन में जरूर रखें।
खेल-कूद द्वारा होता है स्वास्थ्य का निर्माण,
जरूरी है खेल क्योंकि स्वास्थ्य है जीवन का आधार।
खेल-कूद से होता है बीमारियों का नाश,
खेलना भी एक आहार है हमारे लिए खास।
किसी भी बच्चे की पढ़ाई न रहे अधूरी,
पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी है जरूरी।
खेलने कूदने का लो संकल्प,
स्वस्थ रहने का है यही विकल्प।
हारना और जीतना तो सिर्फ एक वक्त होगा,
परन्तु खेलने से हमारा खरीर स्वस्थ होगा।

कविता

सुमन रानी
1210681003203
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

खेल में भी कैरियर बनाने लगे हैं युवा,
अपने हुनर का दम दिखाने लगे हैं युवा,
जो उनके खेलने के खिलाफ थे
अब उनको भी अपने खेल से चौंकाने लगे हैं युवा।

मौका नहीं मिलता बेटियों को
इस बात का गम है।
जिन बेटियों को मौका मिला
उन्होंने दिखाया अपना दम है।
कुछ भी कर सकती हैं बेटियां
उन्होंने ये कर के दिखाया है,
गई गोल्ड मैडल लाकर
पूरी दुनियां को बताया है।

अंजली बंसल
120068003133
बी.कॉम.

खेलों का महत्व

परिचय :-

हमारे दैनिक जीवन में खेलों का महत्व बहुत अधिक है। यदि हम इतिहास की ओर देखें तो किसी सफल व्यक्ति के जीवन पर प्रकाश डालें तो हम पाते हैं कि नाम, प्रसिद्धि और धन आसानी से नहीं आते हैं। इसके लिए लगन, नियमितता धैर्य और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कुछ शारीरिक क्रियाओं अर्थात् स्वस्थ जीवन और सफलता के लिए एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। नियमित शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। किसी भी व्यक्ति की सफलता मानसिक और शारीरिक ऊर्जा पर निर्भर करती है। इतिहास बताता है कि केवल वर्चस्व ही राष्ट्र या व्यक्ति पर शासन करने की शक्ति है।

शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने पर हम अनेक प्रकार के तनाव से मुक्ति पा सकते हैं। सभी देशों में खेलों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है, क्योंकि एक व्यक्ति के जीवन में खेल के वास्तविक लाभ और व्यक्तिगत व पेशेवर जीवन में इसकी आवश्यकता को जानते हैं। किसी धावक या पेशेवर खिलाड़ी के लिए शारीरिक गतिविधियाँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। यह उनके और उनके जीवन के लिए बहुत मायने रखती हैं। खेल खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छा अवसर रखता है। कुछ देशों में कुछ अवसरों कार्यक्रमों और त्यौहारों के आयोजन पर स्पोर्ट्स और खेल गतिविधियाँ आयोजित की जाती है।

खेल सभी के व्यस्त जीवन में विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खेल बहुत ही आवश्यक है क्योंकि खेलों में नियमित रूप से शामिल होने वाले व्यक्ति में यह शारीरिक और मानसिक तंदरूस्ती लाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि एक सूकून और आराम का जीवन जीने के लिए हम सभी को स्वस्थ मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है।

खेल बहुत ही अच्छी शारीरिक गतिविधि है जो तनाव और चिंता से मुक्ति प्रदान करता है। किसी ने क्या खूब कहा है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।''

निष्कर्ष :-

जिस प्रकार नाम प्रसिद्धि और पैसा प्राप्त करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है उसी प्रकार स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क प्राप्त करने के लिए सभी को किसी भी प्रकार की शारीरिक गतिविधि में आवश्यक शामिल होना चाहिए जिसके लिए खेल बहुत ही उत्तम तरीका है।

Govt. College Jind

(Haryana)

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

Phone : 01681-245580 | 249581
Website : govtcollegejind.ac.in | E-Mail : gc_jind@yahoo.co.in